वलि राजा पहेलो हुतो, नाम जेहनु अभिराम ॥
भुवन भानु वलतो थयो, गुण निपन्न सु नाम ॥७ ॥
त्रिविघोसूं हूं तेहनो, रास रचूं सुख रूप ॥
श्रोता जन सुणजो तमे, आणी भाव अनूप ॥ ८ ॥
चरित्र ए चोखे चित्ते, सुणसे जेह सुजाण ॥
मारी मोह नरेंद्रने, लहेसे पर्म कल्याण ॥ ९

॥ ढाल. ॥ १ ॥

॥ पहिलोने पासो, एदेशी.

ए जंबु द्वीपें, होजी मेरूथी पश्चिम दिशें, गंधिला वती विजय वखाणियें जी ॥ विजय पुर नाम, होजी नगर वसे तिहां, सर्व संपदनुं सदन ते जाणि यें जी ॥ १ ॥ धर्मनुं धाम, होजी वेस्म विलासनुं, शुद्ध व्यवहारनुं सौध सोहे घणुं जी ॥ अघनो अ नाश्रम, होजी आश्रम न्यायनो, अमर पुरीथी अ धिक सोहामणुं जी ॥ २ ॥ वेष्टित वप्रें, होजी खा ई दुर्गम, अनेक कौतुकनो आस्पद ओपतोजी ॥ ति लक सरिखुं, होजी भूरमणी भालें, अलकालंकानो

शोभा लोपतो जी ॥ ३ ॥ राज तिहा राजा, हो
जी चंद्र मौलि नामि, नमे छे जेहने अनेक नरेस
रू जी ॥ बल दल बुद्धिनो, होजी जे जलधि अ
छे, अतिहि सूरामा छे अग्रेसरू जी ॥ ४ ॥ वास
वैभवनो, होजी विस्मय कारी वली, महामंत्रीनी
मतिने बलें मुद्रा जी ॥ कामीना मननी, होजी पूरवा
कामना, काम सरिखो जेह जाणो सदा जी ॥ ५॥
करि कुंभस्थल, होजी दलन कठिन करे, रिपु रम
णीना केशने खींचतो जी ॥ ते तरुणीने, होजी नेत्र
जलें करि, कुल कीरतिना कंदने सींचतो जी ॥ ६॥
वज्रथी विरुओ, होजी पर दल पाटने, लागे छे
ते घणो लोभिओ जी ॥ कीरति जेहनी, होजी
व्यापी दिगंतरे, जेह न जाए केणें खोभिओ जी॥७॥
अंते उरने, होजी पूरे परवरयो, विचरो छे ते अनं
गने गंजतो जी ॥ सुरपति सरिखो, होजी अखंम
आणे करी, भूमि पतिना मननें भंजतोजी ॥ ८ ॥
पहिली ढालें, होजी उदय रत्न कहे, भवियण भा
वे सहुको शाभलो जी ॥ कौतुक कारी, होजी रास
ए छे रुमो, भणता भाजे भवनो आमलो जी ॥९॥

॥ दोहा. ॥

रतन जमित सिंहासने, छत्र धरावतो श्वेत ॥
बेठो छे नृप एकदा, सुभट कोमि समेत ॥ १ ॥
पूरव दिशि प्रगव्यो तुरत, तेज अतुल तिण वार ॥
रवि ममलथी रम्य ते. पसर्यो सभा मझार ॥ २ ॥
अकस्मात तव ऊछल्यो, सुरभि पवन सम काल॥
पसर्यो ते सघले पुरे, परिमल जास रसाल ॥ ३ ॥
सहसा तव सहु सांभली, गगने किन्नर गान ॥
सुर वधुने समुहें करी, नभ ओपे तिणे थान ॥ ४ ॥
गगन ममल गाजी रह्यो, नूपुर हदे नाद ॥
भानु ममलसू भूषणो, जाणे के लीधो वाद ॥ ५ ॥
सुर गायन कोलाहलें, दुंदुभि नाद अपार ॥
अंबर तव बहिरो थयो, तुमुल स्वरें ते ठार ॥ ६ ॥
तव नृपते सहसा तिहा. ससंभ्रम सस्नेह ॥
परषद जनसु प्रेमसू, अचरज लहे अछेह ॥ ७ ॥
आसनथी उचो थई, मावो कर धरि भाल ॥
बीजो कर ठवि बेठकें, जूवे नयण निहाल ॥ ८ ॥
अहो एह अचरज कश्यूं, इम अवलोके सोय ॥

तेमज पेखि तिहां वली, सभा लोक सहु कोय ९॥

॥ ढाल. ॥२॥

सोरठी रागनी चाल, ए देशी.

तव श्री खर्म तिलक निलार्मे ॥ करेजे केसर ओ म्र ॥ करे कनक डमी जे धारे ॥ सोहे पीन पयो धर भारे ॥ १ ॥ हिए मुक्ता फल हार ॥ धारणी प्रतिहारी उदार ॥ प्रणमी भूपतिना पाय ॥ बेसी ते बोली तिणि ठाय ॥ २ ॥ पूरव दिशिनो वन पाल ॥ इहां आव्यो ते उजमाल ॥ जो आपो प्रभु आदेश तो परपदे करे प्रवेश ॥ ३ ॥ आवे ते नृप आ णाए ॥ वनपाल सभामां त्याए ॥ प्रणमी प्रथवी प ति पाय ॥ मुखें बोले महा राय ॥ ४ ॥ किन्नर नर सुरनी कोडि ॥ जेहने नमे कर जोडी ॥ भुवन भानु जस नाम ॥ केवली करुणा रस धाम ॥ ५ ॥ अवनि पति सुणिने एम ॥ पूरण ते पाम्युं प्रेम ॥ ऐन अमृतने रसें अरच्यूं ॥ जाणे चंदनसूं तन चर च्यूं ॥ ६ ॥ जाणे त्रिभुवन लीला लाधी ॥ सुख सा गरनी लहेर वाधो ॥ दीधूं तेहने प्रीती दान ॥ जेह

नुं नव थाय मान ॥ ७ ॥ एक आख उलाला मां
हि ॥ सामग्री सजी उछांहि ॥ श्वेत भद्र गजेंद्र स
मारी ॥ ऊपर करे असवारी ॥ ८ ॥ श्वेत छत्र शिर
ऊपर छाजे ॥ जे भानु प्रतापने भाजे ॥ शासि किर
ण संमूह समाने ॥ ढले चामर उज्जल वाने ॥ ९ ॥
हय गय रथ पायक पूरे ॥ वींटयो चोफेर सनूरे ॥
परिकर श्रेणी परवरिओ ॥ अवनि पति उलट भरि
ओ ॥ १० ॥ पुरव दिशिने उद्याने ॥ पहोतो पाव
न थानने ॥ दुरथी देखिओ मुनि राय, तजी अस
वारी तिणे ठाय ॥ ११ ॥ शस्त्र चामर मुगट ने
छत्र ॥ तजी तंबोलादी तत्र ॥ कर चरण वदन जल
शुद्धि ॥ परवाले परम शुद्ध बुद्धि ॥ १२ ॥ तजी
पादुका विनयसु त्रिविद्धि ॥ कर कमल जोडिने स
विधि परखदमां पेसी प्रीतें ॥ मुनिनें वंदे मन हीतें॥
॥ १३ ॥ देई प्रदक्षणा त्रण तेह ॥ शिर भुमासू फ
रसी स्नेह ॥ भावें वंदि भगवान ॥ स परिवारे रा
जान ॥ १४ ॥ उदय रत्न कहे ए ढाल ॥ बीजी
मे बोलीरसाल ॥ नेहे जे मुनिने नमशें ॥ ते भव
नी भावठि गमसे ॥ १५ ॥

॥ दोहा. ॥

कर जोमी स्तवना करे, निर्वंध भूमि निहालि ॥
बेठो बे कर जोमिने, वारू सभा विचालि ॥ १ ॥
दीधी मुनिवर देशना, शांभलि ने नृप सोय ॥
अरज करी वलती इसी, उत्तम अवसर जोय ॥२॥
शक रिजे जिम रत्ननी, वृष्टि देखि ने वेग ॥
तुम आगमने तेमहूं, निज मन पाम्यो नेग ॥ ३ ॥
भव सागर भूंमो घणो, ऊंमो जेह अथाग ॥
दरश आज तुम देखतां, तेहनो पाम्यो थाग ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

थां पर वारि मारा साहेबा. ॥ एदेशी. ॥

भगवन मुझ बाल भावमां, मुनिवर एक मलिओ ॥
बोध आपिने बहु परें, दुकृत निर टलिओ ॥ १ ॥
पण समकित नव सर्द्दह्युं, बाल बुद्धि पणाथी ॥
उपदेश ते अणगारनुं, जेह मुक्तिनुं साथी ॥ २ ॥ संस्कार मात्र ते साधुनी, देशना दिल धारी ॥ यौवन ने जोरें करी, ते पण विसारी ॥ ३ ॥ राज्य बुरा

नु नव थाय मान ॥ ७ ॥ एक श्राख उलाला मा
हि ॥ सामग्री सजी उगाहि ॥ श्वेत भद्र गजेंद्र स
मारी ॥ ऊपर करे श्रमवारी ॥ ८ ॥ श्वेत छत्र शिर
ऊपर राजे ॥ जे भानु प्रतापने भाजे ॥ शसि किर
ण समूह समाने ॥ ढले चामर उज्जल वाने ॥ ९ ॥
हय गय रथ पायक पूरे ॥ वींटयो चोफेर सनूरे ॥
परिकर श्रेणे परवरिओ ॥ श्रवनि पति उलट भारे
श्रो ॥ १० ॥ पुरव दिशिने उद्याने ॥ पहोतो पाव
न थावाने ॥ दुरथी देखिश्रो मुनि राय, तजी श्रस
वारी तिणे ठाय ॥ ११ ॥ शस्त्र चामर मुगट ने
छत्र ॥ तजी तंबोलादी तत्र ॥ कर चरण वदन जल
शुद्धि ॥ परवाले परम शुद्ध बुद्धि ॥ १२ ॥ तजी
पादुका विनयसु त्रिविद्धि ॥ कर कमल जोडिने स
विधि परखदमा पेसी प्रीते ॥ मुनिनें वदे मन हीतें॥
॥ १३ ॥ देई प्रदक्षणा त्रेण तेह ॥ शिर भुमसि फ
रसी स्नेह ॥ भावें वंदि भगवान ॥ स परिवारि रा
जान ॥ १४ ॥ उदय रत्न कहे ए ढाल ॥ बीजी
मे बोलरिसाल ॥ नेहे जे मुनिने नमशें ॥ ते भव
नी भावठि गमसे ॥ १५ ॥

॥ दोहा. ॥

कर जोमी स्तवना करे, निर्वद्य भूमि निहालि ॥
बेठो बे कर जोमिने, वारू सभा विचालि ॥ १ ॥
दीधी मुनिवर देशना, शांभलि ने नृप सोय ॥
अरज करी वलती इसी, उत्तम अवसर जोय ॥२॥
रांक रिजें जिम रत्ननी, वृष्टि देखि ने वेग ॥
तुम आगमने तेमहूं, निज मन पाम्यो नेग ॥ ३ ॥
भव सागर भूमो घणो, ऊंमो जेह अथाग ॥
दरश आज तुम देखतां, तेहनो पाम्यो थाग ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

थां पर वारि मारा साहेबा. ॥ एदेशी. ॥

भगवन मुक बाल भावमां, मुनिवर एक मलिओ ॥
बोध आपिने बहु परें, दुरुत निर दलिओ ॥ १ ॥
पण समकित नव सद्दह्यों, बाल बुद्धि पणाथी ॥
उपदेश ते अणगारनुं, जेह मुक्तिनुं साथी ॥ २ ॥ सं
स्कार मात्र ते साधुनो, देशना दिल धारी ॥ यौवन
ने जोरें करी, ते पण विसारी ॥ ३ ॥ राज्य धुरा

नोर वली, मद तिमिरे मज्यो ॥ उपदेशरूप उद्योत
त, मोहे मन रज्यो ॥ ४ ॥ वलतो विषय विलास
मा, काल गयो केतो ॥ जातो पण जाण्यो नहीं,
तृष्णावस तेतो ॥ ५ ॥ तेवार पछि में आजनी, रज
नी विरमती ॥ जागीने जोयू मने, आलोची ए
कांतो ॥ ६ ॥ अहो महारभ तिणे भँर, दुरित दल
मेल्यो, विपक समे अहो केम ते, जासे अव
हेल्यो ॥ ७ ॥ दुःख देशे मुने दुष्टतें, पर भवे महा
पाप ॥ आमो तव कोण आवशे, एम चिंतु आप
॥ ८ ॥ गुरु ज्ञानी कोइ जो मिले, तो पुछु तेहने,
कोण रक्षा करशे, कहो, उदय एहने ॥ ८ ॥ नाव
समो निग्रथनो, संग जे थयो पहेलो ॥ भ्रष्ट थयो
हू ते हथी, मद वुद्धि महेलो ॥ ९ ॥ जन्म समुद्र
माहि पम्यो, प्रेर्यो अघ पवने ॥ आरो अहो कोण
आपशे, ओल्हवी भव दवने ॥ १० ॥ देखि एम कर
तो खरखरो, दुर्घट ए वात ॥ प्रगट प्रभात समय थ
यो, यामनि शेष जात ॥ ११ ॥ कृत्य करी प्रभातना,
सभाए जेहवे ॥ मजलस मेली आसने, बेठोछुं ते
हवे ॥ १२ ॥ वनपालें वधामणी, दीधी मन खा

ते ॥ ताजी तुम आंख्या तणी, सुणी हरख्यो ए मां ते ॥ १३ ॥ जिम हरषे मरु देशमां, पंथी सर पेखी॥ जिम चात्रक ग्रीषम ऋते, रीजे घन देखी ॥ १४ ॥ जिम वनवासी घाममां, अंबनी घन छाया ॥ पामि रति पामि मने, उल्हसी अति काया ॥ १५ ॥ सुधा रसनी लहि कूपिका, रोगी जिमरीजे. तिमहूं रीज्यो ते समे, घणुं शुं कहीजे ॥ १६ ॥ तरशे त्री, ढालमां, जेह मुनिने नमवा ॥ तरशे भव जल ते वदे, उदय अघ गमवा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

जिम कायर युद्धे जुमचो, पमचो अरी गणमांहि ॥
सरण चाहे जिम सूरनुं, पीमयो शस्त्र प्रवाहि ॥१॥
तिम भीमयो पातक भरे, भव वेरीथी नाग ॥
तम सरणे हूं आविय्यो, लही अपूरव लाग ॥ २ ॥
महेर करी मुफ ऊपरे, ते माटे कहो स्वामि ॥
सरण होसे मुने केहनुं, पर भव पीमा ठाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥४॥

॥ वृषभान भुवन गई दूति, एदेशी. ॥

तव दसनयोति तम भरने, दलतोमुनि कहे नरवर ने ॥ त्यारे सरण होसे तुझ तेह ॥ महा पुरुषे अंगीकरयोजेह ॥ १॥ तुमे सरिखे विजे पण भव्युं विशेषे अमे पमिवज्युं ॥ ते होसे तुजने त्राता ॥ पर भव जाता सण ज्ञाता. ॥ २ ॥ इम शाभलि तेनर नाथ. ॥ महा कौतुक लही मन साथ. ॥ मेर कलमीं दइ मुखे बोले ॥ रूमां वयण अमी रस तोलें ॥ ३ ॥ त्रिभुवन त्राता प्रभु तुमने. ॥ कुण सरण बीजूं कहीं अमने ॥ ए अचरज कारी उदंत. ॥ भापो विवरी भगवंत. ॥४॥ तव मुनि कहे कथा ए मोटी ॥ भवनी ज्यां कोटा कोटी॥ राज काज वसे वर्मेवार ॥ मन न रहे तुमारू ठार. ॥ अधिकार अशंप छे एतो. ॥ ते माटे कहिये केतो. ॥ मनने थेर वाळे धर्म ॥ धर्मथी जोरावर कर्म ॥ ६ ॥ भापो मां एहवुं भगवान. ॥ सुधा पान तजी असमान ॥ जमपण करवा विषपान ॥ किम चाहे कहे

राजान. ७ ॥ मेघने जिम इच्छे मोर ॥ चंदने जिम चाहे चकोर ॥ तिम वाट जोता मुनिराज. ॥ पुन्ये पधार्या आज ॥ ८ ॥ अवर तज्या आक्षेप ॥ हवे लागे नहीं अन्य लेप ॥ ते माटे कथा तुमारी ॥ विगते कहो विस्तारी. ॥ ९ ॥ तुम वचन सुधारस पान ॥ करवा चाहे मुझ कान ॥ सफली करी ने ए प्रज्ञा ॥ पुरो प्रभु तेहनी इच्छा. ॥ १० ॥ चोथी ढालें चित चाहें ॥ उदय रत्न वदे उमाहें ॥ जग जन तारक जिन वाणी ॥ भावें सुणजो भवि प्राणी ॥ ११ ॥

॥ दोहा. ॥

तव ज्ञानी गुरु बोलिया, शाभल थइ सावधान ॥
एक ध्याने एक आसने, रंगी तू राजान ॥ १ ॥
काइक कहुं तुज आगलें, मुझ वीतक महा भाग ॥
शाभलता शुद्धे मने, वधसे मन वैराग ॥ २ ॥

॥ ढाल. ॥ ५ ॥

॥ नटिआणीनी देशी. ॥

आलोकोदर इण नामें, नगर विराजे हो वसे लोक

अनंत जिहां ॥ नहिं जस आदि न अंत, अपर पर वरती हो पुर्यु नहिं खालो किहां ॥ १ ॥ सव संपदनुं गेह, पुरुषोत्तमने समुहें हो सेवित जे जाणो सदा ॥ अचरजनो आश्रम, कोमा कोमी कल्पांतें हो जेहनो भंग नहिं कदा ॥ २ ॥ नहिं ते योनि ने जाति, गोत्र ने कुल वर्ण हो नहिं सा विद्यानी कला ॥ नहिं ते हिरणनी हाट, नाटकना नहिं नीतो हो, नहिं ते आगम आमला ॥३॥ धर्म कर्म नहिं तेह, वैभव ने विलास हो नहि ते दर्शननी क्रिया ॥ नहि वलि ते व्यवहार, रत्न निरंभादिक हो नहिं ते सुर पतिनी श्रिया ॥ ४ ॥ केतां कहियें नाम, बीजा पण पदार्थ हो जोतां को न जमे तिहयो ॥ जे नव दीशे त्यांहि, सर्व वस्तुमां हो ते पुर राजे इश्यो ॥ ५ ॥ कटक सदा इहां दोय, माहो मांहें जूझे हो अंत न आवे तेहनो ॥ एक धर्म ने बीजूं पाप, अन्यो अन्य दुःख दाई हो दल ए बल बहु जेहनो ॥ ६ ॥ पाप सेनानो नाथ, मोह राजा महा बलिओ हो त्रिभुवन वश कीधुं तिणे ॥ अहितकारी अत्यंत, संसारी सहुने हो

जाय नहीं जीत्यो किणे ॥७॥ इंद्रनी पण ओ आण मनावि पोतानी हो महीला रूप पाला धरी॥ चक्रीनें पण तेम, वाणु लाख पायकनी हो पेपि वश वर्ति करी ॥८॥ राजाने करे रंक, सेठने सेनापति हो सारथ वाह सचीवने ॥ दासना जे करे दास, कुवासनाइ वासी हो जे सहु पामर जीवने ॥९॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म, थिर करिने थापे हो तजावि तत्वनी वासना ॥अतत्वनो करे अनुकूल, अवस्तुनो आसंगा हो करावी राखे आसना॥१०॥ तजावि पुन्यनो पक्ष, पातकसूं पासी ने हो करावे निज चाकरी ॥ हिंसा अदत्त अलोक, मैथुन ने परिग्रहनी हो लगन लगावे आकरी ॥ ११ ॥ निशि भोजनसूं नेह, जोभावे जोरेसुं हो क्रोधानले नापि वली ॥ भारी मान शिलाएं, मायारूप भुजंगी हो मुखे मसावे रली १२ पामे लोभ समुद्र, पुत्रादिक सं वंधे हो प्रेम तणे भरे ॥ यंत्रे युवति राग, वण नेहे घेरी ने हो पीमे पग पग वहु परे ॥ १३ ॥ दोलतथी करे दुर, महत्व घटामी हो देखामी महा दीनता ॥ आरति अरति अपार, उपाडने आपे हो

दुर्गति नर्कनी हीनता. ॥ १४ ॥ अवतारे तिरयंच, कुत्सित नर योनि हो घालें ने पीसे घणुं ॥ दुःख द्रारिद्र दो भाग, विमंबना देखामे हो वली कुग तिनुं वारणुं ॥ १५ ॥ एम अनंती वार, भमामे भव मांहे हो प्राणीने पीमे दुःखें ॥ अहित तिणे कहे वाय. आचरणा वलि एहनी हो केती कहेवाय मुखें ॥ १६ ॥ उदय रत्न कहे एम, पांचमी ढालें हो परमारथ तुमें सीझजो ॥मिली मोहनो पास, आगमनें सुणीने हो उत्तम गतिने ईझजो. ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

अहंकार कोप आदि दें, अद्भुत कटक अनत ॥
आणाकारि तेहने अछे; अति उद्धंत बलवंत ॥१ ॥
पीमे ते सहु प्राणिने, अहितकारी अपार ॥
जेवो नृप तेवी प्रजा, अंतर नहीं लगार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

॥ ईमर आंबा आंबली रे, ए देशी

चारीत्र धर्म नामे कह्यो रे धर्म सेनानो नाथ ॥ सम

दम आदे शोभतोरे, सबलो जेहनो साथ ॥ राजेसर सुण, मन राषी ठाय,॥१॥समकेत सत्य सुवास नारे, सदागम ने सद बोध॥ अज्जव मद्दव ओपतारे जालम जेहने योध. ॥ राजा० ॥ २ ॥ गंभीर धीर शौचादिकेरे. सुभट अनंत सोय ॥ शोभे सहु जीवनेरे, हित वंछक ते होय ॥ राजा० ॥ ३ ॥ देव धर्म गुरुने विषेरे, जे उपजावे राग. ॥ अतत्व ने अवस्तुनेरे, जेह करावे त्याग ॥ राजा० ॥ ४ ॥ सत् क्रिया जे सीखवेरे, दया धरी दिल मध्य. ॥ अलिक अदत्त उत्थापिनेरे, शील पलावे शुद्ध. ॥ राजा० ॥ ५ ॥ परिग्रहना महा पासथीरे, तुरत छोमावे तेह, ॥ निसि भोजन मूकाविनेरे. समे शोभावे देह. ॥ राजा० ॥ ६ ॥ सरल मृदु गुण सोंपिनेरे, स्नेहनि साकल ञोमि ॥ भांजी वेमी राग नीरे, अरथनि आपे कोमि. ॥ राजा० ॥ ७ ॥गुरुता गुणने ओपि नेरे, लीणी लघुता अतीव. ॥ सुजस वधारे जे सदारे, सुमति आपे सदीव. ॥ राजा० ॥ ८ ॥ नर्क तिर्यंच गति रोकीनेरे, आपे सुर अवतार ॥ नर भव दइ वालि निर्मलोरे धर्म धरावे प्यार

॥ राजा० ॥ ९ ॥ परमैस्वर्य पमामिनेरे, शुद्ध सवा वे योग, देवपणु वलि देईनेरे, भला विलसावे भोग. ॥ राजा० ॥ १० ॥ श्रेम सहु संसारना रे, सुख आपे ससार ॥ अंते आपे शिव पुररे, तेणे जाणो हितकार. ॥ राजा० ॥ ११ ॥ छठी ढाले चाहीनेरे, कहे कवि उदय रत्न ॥ धर्म भणी जे धावसेरे, जय लहेसे ते जन. ॥ राजा० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

इम ए दल झूंके वने, सुख दुःख देवा काज ॥ सदा काल सहु जीवने, वढता नावे वाज ॥ १ ॥ काल अनतो अतिक्रम्यो, दल ते झूंके दोय. ॥ हार क्यारे केनी हुइ, क्यारे जीते कोय. ॥ २ ॥ वलिश्रो ए बेहु थकी, ताजो त्रिभुवन राण ॥ कर्म परिणाम नामे प्रभु, मोटु जास मंमाण ॥ ३ शुभ अशुभ रूपे करी, चरीत्र विचित्र छे तास ॥ स्थूल मती नवि ओलखे, योगी लहे गति जास ॥ ४ ॥ वमो भाइ ए मोहनो, काल परिणती कंत ॥ नाटक वल्लभ जेहने, त्रिभुवन व्यापक तंत. ॥ ५ ॥ लोकस्थिति

भगनी वमी, जेहने जाणे सहु कोय ॥ बाकी वच नहि केहनुं. तेह करे ते होय. ॥ ६ ॥

॥ढाल॥ ७ ॥

॥ दाणा दे रे मोमचा दाणा, ए देशी. ॥

कुदरत जो जो कर्मनी, विध विधना बनावे वेष रे ॥ नाच नचावे नवनवा, दिलमां रीझे नृप देख रे ॥ छे एहेवो रे ते तो छे एहेवो, १ रासभ रूपे करे देवने रासभने करे देव रूप रे, तिर्यचने करे नारकी, नारकी ने तिरिय सरूपरे ॥ छे एहेवो. ॥ २ ॥ कुंथु रूपे करिने करे, कुंथुने करे गज राजरे ॥ रंक करे जे रायने, रंकने करे महाराजरे ॥ छे एहेवो० ॥ ३ ॥ धनवंतने निर्धन करे, निर्धनने करे धनवानरे ॥ रोग रहित करे रोगिने, निरोगीने करे ग्लानरे ॥ छे एहेवो० ॥ ४ ॥ शोक रहित शोकवानने, शोकर हितने करे शोकवंतरे ॥ सुखियाने दुखिया करे, दुखियाने करे सुखीया अनंतरे ॥ छे एहेवो० ॥ ५ ॥ एहेवी शक्ती एहनी, भांपी छे भगवानरे ॥ विचित्ररूपी

कह्यो ते वती, नहिं कोइ एह समानरे ॥ ठे इहे वो० ॥ ६ ॥ देव दानव तिरिय नारकी, अनंत पात्रें मोह एमरे ॥ नृत्य देखामे नित नवां, ए देखी रीझे जेमरे॥ ठे इहेवो०॥७॥ चरित्र धर्मतणे पंथे, थाय शुभरूपें ए सपायरे ॥ अन्यदा मोहना पत्तने, पोखतो रहे सदायरे ॥ ठे इहेवो० ॥ ८ ॥ ज्यारे पासूं करे जेहनुं, त्यारे तेहनी थाय जीतरे ॥ साधारण समझो तिणे, एवी कही एनी रीतरे ॥ ठे एहेवो० ॥ ९ ॥ उदय रत्न कहे आतमा, वीजो मेलीं बनावरे ॥ सूधो सातमी ढालमां, समझे कर्म सभावरे॥ ठे एहेवो० ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दोहा. ॥

बे गोलीनो चरडुओ, जेष्ठ बंधुने जाण ॥
रूठो मोह राजा मने, वदे ते एवी वाण ॥ १ ..
बंधव तुझ आगल बहू, नेह धरी अमे नित्य॥
नृत्य कला दाखूं नवी, जिम रीझे तुज चित्त ॥ २ ॥
सदागम योगे ते सदा, नाटकनो करे भंग ॥
पात्र पहोचामे शिवपुरी, वेरी करे विरंग ॥ ३ ॥

॥ ढाल. ॥ ८ ॥

॥ रसीयानी देशी. ॥

तो पण तु तेहनु पासुं करी, अमने मनावेरे हार. ॥ सहोदर, ए लक्षण ताहरुं हूं लहेतो नथी, एह श्यो ताहरोरे आचार. सहोदर, इम नवि कीजे हो सु गुण सहोदरु, मुक तु मननीरे गाढ. ॥ सहो दर. जाते दामे हो पर नहि आपणा, हसता न जैयें रे हाम. सहोदर, ॥ २ ॥ खांती कहो किम ते खेल खिलियें, जेणे थाए घरमांरे हांण. ॥ सहोदर, पुत्र पराए निज घर नवि वशे, इ सीखतूं मनमांरे आण. ॥ सहोदर. ॥ ३ ॥ आचरण तारां कहो कोण ओलखे, नाना विध तारां रे ढंग ॥ सहोदर, कुलतो बोलू वेरु तुं सही, जे सत्रुसुं करे रे संग ॥ सहोदर. ४ ॥ तव हसि शिर चूंबो देइ ने, भुजसुं भरावीरे बाथ ॥ सहोदर, इम बोले ते आसूं वरसतो, करम संचय नर नाथ ॥ सहोदर. ॥ ५ ॥ वत्स हूं जाणुं छुं चेष्टा एहनी, जिम तुम भाखो छे रे तेम. ॥ बंधव जी, मूल कापे छे

ए सही आपणा, तो पण करिये रे केम ॥ वं० ॥
॥ ६ ॥ स्वभाव माहरो छे ए रीतनो, तज्यो न जाय
रे तेह ॥ वं० ॥ अनंत कालनो एहसूं माहरे, चा
ल्यो आव्यो रे सनेह ॥ वं० ॥ ७ ॥ महोबत मेली
न जाय तेहनी, जीव जो जाय रे तो जाओ ॥ वं०
कांइक क्यारे समारुं तेहनो, दिल धरि तेणें रे दा
ओ ॥ वं० ॥ ८ ॥ काज तुमारां साधु हूं सर्वदा, तुमे
छो मारी रे पांख ॥ वं० ॥ त्रिभुवनमां हूं गाजूं तुम व
कें, जे कहो ते सधारुं रे घांख ॥ वं० ॥ ९ ॥ तव
त्यां मोह महिपति बोलिओ, निज अव्यय पुरथी रे
घेर ॥ वं० ॥ सहाय संसारी जीव आपो मुने, जि
म करुं शत्रुने रे जेर ॥ वं० ॥ १० ॥ असंव्यवहार
नामे निज पुर थकी, कर्म भूपाले रे ताम ॥ वं० ॥
दुर्भव्य ने अभव्य बेहु आपिआ, अनुज ने सखा ए उ
द्दाम ॥ वं० ॥ ११ ॥ मोह नृपनुं महत्व ओपिउं
तिणे, खलकमां वधारी रे ख्यात ॥ श्रोता जी ॥
उदय रत्न कहे आठमी ढालमां, मोहनी मोटी रे
वात ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दोहा. ॥

चारित्र धर्मना सैन्यमां, वेगें गइ ते वात ॥
निरानंद सघलूं थयूं, सैन्य सुणी सहसात ॥ १ ॥

॥ ढाल. ॥ ९ ॥

॥ साहियां माहरां नयण समारी, ए देशी. ॥

तेहेवुं ते देखी ने मंत्री, सद बोध कहे नृपने रली जी. ॥ स्वामी एम शुं गलि जाश्रो छो, कायरनी परें कलकलो जी. ॥ १ ॥ आपद पमे उपाय ते हनो, उत्तम आलोचे मुदा जी. ॥ पग पसारी वे सवुं शोभे, क्लीवके कामनीने सदा जी. ॥ २ ॥ उद्यम पांखे आवास लागे, बुद्धि विना जे बेशी रहे जी. ॥ जलणें तेहनुं सर्वस्व जावे, लाभ किश्यो कहो ते लहे जी. ॥ ३ ॥ दिन स्वामी जातो मद घेरयो, निज पराक्रम मूके नहीं जी ॥ तो ते फरी उदय ने पामे, आपदने अंते सही जी. ॥ ४ ॥ धीरपणो धरि ते माटे, उपाय एहेवो कीजिएं जी. ॥ जिम एहेवुं समाधान थाइ, अरियणनो अंत लीजियें जी. ॥ ५ ॥ तव मंत्रीने कहे महा राजा, युक्ति इ

तूं जाणे सवे जी ॥ ते माटें तुजने गमे, हुकमें ते कीजें हवे जी ॥ ६ ॥ निज स्वामीना पाय न मि ने, सदबोध वदतो एम वदे जी. ॥ मनमांहि थी आरत मेली, वात एक घरजो हृदे जी. ॥ ७ ॥ अवश्य आपणने जावुं घटे छे, कर्म परिणाम कने वही जी. ॥ जिम पावकें दाधा प्राणीने, पावक पामि समि सही जी. ॥ ८ ॥ शत्रुनें पण समय ल हीनें, मगफ-मार्फक-चालिएँ जी. ॥ जिम सवलुं वाल्यूं जे अग्ने, घरमां तेहने फिरि घालियें जी. ॥ ९ ॥ पोपिएं छेएं आपण ऐहना, शुभ पक्षने सर्वदा जी॥ आपण वली आदेश एहनो, फेरवता नथी कदा जी. ॥ १० ॥ चाकरि ए चित धरीने, दिलासो दे शो किरयो जी. ॥ आखर एहेवो दुष्ट नथी ए, जोतां मोह राजा जिश्यो जी. ॥ ११ ॥ नवमी ढा लें नेह धरी ने, उदय रत्न इम उचरे जी. ॥ जाण अछे जे जिन वाणिना, फेरव्या ते नवि फरे जी १२॥

चारित्र धर्म ते चित्तमां, राजा थयो रळियात ॥१॥
आगल करि मंत्रीशने, थोमें शे परिवार ॥
धर्मराज तव धाइने, पोहोतो सुंदर वार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १० ॥

॥ निज गुरु चरण पसाय, ए देशी ॥

सद बोध मंत्री ताम, अवसर जोईरे, कर्म राजाप्रति बोलिओरे ॥ पडि वेळामां आज, प्रभु अम साथेरे, तुमें पण अंतर कियोरे ॥ १ ॥ न घटे ए तुमने नीति, काल प्रमाणे रे, अधिके ओछे जे त्रेवमोरे ॥ स्वभावे तुमें स्वामी, अमशुं तेणेरे, आंटो न राखो एवमोरे ॥ २ ॥ जुनी स्थितिने जोय, केहेनु कह्युं रे, लेखे तूमें मत लेखवोरे ॥ पालो पूरव प्रीत एक पखोरे, इम न घटे ऊ वेपवो रे. ॥ ३ ॥ मौन रही वमी वार, तव नृपरे, मनमांहि विचारि ने रे ॥ अव्य पुरथी एक, एहुने काजेरे, सहायक आण्यो धारिने रे ॥ ४ ॥ सदबोधने ते देखामे प्रछन्न पणेरे, कान मांहि कह्युं तदा रे ॥ तमने पण एक एह, स

हाय थाशेरे, अनुक्रमें सजो मुदारे. ॥ ५ ॥ हवणां तो एहनां तेह, वेरी थासेरे, अनुमति माहरी छे इशी रे ॥ नहिंतो कुटंब विरोध, थाय अमारे रे, करशोमां चिंता किशी रे. ॥ ६ ॥ आखरें तुमने अेह, जिम तिम करीरे, आणी मेलवशुं अमे रे ॥ अे वातनो संदेह, रखे हृदयमां रे, रेश मात्र राखो तुमे रे ॥ ७ ॥ इम सुणी धर्म नरिंद, परिकर लेई रे, पहोतो पोताने घेरें रे. ॥ मंत्रीने कहे इम, अे शूं कीधूंरे, कर्म नृपें कपट भेरें रे ॥ ८ ॥ मोह राजाने सखाय, बंधव जाणी रे, बहु अप्पा मननी हरे रे॥ आपणने दिओ एक, तो पण जुओ, देखामशे कां लांतरे रे. ॥ ९ ॥ तव मंत्री सदबोध, हसीने कहे रे, स्वामी सूं सूण्यो नथी रे. ॥ धेनु अभग विछाण, लहियें ते वारूरे. मन साथें जुओ मथी रे॥१०॥ मोह बंधु हितवंत. आदेश कारी रे, सुभट सहु छे तेहना रे. ॥ अंत तणा करनार, जग जाणेतारे, आपण वेरी एहना रे ॥११॥ ब्रहिन वमी बलवंत, लोक स्थिति नामेरे, कर्म राजानी जे कही रे. ॥ ते मोहनी वांछे जीत, अनंतमें भागें रे, आपणो

जय वाधे सही रे ॥ १२ ॥ शत्रु अनेक हुं एक, ए पण इहां रे, खेद रखे राखो हृदे रे ॥ इकलो जिम आदित्य, तम भर दलेरे, फिरि जिम पामे उदेरे. ॥ १३ ॥ वहु काले ते सहाय, मिलसे तेह नेरे, खर खरो न करो विभु रे. ॥ पंखी भूख्या माट, काची अंतेरे, उंवर किम पाके प्रभुरे ॥१४॥ शीघ्र न थइये स्वामि, धीरां धीरां रे, कारज सघला नीपजेरे. ॥दशमी ढाले श्रेम, उदय पयंपे रे, धर्मे धन सुख संपजे रे. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

एक चित्ते सव ए सुणी, चंद्र मौलि भूपंत ॥
अचरज लहि इम चिंतवे, अहो मंत्रि बुद्धिवंत ॥
यथार्थ नामें अे सही, धन्य मंत्रि सदबोध ॥
बीजानें इम बोलतां, किम आवे अविरोध ॥ २ ॥
केवल इम अनुग्रह करयो, इहां आवि मुनिराज॥
आख्यानक कहि आपणुं, सार्यो आतम काज॥३॥
क्षणेक इम आलोचिने, मिलित लोचन महिपाल॥
बोल्यो बे कर जोडिने, मन लहि मोद रसाल॥४॥

भगवन चारित्र धर्मने, सोंप्यो जेहे सहाय ॥
शुं शूं तेहने शाभलुं, आगल कहो उपाय ॥ ५ ॥
अति उत्सुक मन माहरुं, सुणवा अेह संबंध ॥
कहो भगवन सु पसायकर, प्रेमे अेह प्रबंध ॥ ६ ॥

॥ ढाल. ॥ ११॥

॥ चरणाली चामुंम रण चढे, अे देशी. ॥
मुनिवर कहे महाराजने, तव कर्म परिणामें मोदेरे॥
असंख्य व्यवहारथी उद्धरी, धर्यो तेह व्यवहार नि
गोदें रे ॥ मुनि० ॥ १ ॥ तेह समीप रह्यो तिहां,
पोते प्रछिन्नरूपें सोइरे ॥ मोहादिक तव चिंतवे, जु
गति तेनी सर्वजोइरे ॥ मुनि० ॥२॥ अहो अहो नाय
क आपणो, नारदरूप निहालोरे: ॥ गारनां खीला
नी परें, अस्थिर माया घालोरे. ॥ मुनि० ॥ ३ ॥
वणकरनी जेहेवी नली, जेवी घंटनी लालीरे ॥
मृदंग जेहवुं मातंगनुं, अेवी एहनी गति भालीरे.॥मुनि०
॥ ४ ॥ मध्य मणी जिम हारनो, तिम अे उभय
पक्षगामीरे. ॥ सीखामण पण देतां सही, हठ नव
मेले हरामीरे. ॥ मुनि० ॥ ५॥ आगे जे अेणें कर्यु

ते हृदयमांहि नव रह्युंरे. ॥ भृत घट ऊपर जल यथा, चहु पासे जाश्रे वयुंरे मुनि० ॥ ६ ॥ जल जिम जलणे तापव्युं, वलि शीतल थाय विसेसेरे.॥ सोखामण शी सहेजने, ज्यां अफल थाय उपदेशेरे. ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ जो श्रे थयो वेरमो, तो जाशे श्रेनी लाजेरे. ॥ समय जोई निज भुज वले आपणसाधसूं काजेरे. ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ इम चिंतीने आवियो, ते संसारी जीव पासेरे. ॥ मोहादिक मलि श्रेकठा, दुःख देवाउल्हासेरे. ॥ मुनि ॥ ॥ ९ ॥ भावी धर्म भुपालनो, भीरु जाणी टोक्योरे अनंत उत्सर्पणी लगे. व्यवहार निगोदमा रोक्योरे.॥ मुनि० ॥ १० ॥ दुख दीधां कोमीं गमें. जे संशारना तेणेंरे ॥ अग्यारमी ढालें उदय वदे. ते कयु न जाश्रे केणेंरे० ॥ मुनि. ॥ ११ ॥

॥ दोहा. ॥

कालांतरे कोइक समे, लाग लहिने तेह. ॥ कर्मे पृथिवी कायमां, वश्यो तिहांथी लेह. ॥ १ ॥
मोहादिक दुष्टे मली, त्यां पण तेने निशंक. ॥

घेरी राख्यो घणा दुःखमा, उत्सर्पणी असंक. ॥२॥
इम अप तेउ वाउमा, तेमज रोकी तास ॥
दुःख दीधा लाखो गमे, कर्मतुं ऊपर जास ॥ ३ ॥
प्रत्येक तरुमाहे पछी, शितेर कोमाकोमि ॥
सागरोपम राख्यो सही, दुःख दई लख कोमि ॥४॥

॥ ढाल. ॥ १२ ॥

॥ गौतम समुद्र कुमार, ए देशी. ॥

इम ते संसारी जीव, वलि मोहादिकें, वलि वलि पाछो वालिए ॥ वाइयो व्यवहार निगोदें, पृथव्यादिकमा, फरि राख्यो तिहा घालि ए ॥ १ ॥ इम एकें द्रिमाहि, अनंत उत्सरपणी, फेरव्यो ते फरि फरी ए ॥ पुद्गल तिहा असंख्य, परावर्त्या तिणे, भव बहुला करि करीए ॥ २ ॥ वलि पामे विचालु, कर्म ते निहाथि, विगलेंद्रिमा वासिओए ॥ ते जाणीने दुष्टे, पूठें आविने, पराभव पासें पासिओए ॥ ३ ॥ वरष संख्याता सहस्र, तिहा वलि रोंकीने, निगोदादिकमाहे धरचोए ॥ असंख्याता पुद्गल,

पगवर्त्तावीने, विगलेंद्री रूपें कर्याए ॥४॥ सख्याती तिहा कालरे, वासी ने वलि, श्रेकेंद्रिमा श्राणिश्रो श्रे ॥ वलि विगलेद्रिमाहे, वलि श्रेकेंद्रीमा, तेहने इम बहु ताणिश्रोश्रे ॥५॥ इम श्रवतरी वार श्रने क, पुद्गल श्रनता, परावर्त्त तिहा दुख घणोश्रे ॥ वलि कर्म लहियविचालुरे, श्रवतार्यो तेहने, समुर्छ म पचेंद्रियपणेश्रे ॥६॥ तिहा पण-धाया पूठेरे, मो हादिक मली, श्रष्ट भव तिहा रोकीनेश्रे ॥ पूर्व को डि प्रत्येक दुःख दीधा बहु, दया न श्रावी देखीने श्रे ॥७॥ श्रेने लाहि श्रासनरे, वलि वाली पाछो श्रेकेद्री श्रवतारिश्रोश्रे ॥ वलि विगलेंद्रिमाहि, स मुर्छम पचेंद्री, श्रवतारी दुःख भारिश्रोश्रे ॥८॥ इम पुदगल श्रनतरे, परावर्त्ताविया, ते ससारी जीवनेश्रे॥ मोह राजानी सार्थेरे, दुःखमा रोकीने, राख्या करती रोवनेश्रे ॥९॥ बोल्यो बारमी ढालरे, महा राजा मोहनो, जोरो जो जो भविजनाश्रे ॥ शाभलि श्रेह सबधरे, चितमा चेतजो, उदय वदे थई श्रेक मना श्रे ॥१०॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ दोहा. ॥

अवसर लहि तव अन्यदा, तिरिय पचेंद्रि माहि ॥
कर्मे ते अवतारिओ. अगीकृत उगाहि ॥ १ ॥
त्या पण अरि आवी तिणें. पूर्व कोमि प्रत्येक ॥
अष्ट भवा तस रोंकि ने. दीधा दुःख अनेक ॥ २ ॥
क्रोधें वाली त्यायकी, अवतार्यो ते जत. ॥
एकेंद्रीथी आदिदे, गर्भज तिरय पर्यंत. ॥ ३ ॥
पुद्गल परावर्त्या तिहा, आपटमाहि अनत. ॥
वलि मठ पचेंद्रि कर्यो. तक लहि कर्म तत. ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १३ ॥

करती अरजी जीम वारी, ओ देशी. ॥

मोह राजादिक लहि ते मर्म. ॥ चिंते जोजो वधु ना कर्म. ॥ आघो आघो चलवे ठे ओहने ॥ जाणिये ठे मेलवशे तेहने. ॥ १ ॥ इम आलोची ते ससारी. ॥ मोहें दीधो माश अहारी. ॥ घणु करावी ने जीव घात. ॥ नरकमहि ते नाख्यो अनाथ ॥ २ ॥ असख्य काल त्या दुःखमा धरीओ. ॥ वली कर्मे

तिहाथी उधरीओ ॥ विहगम जातिमें वाड्यो लेई.॥ वली मोहादिक क्रोध धरेई. ॥ ३ ॥ ग्रेकेंद्रि ग्रा दि नर्क पर्यंत. ॥ तेमाहे रूल्यो जत. ॥ पुद्गल परावर्त्त ग्रनत. ॥ दुःख तेहनु जाणे भगवत. ॥ ४॥ समुर्छम मनुष्यमाहें वलि सोंई. ॥ कर्म सरजाव्यो तक जोई. ॥ तिहा पण मोहादिकें भव ग्रष्ट. ॥ रोंकीने दीधु महाकष्ट. ॥ ५ ॥ ग्रष्ट ग्रतर मुहूर्त ति हा राखो. ॥ वली तिमज दुर्गति ते दाखो. ॥ समुर्छम ग्रते एकेंद्री 'ग्रादे. ॥ भव बहुला कीधा प्रमादे. ॥ ६ ॥ ग्रनत पुद्गल परावर्त्तन कीधा. ॥ मोहादिकें रोंकी दुख दीधा. ॥ गतागतें लही बाधा जेह. ॥ ज्ञानी विना कुण जाणे तेह. ॥ ७ वली कर्मे काडक तकसाधी. ॥ गर्भज मनुज तणी गति बाधी. ॥ ग्रनारज देशें लहि ग्रवतार्यो. ॥ तत्र मो हादिकें एम विचार्यो. ॥ ८ ॥ हा हा इणे ग्रहो साहि हणिया. ॥ ग्रापणने लेखे नवि गणिग्रा. ॥ ग्रहो ग्रहो कर्म परीणामें उदेरी. ॥ घणी भुमि आण्यो ए वेरी ॥ ९ ॥ तव रस गृधि प्रवृत्ति ए ना में. ॥ मुख मरमी बोली तें ठामें. ॥ ग्रम ग्रवलानु

जुओ बल सामी, ॥ सबलाने पण नाखु दामी, ॥१०॥ तो प्रभु आगल कहो ए शे लेखे. ॥ आण तुमारी कुण ऊवेखे. ॥ आदेस जो अमने आपेदेव. ॥ तो गलेझाली एहने ततखेव. ॥ ११ ॥ तुम चरणे लावुं तहकीक. ॥ वचन अमारां ए मानजो ठीक. उदय रत्न कहे तरमी ढाले. ॥ धन्य जे न पमे मोहनी जाले. ॥ १२ ॥

दोहा ॥

तव मोह नृप मुखे बोलिओ, ऊलट आणी ऊर ॥
अहो अमारा सैन्यमां, स्त्री पण एहवी सूर ॥ १ ॥
इम कहि आपी आगना, वेगें वेरो जइ तेह ॥
हुं पण तुम पुठे लगो, आवूं छूं दल लेह ॥ २ ॥
प्रभु आणाइं त्यां जई, रस गृघी ए दीन ॥
रसनो ते रागी कर्यो, ॥ मदिरामांस तल्लीन ॥ ३ ॥
प्रवृतिए जई प्रेरिओ, ॥ जननी भगनी साथ ॥
आगम गमन उलट भरे, कराव्युं दिन रात ॥ ४ ॥
नरक गते वली नाखी ओ, तरत लेइ ने तेह ॥
मठ एकेंद्रीमा फरी, रोक्यो काल अछेह ॥५

पुदगल परावर्त्या तिहां, आपद भरे अनंत ॥
विपदा वेंवी जे वली, ते लहे तेहज जंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ १४ ॥

नदी यमुनाके तीर उभे दो पंखियां, ए देशी.

अनारज देश मझार, ते कर्म आणि ओ ॥ मातंगना कुलमांहि, ते मोहें जाणिओ ॥ १ ॥ घाल्यो नरक मझार, वलि नर भव दीओ ॥ तव महा जन्म जात्यंध, ते मोह नृपें कीयो ॥२॥ किहां एक पाषाणरूप, विरूपवली करयो ॥ एकेंद्रियादिक मांहि धवधव ले धरयो ॥ ३ ॥ रोक्यो केतो काल, वली कर्मे रली ॥ आप्यो नर अवतारके, अवसर अटकली ॥ ४ ॥ दंरसना वर्णी ताम के, जाति बधिर पणुं ॥ आपि करयो अप्रशस्तरूप के, दुःख देवा घणुं ॥ ५ ॥ तिमज फेरव्यो तेह के, पहेलो जिम कह्यो ॥ क्यां एक पंगु मूक के, कुबज पणो लह्यो ॥ ६ ॥ क्लीव काणो कुरूप के, दास पणो धरी ॥ वसकरि वार अनंत के, फेरव्यो फरि फरी ॥ ७ ॥ अनंता पुद्गल एम परावर्त्तन करया ॥

गएया ते न गणायके, फेरा जे फरया ॥ ८ ॥ कर्म परिणामें तें वली, मनुज गति वर्यो ॥ निज चर मोकली मोहें, तिहां पण परभव्यों ॥ ९ ॥ दुष्ट चरे ते किहां एक, कुटी महोदरी ॥ वायु रोगी पित्तवानके, गुल्मी भगंदरी ॥ १० ॥ कंठ ने कर्ण कपाल, तालु आदे घणां ॥ उपाया महा रोग, जिहां दुःखनी नहिं मणा ॥ ११ ॥ ताव फीहो अतिसार, दसन रसना गदें ॥ अधुर ग्रीवा आंख, रोगें ते पीमयो पदे पदें ॥ १२ ॥ कपोल रोगी बंध कुष्टीके, शिर रोगी कर्यो ॥ हृदय उदर पूर्व सूलके, आम रोगें भर्यो ॥ १३ ॥ अरुचि प्रमेह खीन रोग आदि महा गद भरे ॥ पीमयो पामे मुख रीवके, विलवे बहु परे ॥ १४ ॥ चौदमी ढालें तेह, जमयो मोह ने जणें ॥ उदय वदे महा दीन, ते घेर्यो गद घणें. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

जाण्यां अजाण्यां आचरें, औषध अनेक उपाय ॥
जिम तिम जे तेना कह्यां, बुकी काथ बनाय ॥१॥

अभक्ष अपय ते आदर्या, मंत्र तंत्र वाति दान ॥
शरीर काज शंका तजी, पाप कर्या असमान ॥२॥
पाप भरें पामी प्रगट, नर भवहारी जंत ॥
एकेंद्रि आदिकमां ऊपनो, इम ते वार अनंत ॥३॥
मानव भव वलि एकदा, पाम्यो कर्म पसाय ॥
तव मनमांहे कोपियो, मोह राजा तिणे ठाय ४॥

॥ ढाल. ॥ १५ ॥

। सोनारी भणी, ए देशी. ॥

राजा किहां एक मोह नरिंदें, दंभ नायक तेहने क र्यो ॥ सोइ साधु भणे ॥ किहां रे आहेमी. अति क्रूर, किहां रे कसाव कुलें धर्यो ॥ सो० ॥ १ ॥ कि हां रे धीवर किहांरे चंमाल, किहांरे मांस भक्षी घणुं ॥ सो० ॥ किहां एक मद्यपानी मरसराव, कि हांश्रेक मंसा हिंसकपणुं ॥ सो० ॥ २ ॥ किहां खा त्र पामो खरो दुष्ट, किहांश्रेक साधु घातकिओ ॥ सो० ॥ किहांश्रेक कान नाको कुल हीण, किहांश्रे क दासपणो दिओ ॥ सो० ॥ ३ ॥ किहांश्रेक धूर्त ठग धर्म हीण, घात पाडी पर धन हरो ॥ सो० ॥

कूमा प टतणो घमनार, जन वंचक जोमा गरो ॥ सो० ॥ ४ ॥ किहां अेक बांध जलो कोटवाल, गुप्त पालक मंत्री सरू ॥ देश नगरना दई अधिकार, खर कर्मनो कर्यो आगरू ॥ सो० ॥ ५ ॥ किहांअे क भेल सभेलमां ते भेलि, तेल इक्षु पीलाविने॥ सो० ॥ मदिरा मांस वेचावे क्यांइ, किहांअेक श स्त्र घमाविने ॥ सो० ॥ ६ ॥ लोह लाख अने रस केस, हलमूसल ऊपल तणा ॥ सो० ॥ सोप्या बहु सावद्य व्यापार, घरटी आदि अते घणा ॥ सो० ॥ ॥ ७ ॥ वली सोंपी अधम अनेक, कुटंब काज आजीविका ॥ सो० ॥ इम हिंसा करावे अनंत, दुर्गतिनी जे दिपिका ॥ सो० ॥ ८ ॥ एकेंद्रियादि कमांहि, वाश्यो तेहने वली वली ॥ सो० ॥ अनं ता पुद्गल एम, परावर्त्तन कीधा वली सो० ॥ ९ ॥ इम मानव गति पुरमाहि, प्राणी ते पाछो फरी फरी सो० ॥ आव्यो त्यां अनंती वार, अवतार बहुला करी करी ॥ सो० ॥ १० ॥ उदय रत्न कहे इणि भांति, पनरमीं ढालें प्रेमसू ॥ सो० ॥ कथा ए सुणवा कान, नित प्रतें आवजो नेमसूं ॥ सो० ११

॥ दोहा. ॥

मोह राजा हवे अन्यदा, मेली निज समुदाय ॥
मनसूं आलोची मुदा, इम बोल्यो तिणि ठाय ॥१॥
असंव्यवहार पुर आदिथी, मांमी अंत्य पर्यंत ॥
संसारी साथें भम्यो, मुझ आदेशे तंत ॥ २ ॥
मिथ्या दर्शन महा सुभट, सेवक तेहना सूर ॥
ज्ञानावर्ण अज्ञान वे, भमवाव जेहनो भूर ॥ ३
ए त्रणेना प्रभावथी, देव धर्म गुरु नाम ॥
काने पण क्यारे नवि सुण्यो,भमतां तिणे कोई ठाम॥
लोक भावित पण नवि लह्यो, केवल गमयोकाल ॥
अहार निद्रा मैथुन वसें, अवर जाणुं सर्व आल ५
हवे सुण एछे एहवो, कनक पुरें कर्म राय ॥
अम सेव घरें अंगना, नंदा नामें कहेवाय ॥ ६ ॥
तेहने कुखें उपजावशे, पुत्र पण पुर तेह ॥
कांइक धर्म वासित अछे, तिणे मुझ चिंता एह ॥७॥
रखे पामि ते धर्मने, धर्मी लोक प्रसंग ॥
अधर्मी पण लहि धर्मने, वसतां धर्मी संग ॥ ८ ॥

इये कारणे बोल्यो बहु. मा° ॥ ६ ॥ तेहवी तिहां तरुणी एक, हो° ॥ चिंतव्या मोह मंमप तले. मा° ॥ क्रीवशूं करती कल्लोल, हो. ॥ वेगी ते बा हेर भूतले. मा° ॥ ७ ॥ ते मंत्रीना सुणी बोल. हो° ॥ अट्टहासि ते हसे, मा° ॥ क्रीव करे तत काल. हो° ॥ ताली लेइने उल्हशे. मा° ॥ ८ ॥ तव विस्मित मोह नरिंद, हो° ॥ ऊठी आव्यो बा हिरे. मा° ॥ तिहां विपर्यय समूह आसने, हो° ॥ बेसी बोल्यो इणि परे. मा° ॥ ९ ॥ कहे वत्से तूं केम, हे भद्रे. ॥ ए क्रीव आगे हसी इहां, मा° ॥ तव प्रणमी तसु पाय, हे° ॥ तरुणी ते बोली ति हां. मा° ॥ १० ॥ देवा सहुने दुःख, हे० ॥ जा लम हुं छुं योगिनी, मा. ॥ वाहलांना पाडुं वियो ग, हे. ॥ हुं आपदा इष्ट वियोजनी. मा. ॥ ११ ॥ एमरण नामें महा योध, हो. ॥ पंमक पराक्रम नो धणी, मा. ॥ गणे त्रिभुवनने त्रण मात्र, हो. ॥ सूरो सुभट शिरोमणी. मा. ॥ १२ ॥ इंद्रादिक मा ने आण, हो. ॥ असंख्य साधन एहनुं. मा. ॥ ॥ धिंगी ठे एहनी धाम, हो° ॥ जगव्यापक बल जेह

नुं. मा० ॥ १३ ॥ जन बाल वृद्ध युवान, हो० ॥ ओलखे एहने सहु. मा० ॥ प्रभु प्रसादें एह, हो. बल धरावे छे बहु. मा० ॥ १४ ॥ उदय रत्न कहे एम, हो श्रोता. ॥ सोलमी ढालमांहें सुणो. मा. श्रमने जीते जेह, हो. ॥ जालिम जोर तहने ग णो. मा. ॥ १५ ॥

॥ दोहा. ॥

प्रभु तुम बंधु कनक पुरें, श्रमर शेठ ने गेह ।
लई नंदा कूखें धर्यो, सत्व संसारी तेह ॥ १ ॥
छ महिना बोल्या जिश्यें, तव लहि तुम अभिप्राय.
मरण सहायनी हुं तिहां, ततपिण पहोती जाय२ ॥
तुरत तात तेहनो हर्यो, जननी जणतां खेव ॥
शेष कुटंब सर्व संहर्यो, तुम पसाए देव ॥ ३ ॥
तव रमणी आवी तिहां, ते पण लीधो ताणि ॥
कुलमां कोइ न ऊगर्युं, नामें रह्युं निर्वाण ॥ ४ ॥
एकेंद्रियादिकमांहि वलि, कर्मो धर्यो अथाग ॥
पुदगल अनंत परावर्त्तशे, तव तें लहेशे थाग ॥ ५ ॥
मिथ्या दर्शन महत्तम, मंत्री मुखनी वाणि ॥

शांभळिने स्वामी अमे, हस्या बने ते वाणि ॥६॥

॥ ढाल. ॥ १७ ॥

॥ सुंदर हे सुंदर वालुं, दत्तणी चाकरी, ए देशी. ॥ राजन हो राजन, मोह राजा मन वसि रह्यो ॥ खिजमतकारी ते खंत, रा० ॥ पराक्रम तेहना शांभली, उपनो हर्ष अत्यंत ॥ रा० ॥ मो. ॥ १ ॥ तव प्रेमे अवलोकि ने, करशुं फरसी देह, रा० ॥ आग्रह नामें खवाशने, कहे मोह राजाने तेह, रा. ॥ मो. ॥ २ ॥ सेवक हो सेवक जो जो महारा सैन्य मां, पभकनुं पण जोर रा० ॥ त्रण भुवनमांह एकलो, जेह पमावे शोर रा. ॥ मो. ॥ ३ ॥ मरण

थतमांसि ॥ सूर्या रथस्य धुरितं यदिना कारिष्यत् १॥ मोह राजा वलतो वदे, वत्स शांभल कहुं वात से. ॥ जोतो चूपे ते जीवने, रहिजें तुं दिन रात. ॥ से. ॥ मो. ॥ ५ ॥ मानव गति पुरिमां किहांरे, जोते आवे जीव ॥ से. ॥ तो उठवा पण तेहने, रखे देतो सुणि रीव ॥ से॰ ॥ मो. ॥ ६ ॥ धर्म अक्षर जिम नवि धारे, तिम उनमूली तास ॥ से. ॥ ततपिण पाछो वाली ने, आणजे आपणें वास ॥ से.॥ मो. ७ आण प्रमाण करी सबें, उठया न करी जेमि. से॰ ॥ मरणादिकें मन मोदशूं, कीधी जेहनी केमि. से. मो. ॥ ८ ॥ कर्म परिणामे ते आणिओ, कुलटा नारिनी कूख. से. ॥ दुष्टोपध पानादिकें, गर्भथी घाल्यो दूख. रा. ॥ मा. ॥ ९ ॥ वलि एकेंद्रिया दिकमां फरी, तिमज राख्यो नेट. रा. ॥ वलि कर्में काढी धर्यो, प्रथम गर्भा त्रिय पेट रा. ॥ मा. ॥१०॥ त्यां पण योनिनां यंत्रमां, पीमाणो ते प्रा णि रा. ॥ जणतां जननी सहित ते, मरणें लीधो ताणि. रा. मा. ॥ ११ ॥ वलि एकेंद्रियादिकमा धर्यो, अहो अनंतो काल. रा॰ ॥ इम किहां इक

वर्षनो, किहां बे वरषनो बाल. रा० ॥ मा० १२ ॥ वलि किहां एक त्रण वर्षनो, एम अनंती वार. रा० ॥ मरणें ते सोधो हरी, न लह्यो धर्म विचार. रा० ॥ मा० ॥ १३ ॥ इम एकेंद्रियादिकमां तेहनें वाश्यो वार अनंत रा० ॥ पुदगल परावर्त्त घणा, जेहनो नावे अंत, रा० ॥ मा० ॥ १४ ॥ सतरमी ढालें शांभलो, इम वदे उदय रत्न. रा० ॥ नर भव पामी निर्मलो, करजो जीव यत्न. ॥ रा० मा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

श्री निलय नामे नगर, मानव क्षेत्र मझार ॥
तिहां धन तिलक श्रेष्टि वशे, धनवति तस घर नार १
कर्म परिणामे अन्यदा, जीव संसारी तेह ॥
तसु उदर अवतारिओ, लघु लाघव करी लेह ॥ २ ॥
मिथ्या दर्शन मंत्रिने, मोह लहे ते तंत ॥
भाषे भय पामी मने, आतुर थई अत्यंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल. ॥ १८ ॥

॥ आठे लालनी देशी. ॥

नीचां नमावी नयण ॥ वदनें न वदे वयण ॥ आ
ठे लाल ॥ क्षण इक मनसूं आलोचिने, शिर धूणी
तिणि वार मुख मेली हुंकार ॥ आ. ॥ सचिव कहे ते सों
चिने ॥ १ ॥ मन मान्या महा राज ॥ करशुं सघलां काज
आ० ॥ मुफसवलुं कुल तेह अछे ॥ आज लगें प्रभु
कांई ॥ विरिछे वासित नांहि ॥ आ. ॥ में पण
मगन कर्युं न छे ॥ २ ॥ आज थकी ते माट ॥ वि
शेषे आणीसुं वाट ॥ आ. ॥ चिंता शी छे वात
नी ॥ तजावी तुम ताक ॥ किहां छे जाशे वराक ॥
आ. ॥ निजर अमोघ छे नाथना ॥ ३ ॥ अल्प का
लें छे वान ॥ गले फाली राजान ॥ आ. ॥ आणे सुं
आपणें घरें ॥ पण पाकीने आम ॥ वीडु ठवी बल धाम
आ. ॥ मंत्री जई निज मंदिरे ॥ ४ ॥ बेठो चिंता मग
न. ॥ लागी जोर लगन ॥ आ. ॥ कपोल थापी मा
वें करें ॥ अवनी जिमणे हाथ ॥ खणतो थको मन सा
थ ॥ आ. ॥ आलोचे अरति भरें. ॥ ५ ॥ कुदृष्टि

नामें तस नार. ॥ पेखी कहे तिणि वार. ॥ आ. ॥
कुण जगमां युवती इशी. ॥ जेहने काजें धारे राग. ॥
अरति करो छो अथाग ॥ आ. ॥ कुण तुम कालजमां
वशी ॥६॥ रूप पुरंदर स्वामि ॥ युवती जन विश्रा
म ॥ आ. ॥ मोहन मुनें कहो नें खरुं ॥ कुण अेह
वी गुण वान ॥ नारी रूप निधान ॥ आ. ॥ जेणें
मन प्रभुनुं हर्युं ॥ ७ ॥ तव ते कहे गुण खाण ॥ हस
तां पण अे वाण ॥ सुण वाम ॥ कहेंवी सही न घटे
तुनें ॥ जे तुज वण वीजी नार ॥ सूता सुपनें मझा
र ॥ आ. ॥ दीठी पण न गमे मुने ॥ ८ ॥ कोइक
कार्य विशेष ॥ चिंता वर्त्ते छे अेष ॥ आ. ॥ तव
सा भमरि वल्लालीने ॥ कहेवो स्वामी शूं काम ॥ अे
हेवुं छे वद्दाम ॥ आ. ॥ जिणें राख्युं छे चित घालेने
॥ ९ ॥ लीला मात्र भुवन देव ॥ वश्य करो ततखेव ॥
आ. ॥ समरथने चिंता किशी ॥ कहेवा योग्य जो हो
य ॥ तो कहो मुज आगले सोय ॥ आ. ॥ चिंता
जे चितमा वशी ॥ १० ॥ सुण सुभगे में कांई ॥
आजसगें मनमाहि ॥ सुणो वाम ॥ कपट किश्यो
नवि राखिश्यो ॥ मुज घरनो कर भार ॥ तुजहाथें

निरधार ॥ आ. ॥ एशूं आज ते भाखिओ ॥११॥
उदय रत्न कहे एम ॥ सुणो श्रोता धरिप्रेम ॥ सुख
कामे ॥ आगमने जे अभ्यसे ॥ आढारमी ढाले तेह
भवनो लहेशे छेह ॥ सु. ॥ मनमान्यु तेहनुं थशे॥१२

॥ दोहा. ॥

चितानुं कारण हवे, सुण मन राखो वाय. ॥
कर्म परिणामें धर्मने, कार्जे एकसखाय. ॥ १ ॥
अव्यय पुरथी ऊधरी, ऊंचो आण्यो तेह. ॥
साप्रत श्री निलय वरे, धन तिलक श्रेष्टी गेह. ॥२॥
धनवंती कुखें धर्यो, जीव संसारी सोय. ॥
जिम जिम ते वाधे तिहा, तिम इहाचिंता होय॥३॥
प्रतिज्ञा प्रभु आगले, पण पाकी ते काच. ॥
मैं कीधी छे मजलसे, अहो अवदे सुण आज.॥४॥
ते पण ते सुणी हशे, कविण अछे ए काज. ॥
इतर लोकतणी परें, अफल न होय अवाज ॥५॥

॥ ढाल. ॥ १९ ॥

॥ गढ बुंदि हो वाला, एहनी देशी. ॥
चारीत्र धर्म नृप छे चावो, संग्राने महा सुरो हो.॥

प्रिय पंकज नयणी, सुभगे सुन सशि वदना. ॥ कर्म परिणाम राजाने, काने ते लागो छे पुरो हो प्रि. १ मोह राजानी आज्ञा मुकीने, कर्म करे छे पासु हो प्रि. आगे उवे छे तिणे निज घर रमा, लोक करे छे हासु हो प्रि. आज लगि तो कुशल पणे तेमे, पूरण नथि पाशूं हो ॥ प्रि॰ ॥ फेरव्युं पण न फरे, अमारू, वेरीएं जे वाश्यूं हो. ॥ प्रि॰ ॥ ३ ॥ निपुण अछे शत्रु ए सघला, मुफ मतिमां जेवा हो. ॥ प्रि॰ अम वा सित जनना मनने, समरथ छे भांजेवा हो. प्रि॰ ४॥ सम्यक् दर्शन नामें साहि माहरो, विशेष अछे ते वेरी हो. प्रि॰ ॥ धर्मबुद्धि नामें छे धूया, तेहने गु णनी लहेरी हो, प्रि॰ ॥ ५ ॥ सुरपति सारिखा सेवे जेहने, चक्री जेहने चाहे हो. प्रि॰ ॥ मगन थईने रहे मुनि मनमां, अवनि पति आराहे हो. प्रि॰ ६॥ सुधि जन जेहनी संगति इछे, ध्यानी जेहने ध्याय हो . प्रि. ॥ उत्तम जन अंगिकरे जेहने, जे अ मरने मोह उपाय हो. ॥ ७ ॥ सकल सौभाग्य रूप सुधानी, तरंगिणी ते राजे हो.॥तपसी पण तेमे सहु तेहने, छबी अनोपम छाजे हो. प्रि. ॥ ८ ॥

वस्य करवा चाहे ते पासे, प्रथम एहने प्रेखे हो. प्रि. ॥ अम वासित देखी जन एहनें, अमने न गणे लेखे हो. प्रि. ॥ ९ ॥ अम स्वामीना भक्त जे पूरा, जे रहे चरणें विलगा हो. प्रि. ॥ ततपिण तेहना मन अेह भाजी; अमथी करे अलगा हो. प्रि. ॥ १० ॥ उत्तम कुलनी उपनी अबला, जे अद्भुत रूपाली हो. प्रि. ॥ आशक थया जे नर अेहना, ते मेले तेहने टाली हो. प्रि. ॥ ११ ॥ उपदेशें जे अेहने लागे, तेहने संग बीजो न सुहाय हो. प्रि. ॥ अेहनो पूर्व भमतो हीमे, निविम स्नेही थाय हो. प्रि. ॥ १२ ॥ सार करी ने मानि तेहने तेहनुं पासुं ताणी हो. प्रि. ॥ संसार सघलो तेह मे देखी, अमने वेरी जाणी हो. प्रि. ॥ १३ ॥ पक्ष अमारो अेह समूलो, उन मूले इम जाणो हो. प्रि. ॥ चिंता पुर हुं छुं ते माटे, अवर न सांसो आणो हो. प्रि. ॥ १४ ॥ ओगणीसमी ढालें अेम बोले, उदय रत्न अेक ताने हो. प्रि. ॥ भवि जन भावें तत्पर थजो, जिन वाणी सुणवाने हो. प्रि. ॥ १५ ॥

॥ दोहा. ॥

तव सा काइक मन हंसी, कुद्दष्टि कहे सुणो कंत॥
वणिक परें ए तमने, भयनी लागे भ्रांत ॥ १ ॥
अर्क पत्र जिम दूरथी, शसि ज्योति साक्षात ॥
व्याघ्र कर्ण भासे प्रभु, सरद पुनमनी रात ॥ २ ॥
तिम लागे छे तुमने, अछतो भय अनंत ॥
मन कल्पित कायर परें, सूरा नवि सकंत ॥ ३ ॥
जीवन जे तुमें कह्यो, कर्म करे छे पक्ष ॥
स्वामी ते साचूं सही, वलिओ एह अलक्ष ॥ ४ ॥
अगीरुतने कबरे, ते जाणो तहकीक ॥
पण केवल केहनो नथी, वात कहूं छूं ठीक ॥५॥
अखम अछे ए आपणो, रिपु पखे छे रेप ॥
दाक्षिण लगे तेहने मिले, आपणा कुलनो एप ॥६॥
वोरि अछे ते एहना, आपण एहनी वाह ॥
जे जेहना ते तेहना, आखर हुइ उछाह ॥ ७ ॥
ते संसारी जीवने, आज लगें एकत ॥
रोकी दुःख दीधा घणा, जेहनो नावे अंत ॥ ८ ॥
मध्यम वार्त्त त्या जाणजो, राजा कर्म परिणाम ॥

एह विना तुमे तेहने, दुःख किम देइ शको स्वाम ९
निज घर वालूं सहूने, पाणी पाणीने वाट ॥
आखर जातां ऊतरे, नवो न शोभे घाट ॥१०॥

॥ ढाल ॥ २० ॥

॥ वातम काढो व्रततणी, ए देशी. ॥

वालहा सुणो वलि वीनती, एहवुं कह्युं तुमे जेहरे॥
वेरीने पण छे वासवा, हुं नवि मानुं तेहरे ॥ वा०
॥ १ ॥ जो ते निपुण अति छे एहवा, तो काल अ
नादिना फरतारे ॥ अेक निगोदनां जीवने, वश्य
कहो कां नथि करतारे ॥ वा० ॥ २ ॥ अेक निगोदें
जंतु जेता, तेहने अनंतमें भाग रे ॥ अेणें कीधा
आपणा, काल अनंते लागेरे ॥ वा० ॥३॥ बाकी अनुचर
तुमतणा, त्रिभुवन पुर्यु तेणेरे ॥ अनंत जंतुगण जेह
नी, संख्या न थाए केणेरे ॥ वा. ॥ ४ ॥ चोरासी
लक्ष चोवटे. नृत्य अनंता थायरे ॥ जुओ तुमारा
राज्यमां, नाटक चल्या जायरे ॥ वा. ॥ ५ ॥
तो निपुण पणुं पण तेहनुं, इयेकामे आव्युं रांसेरे॥
चांच बोले जो चरकली. तोसायर जल शुं सोसेरे॥

वा. ॥ ६ ॥ जेहवली तुमे कह्यो. धर्म बुद्धि तस बेटीरे ॥ इंद्रादिक ने सेव्य छे. सौभाग्य गुणनी पे टीरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ सापनी भांतें सीदरुं. देखी जिम कोइ बिहेरे ॥ तिम तुमने प्रभु तेहनी. भ्रांति वशी छे हिएरे ॥ वा० ॥ ८ ॥ घोमाचम जिम कोइक घणुं तस्कर देखी त्रासेरे. ॥ बीहक निज बल नवि लहे. सांसे पमयो नवि नासेरे ॥ वा० ॥ ९ ॥ तिम तुमे छते बले. शाने पमयाछो सांसेरे ॥ जा लिम मोह राजा तणो. हाथो छे तुम वासेरे ॥ वा० ॥ १० ॥ आपणे पण पुत्री अछे. अधर्म बुद्धि इणि नामेरे. तेहने पगसूं वेसी परी. त्रिभुवन जेहने कामेरे ॥ वा० ॥ ११ ॥ ते सम्यक् दर्शननी सुता मुज पुत्रीने चीकेरे ॥ गमन करे आप गोपवि. ॥ नी र जिम चाले नीकेरे ॥ वा० ॥ १२ ॥ जे आपणी तनयाए. तज्या. वक्र अनें बहु वादीरे. ॥ जे वर्च कने शाक भरया. ते नर एहना स्वादीरे ॥ वा० ॥ १३॥ ते रांकमीने मुफ आगलें, शुं दाखो छो दीदारुरे. ॥ उदय रत्न कवी कहीं, वीसमी ढाल ए वारुरे. ॥ वा. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

वलि स्वामी शुं कहुं घणुं, जो पामो छो प्रभुनी भीत ॥
तो मुजने तिहां मोकलो, जिम जइने करुं जीत॥१॥
गले ज्ञाविने गेरसुं, तुम दुहितानो कारे दास ॥
ते संसारी जीवने, आणुं तुमारे पास ॥२॥
प्रीतम हु प्रीछुं अछुं, इम मूकीने लाज ॥
न घटे बोलवुं नारिने, विनयशूं जेहने काज ॥
आरत अलगी टालवा, जे जे कह्या जवाप ॥
महेर करी ते माहरो, अविनय करजो माप ॥४॥

॥ ढाल ॥ २१ ॥

॥ सुरवानी पास जिणंदावे, ए देशी ॥

सत्र सुख दायक लायक सुंदरि, तूं मुज प्राणाधार॥
आज मैं तुजने पारखी, मारा घरनुं तुं सणगार ॥ स
यांनी सुण सुखकंदावे, सुभगे मैं तुज वंदावे ॥ १॥
मिथ्या दर्शन मंत्री हसी तव, बोले एहवा बोल ॥
मिथ्ये महिला प्रधान छे, सहि राखवा घरनुं तोल ॥
स० ॥२॥ मोह राजाना राज्यमां, सघला राजे

अेहवी रीत ॥ मरद महेला पूठें चले, परि घल दाखंतो प्रीत ॥ स० ॥ ३ ॥ ते माटे अति सुंदर दाख्यो, सुंदरि ते अे भेद ॥ तिहां जाइने प्रिया तुमे, आंरिने नाखजो उछेद ॥ स० ॥ ४ ॥ इम सुणि सा अवला बोले, नाथ अे घटतुं नांहि ॥ पग होय जिहां तुमतणो, मारुं बल चाले त्यांहि ॥ सुज्ञानी साहेब मेरा वे ॥ ५ ॥ मोहन विण गजूं सूं माहरुं, ते माटे सुणो स्वामि ॥ तुमे पण तिहां आववुं, आपण शोभिश्युं अेक ठामि ॥ सु० ॥ ६ ॥ पासें रया अमें पेखशूं, तुं तिहां करजे फेलाव ॥ कलत्र सुतासूं संचर्यो, इम मंत्री ते करिय बनाव. सु० ॥ ७ ॥ मोह नृपें वली केमथी मेल्या, आपद व्यसनने लोभ ॥ लाभांतरायादिक लब्बो, जे जगने पमाडे क्षोभ ॥ सु ज्ञानी सुणो श्रोता वे, ॥ ८ ॥ उदय वडे अेक वीशमी ढालें, जगने करवा जेर. ॥ मोह सम को मोटो नहीं, जेहनी आण फरे चो फेर. सु० ॥ ९ ॥

जायाश्रें सुत जनमिश्रो, वैश्रमण धर्युं तस नाम ॥१॥
श्रनुक्रमें यौवन श्राविश्रो, करतां कला श्रभ्यास ॥
तव निज श्रवसर श्रोलखी, घन तृष्णाश्रें तास ॥२॥
श्रासंध्यो ऊलट भरें, घाढालिंगन देह. ॥
श्रभिलाष तव तसु ऊछल्यो, लागो तेहसुं नेह ॥३॥
तव सा प्रेरे तेहने, जो मुजसुं बहु प्यार ॥
तो घन काजें धाइने, विविध करी व्यापार. ॥ ४ ॥

॥ ढाल. ॥ २२ ॥

॥ विदलीनी देशीमां ढाल छे. ॥

वसन सोवन मणि केरा, व्यापार करो भलेरा हो॥ तृष्णा कहे तेहने ॥ कण कस्तुरी कपास, विणजो जिम पोंचें श्रास हो॥ तृष्णा कहे तेहने ॥ १ ॥ लो ह फोफलने गलो लाख, वोरो जिम फलें श्रभिलाप हो ॥ तृ. ॥ वाणोत्तर चलवो विदेशें, वाणिना करो वणिज विसेसे हो ॥ तृ. ॥२॥ भरी भामेंसुं गामी भुरे, देशावर जाश्रो दूरे हो॥ तृ. ॥ वलि वाहो ऊंटने पोठी, वंदरप्रतें घालो कोठी हो ॥ तृ. ॥३॥ मांगवी लिश्रो दाण बोलावी, लक्ष्मी जिम रहे

घर आवी हो ॥ तृ.॥ लिओ ग्राम नगर इजारे, था
ओ कोटी ध्वज सकरारे हो ॥ तृ. ॥ ४ ॥ करो खेती
ने पशु पाली ॥ जिम दरीद्र भरे उचालो हो. ॥
तृ॰ ॥ खणो खाणने धातुवाद ॥ अभ्यशो धरीने
अल्हाद हो. ॥ तृ॰ ॥ ५ ॥ रस विल प्रवेश अभ्या
सो. ॥ करी घरने भाडुत वासो हो. ॥ तृ० ॥
कारमा करीआणा करवा. ॥ सीखो कपट आ
दरवा हो ॥ तृ॰ ॥ ६ ॥ एहवा सुणिने उपदेश. ॥
उलसिओ तेह विसेस हो. ॥ तृष्णाए प्रेरयो. ॥ तव
तेहने कहे ते वारू.॥ उपदेश दीधो सुख कारू हो
॥ तृ. ॥ ७ ॥ एह पापे धननी राशे ॥ किम आवे
निज आवासे हो॥ तृ.॥इम कहीने विणज ते सघ
ला ॥ मांमया मेली मन अगला हो ॥ तृ.॥ ८ ॥
बावीसमी ढाल ए बोली ॥ खाते जो जो दिल
खोली हो. ॥ तृ०॥ उदय कहे आगम पाखे ॥ दुर्ग

घनस्थाने वइशो धाइने, वेत्रमण नागरमांय. ॥ १ ॥
तव तेहना प्रभावथी, काणो कोमी मात्र. ॥
लाभ न थाय हाटमा, तस्कर पामे खात्र. ॥ २ ॥
चिंतातुर मन चिंतवे, ते तेण प्रस्ताव. ॥
भाडुं भराए जेटलु, ॥ तेतो नमिले आव. ॥ ३ ॥
भाटक मात्र जो ऊपजे, तो वलि चिंते तेह. ॥
वाणोत्तर सुजे नहीं, वणज खोटो सहि एह ॥ ४ ॥
तसु लाभे वर खरचने, अरति करी अपार ॥
इम भोगोप भोगादिक बहु, विध विध धरे विचार ॥ ५ ॥
खोट आवे ते अहो खरी. ॥ मूलगि पूंजी मांहि. ॥
तो कोटि धज किम थाइशूं, एम चिंतवे त्यांहि ६ ॥

॥ ढाल ॥ २३ ॥

जोटणी नांदेशी.

धनने काजें हो ते धातो फिरे. ॥ न गणे रातने दीह ॥ तृष्णाएं वाह्यो आरति भरें, न गणे भूख तृष बेह ॥ ध० ॥ १ ॥ गरथनी करतां गवेषणा जिहां तिहां भमता हो जोर ॥ एक दिन पुरुष एक

भेटिश्रो, चंचल जांते ते चोर ॥ ध. ॥ २ ॥ वि
सोकावे ते वेश्रमणने, श्रेकांते तमी श्रासण. ॥ शि
र कंवने श्रवणादिकनां, जहवेर जमित पंच वणे॥
ध. ॥ ३ ॥ श्रंगित श्राकारें श्रोलख्या, चोरिना श्रेह
सुत्र ॥ धन तृष्णाश्रे तव धाइने, भेरयो सेवनो पुत्र.
ध. ॥ ४ ॥ होनारू जे होयशे, निर्वहि लेसूं तेह.
दूध पीतां मांग वागशे, तो वागे ससनेह. ध. ५ ॥
इम चिंती श्रलंकारते, श्रल्प श्रापिने मुद. ॥ ते
पासेथी लीधो तिणे, जो जो लोभना सुत. ध. ६ ॥
तस्कर ते गयो जेहवे, तेहवे राज चरें त्यांहि ॥ श्रा
वि वणिक ते बांधिश्रो, भूषण सहित उठांहि ॥ध०
॥ ७ ॥ लई गया लारिए हणी, विगोता जिहां
वशुधेश ॥ भाखे ते जइ भूपने, जन त्यां जुवे श्र
शेस ॥ ध० ॥ ८ ॥ प्रभुजी भूशण तुम तणा, लो
भे लीधा एण ॥ पछे वाइया बांधिने, इहां श्राण्यों ए
तेण ॥ ध० ॥ ९ नृप कहे निश्चे एहने हणो, तव
जनके महाजन ॥ मलीने मूकाविश्रो, श्रापीने वहु
धन ॥ ध ॥ १० ॥ धन पीपासा श्ररयो वली, पुन्मा
हाट प्रभुत ॥ मंमावी मन मोदसूं, उद्यम करे श्रद्ध

त ॥ ध० ॥ ११ ॥ लाभांतरायतणे उदे, लाभ न थाय लव लेश ॥ महा आपद पद पामिओ, पग पग पामे क्लेश ॥ ध० ॥ १२ ॥ प्रेर्यो प्रदेश चला ववा, धन तृष्णाएं ते धाय. ॥ तब तातें तेमने करी, अन्य सोंपी विवसाय. ॥ ध० ॥ १३ ॥ करियांणा बहु भांतिना, गामिए भरे गेल. ॥ चाल्यो तेह देशावर्मे, खेलवा नवो खेल. ॥ ध. ॥ १४ ॥ उदय रत्न कहे आतमा, तुं त्रेविशमी ढाल लालच मेलने लोभनी, जिम न पमे भवजाल. ॥ ध० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

महा अटविमा मारगे, भुलो पमचो ते साथ. ॥
तरसें खोलें तोयने, जलनी नमले जात. ॥ १ ॥
आशा तुटी आपनी, तव मिलित लोचन मुंढाय. ॥
जन सर्वे जाती तदे, एकत्र अचेतन थाय. ॥ २ ॥
तिणे समे त्यां आवी पमी, महा तरकरनी धाम ॥
सर्वस्व ते लुंटी गया, अटवी तेम्हि उजाम. ॥ ३ ॥

॥ ढाल. ॥ २४ ॥

॥ शालिभद्र मोह्यो शिवरमणी रसेंरे, एदेशी. ॥

भुवन भानु भाषे इम केवलीरे, चंद्रमौलि महाराय सावधान थईने सुणजे तु हवेरे, पातक जेम पलाय.॥ भु० ॥ १ ॥ कोइक कृपालु पंथी ते समेरे, किहां एकथी जल आणि. ॥ थोडूं सघला साथनेरे, पायुं परमारथ जाणि. ॥ भु० ॥ २ ॥ स्वस्थ थया तव तेणे पंथिएरे, जलाश्रय जणाव्यो तास.॥ तिहां जईने सहु जल पिये गयी रे, अंग पखाले उल्हास.॥ भु० ॥ ३ ॥ सज्ज थईने पंथसिरे सहुरे. आप तणी इच्छाएं.॥ संबल रहित तिहांथी संचर्यारे, जिहने पुरवे ज्यांए. ॥ भु० ॥४॥ वैश्रमण पण एके घामें जईरे, तरस्यो भुख्यो तरु छांहि. ॥ पम्यो पृथविएं पग पसारीनेरे. मूर्छित मारग मांहि. ॥ भु० ॥ ५॥ दीन देखिने दया ऊपनीरे, कोइकने तिणि ठाम. ॥ अन्नादिक ते आपे आणिनेरे, चेतन आव्युं ताम.॥ भु० ॥ ६ ॥ वलि आगल मारगें चालता रे, श्रांत थयो अत्यंत. ॥पहोरे पहोरे पण पग नवि ऊपमेरे,

कर कर लोंहि फरंत. ॥ भु० ॥ ७ ॥ रहो पर्मेने मुर्गाय वलीरे, वलि विशोचे विरंग.॥ विभव वालां विरह जुरतोरे, दीन थयो गति भंग ॥ भु० ॥ ८ ॥ गामो गामे भीख काजे भमेरे, तो पण न मले तेह ॥ अतराय पापी आवी आमो पमेरे, दुर्बल थई तिणें देह. ॥ भु० ॥ ९ ॥ भमतो भमतो इम दुःख देख तोरे, पहोतो वेलाकुर्ल कोइ. ॥ वाणोतर राख्यो वणिक सही किणेरे, काइक साधन थयो मोइ. ॥ भु० ॥ १० ॥ तृष्णाए प्रेर्यो तव मामे तिहारे, विष विधना व्यवसाय ॥ वित्तमी लापगमे लाधी तिणेरे, अेक श्लोक सुण्यो कोइ गाय. ॥ भु० ॥ ११ ॥

॥ यत ॥ ॥ दक्षु नेन समुद्रश्च, योनि पोषण मेवच. प्रसादो भु भुजाचैव सयोघ्न ति दरिद्रता ॥ १ ॥

उदय वदे चोवीसमीं ढाल मारे, पोत पुरी तव ते ह. ॥ पयोधि माहि तृष्णा प्रेरिओ रे, चाल्यो ध रि चूप अछेह. ॥ भु० ॥ १२ ॥

॥ दोहा. ॥

जलधिमा जाता थकां, घटा करी घन घोर. ॥

अंबर मंमल उन्हयो, चमाकि वीज चिहुं ओर. १

कल्पांत काल तणी परें, पवन वाया प्रतिकूल. ॥

उदधि तव तिहां ऊछल्यो, जल थर प्रगटया स्थूल.२

जल मोजाना जोरथी, नाव थया सत खंम. ॥

वैश्रमण तव पामियो, फलक तणो इक खंम. ॥३॥

चपल कलोलें जलचरें, आकुल थतो अपार. ॥

तरंग तणा सुपसायथी, पाम्यो जलधी पार. ॥ ४॥

॥ ढाल. ॥ २५ ॥

मालीकेरे बागमें दोयनारंग पकेलो, अहो दो, अदेशी॥ नाम पण निज देशनुं, न जणाए जे देशें लो, अहो न जणाए जे देशें लो. ॥ राजेसर सुणी रसरागीरें लो, स्वजननी न जमे वारता. ॥ पमयो तेह प्रदेशें लो.॥ अ० ॥ १ ॥ दुःख भर तिहां रहेतां थकां, रोगें तक सांधी लो. ॥ अ० ॥ दग्ध उपर फोकट परें, वेदना बहु वाधी लो. ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्वर शिर रोग सूला दिकें, महा रोगें पीमयो लो. ॥ अ० ॥ सुने देव कुलें सुए, भावटें बहु भीमयो लो. ॥ अ० रा० ॥३॥ वे तके हिंडे बेसतो, पमे प्रपाय लो. ॥ अ०॥ मव म

ढिऐं लोटतो फिरे, आक्रंदी सराय लो. ॥ अ०
रा. ॥ ४ ॥ भमतो रहे घर घरें, बोले दीन वाणी
लो. ॥ अ. ॥ पथ्य औषध आवी वली, पाए को
इन पाणी लो. ॥ अ. ॥ रा.॥ ५ ॥ इम दुःखें दिन
गालतां, केते एक कालें लो. ॥ अ. ॥ रोग रहित
ते थयो, तृष्णाएं ते तालें लो. ॥ अ. रा. ॥ ६ ॥
उदेरचो तव उद्यमे, लोभे करी लागे लो. ॥ अ. ॥
सपद कांइन संभवी, तोय पाछो न भागे लो. ॥
अ० रा. ॥ ७ ॥ किहां एक नृप लुंटी लिऐ, धूर्त
धुरत किहां रे लो. ॥ अ.॥ चोर किहारे चोरे व
ली, टहे अगनि कोठारे लो. ॥ अ. ॥ रा. ॥ ८॥
इम ते यतन करी बहु, नाना विध देसें लो. ॥अ.॥
विषम थले विचरे वली, वेठे विपद विशेषें लो. ॥
अ. रा. ॥ ९ ॥ व्रश्चक व्याल व्यंतरतणा, पराभव
सहितो लो. ॥ अ. ॥ धर खणतो धन लालचें, हीं
मे गाहि गहितो लो. ॥ अ. रा. ॥ १० ॥ अरहट
घटि जलोका परें, भरी ठलवातो लो. ॥ अ. ॥
इमते आपद अनुभवी, जिहा तिहा वजातो लो.॥
अ.॥ रा. ॥ ११ ॥ देश दारा धन स्वजन ने, वियो

गें वरिओ लो. ॥ अ. ॥ भु पीछे भमतो रहे, आ रतों आचोरतं लो. ॥ अ. रा, ॥ १२ ॥ तृष्णा ने जेरं करी, इम उदय ते बोले लो. ॥ अ. ॥ पं चवीसमी ढालें जुत, जिहां तिहां ते मोले लो. ॥ अ. रा. ॥ १३ ॥

॥ दोहा. ॥

इणि पर भमतां एकदा, सुणो बहु श्रोता लोक ॥
मनमांहे कोइक मुखें, सांभल्यो एक श्लोक ॥१ ॥

॥ यतः॥

॥ आर्यावृत्त. ॥

स्वजन धन भुवन यौवन, विनिता तत्वाप्यनित्य मिद मखिलं ॥ ज्ञात्वा पत्राण सहं, धर्म सरणं भ जत लोका ॥ १ ॥

॥ ढाल. ॥ २६ ॥

॥ काछिबानी देशी ॥

ए श्लोक सुणीने त्यांह, तव मनमांहें हो वाणिक ते

चिंतवे ॥ दुःख जे आगें जाय, काहियें तिहां रे हो ते सहु इम चिंतवे. ॥ १ ॥ धर्म न कीधो ध्याय, यतन करीनें हो ते जन्मांतरें ॥ धर्म विना जगमांहिं, प्राणी पामे हो आपद बहु परें. ॥ २ ॥ दुःखिआने ते माट, अेक धर्म विना हो सरण बीजुं नथी ॥ अनेक धरो उचाट, पण पुन्य पाखें हो सुख नलहियें रति ॥ ३ ॥ चिंते कुदृष्टि ताम, मिथ्या दर्शन हो केरी जे गेहनी ॥ अहो अवसर अभिराम, आजहूं पामी हो चिंता हुती जेहनी ॥ ४ ॥ वैराग्य नामें विख्यात, अम वेरीनो हो सेवक अे सही ॥ अे पात्रमांहिं सहसात, प्रग टिउं दीशे हो इहां संदेह नहीं ॥ ५ ॥ जो आव शे अेहनी केमि, वेरणी अमारी हो सम्यक् दर्शन सुता ॥ तो अमने नाखशे उखेमि, उद्यम सघलो हो अफल करे सर्वथा ॥ ६ ॥ इम चिंती उजमाल, धर्म बुद्धि हो नामे निज नंदनी ॥ ते पासें ततका ल, प्रेमे प्रेखो हो कुटुंब आनंदनी ॥ ७ ॥ तेह त णे सुपसाय, उत्सुक पण हो इम चिंत्यूं तिणे. ॥ नेहें निज घर जाय, धर्म करी शूं हो हवे आदर

घणे ॥ ८ ॥ कारण पुर्छ काम, सहेजें थाश्ये हो ते माटे जाउं घरें ॥ श्रेम आलाची ताम, भमतो भमतो हो गयो कोइ वंदरें ॥ ९ ॥ प्रवहण चढिने तेह, कोइक जननो हो रहो वतागरो ॥ निज पुरें पहोतो नेह, थलवटें थई हो अनुक्रमें पाधरो ॥ ॥ १ ॥ मात पिता पर लोक, पहोतां तेहनी हो दिशा ते देखिने ॥ तव तसु वाध्यो शोक' घर हा टादिक हो पम्यां तिहां पेखिने ॥ ११ ॥ विध विध करे विलाप, आरति पूरे हो आतम निंदतो पूरव भवनां पाप, उदय आव्यां हो इम कहि कं दतो ॥ १२ ॥ धर्म बुद्धि धरे मन, माविन्न केरां हो मृत कारज करे ॥ कहे कवि उदय रत्न, ठवी' शमी टार्ले हो कर्म गति नवि फरे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

श्रेवे समय मिलि श्रेकठा, चारित्र धर्मादीक, ॥
प्रेखो सदबोधनी प्रोळवी, कर्म परिणाम नजीक. १॥
तव ते जड़ कहे तेहने, अमने एक सहाय. ॥
आगे करहो ठे आपवो, मन मोर्जे महाराय. ॥२॥

कथन तेह कह्या पछी, अनंत अनंती वार. ॥
पुदगल परावर्त्या तिणें, तोहे न आव्यो पार. ॥३॥
आज लगें जुउ अमने, वातें पण ससनेह. ॥
महाराजा मिल्यो नथी, जीव संसारी तेह. ॥४ ॥
अंगिकरयुं जे उत्तमे, युगांतें पण तेह. ॥
अवश्य न थाए अन्यथा, कहो सामी सुं एह. ॥५॥

॥ ढाल. ॥ २७ ॥

आछेनें बनायो हो मेमतिया ठाकुर, ए देशी.
सदबोध मंत्रीने हो तव कहे कर्म नरेसरू, आंख ठलाली एम ॥ वात सविगतें हो आज लगे पण एहनी, तूं नथि लहेतो केम ॥ स० ॥ १ ॥ ताकी दीन तुम सामो हो आणुं छुं हुं तेहने, पण मुक बंधव प्राण ॥ फरिफरि ने पाछो हो वाले छे ते रांकने,जाणि प्रजाने प्रजानी हाण॥ स० २ घरने वि रोधी हो आखर जो ताणुं घणुं, तो वालां वेरी होय॥ मस्तके लेई ने हो में पण निश्चय एकलें, काज न थाए कोय ॥ स० ॥ ३ ॥ भव्य स्वभाव हो लोक स्थिति उद्यम वली, काल परिणति आदि. ॥ एहु

नी रजा विण हो काइं काज न नीपजे, पग पग मांमे एवाद. ॥ स० ॥ ४ ते माटे सहुसुं हो एकांत आलोचिने, समय लही तुम काज. ॥ निश्च यशुं करी हो बोल जे बोल्या मुखें, तेहनी छे श्रम ने लाज. ॥ स० ॥ ५ ॥ कथन में तुमने हो पहे ले जे कह्यो छे, ते जिहां लगि पिममां प्राण. ॥ वीसरी न जाए हो तिहां लगि वीशेविशा, समजो चतुर सुजाण. स० ॥ ६ ॥ सदबोध पयंपे हो संप्रति सुणि एं छिएं इसुं, धर्म बुद्धि ते पास. ॥ गई छे ते माटे हो आज पण श्रमने तुमे, शुं नहि मेलो तास स० ॥ ७ ॥ स्वभाव इणि नामें हो निज मंत्रिश्व रने करे, ताली लेइने ताम. ॥ ऊंचे स्वरें हसीने हो एहवी वाणी ऊचरे, नर पति कर्म परीणाम. ॥ स० ॥ ८ ॥ धर्म बुद्धिसा साची हो अहो जुओ पारखी, ए शुं बोल्यो सदबोध. ॥ पुण्य पाप बुद्धि हो जातें एहने जाणजो, सत्यशुं जेहने विरोध ॥ स० ॥ ९ ॥ नाम धरावे हो धूतारी जग में धूतवा एहनुं तो मुह अदीव. ॥ सम्यक् दर्शन नी हो सु ता ते बीजो छे, धर्म बुद्धि घरे पीव. ॥ स.॥१०॥

अमारी अे पखी हो जाणो उदय कारिणि, तमारी पखी विष कंद. ॥ समूलो उनमुले हो अेह तमारा वंसने, चालतो दुःखनो कंद ॥ स० ॥ ११ ॥ सहुने सु खकारी हो अमृतनी धारा जिशी. अलोकिक ठे ते अेक ॥ अम वंधु मंत्रीनी हो पुत्री अे सहु जीवने ॥ अरति उपाअे अनेक ॥ स० ॥ १२ ॥ अभिधान सरीखें हो सहिज न होवे सारिखा, विष जिम जलने जहेर ॥ कहेवाअे पण जहेरे हो जीवने जोख म ऊपजे, जलनी जीवाले लहेर ॥ १३ ॥ पान कहे वाअे हो कनकने नागर वेलना, जिम वहु नाणा जाति ॥ वृक्ष कहीजे हो वलि अंवने लींवने, पण जूजूई धात ॥ सा० ॥ १४ ॥ दधि दूध घृतादिक हो कांजी वहु विधि तेलने, रस कहेवाअे जेम ॥ वहेन कहेवाअे हो भगनीनी जिम सोकने, इणि परें जाणो तेम. ॥ सा० ॥ १५ ॥ नाम सरीखें हो स रिखा गुण नोहे कदा, जिम वहु विधना धान ॥ उदय पयंपे हो अेह सतावीशमी, ढालें सुणो ध रि कान ॥ १६ ॥

॥ दोहा. ॥

कांइ कहेवुं अमने नवि घटे, शत्रु मित्र समान. ॥
अधिके ओछे नवि घणुं, ए अम सहज निदान. ॥१॥
अम बंधुना मंत्रिनी, पुत्री ए परतिख.॥
अवगुण एहना अमने, कहेवा नघटे मुख. ॥ २ ॥
पण गुण अवगुण जेहनो, जेहवुं देखुं नेण ॥
नाहित अमे दाखुं तिश्यो, कुण शत्रु कुण सेण.॥३॥
तव स्वभाव कहे प्रभुजी सुणो, कह्यानुं श्युं काम.॥
आचरण सघला अे लहे, तेहना जे छे स्वाम. ॥४॥
शिर धुणी तव बोलिउं, राजा कर्म परिणाम.॥
अहो अे तें साचुं कह्युं, धूरत अे छल धाम. ॥५॥
अे तरुणी अम गरढा भणी, हसि नांखे छे हाम.॥
युक्ति सर्व जाणे अछे, पण मुदी रखो मुह फाम.॥६
कांन ढांकी करि तव कहि, सद बोध मंत्री सोय.॥
एहवुं प्रभु म उच्चरो, तुम नजरें सव होय. ॥ ७ ॥
हूं तो हवे जाउंअछुं, जे कोइ अम योग्य होय. ॥
कारज ते कहेजो प्रभु, अमने अवसर जोय. ॥८॥
तव ते भूपति कहे फिरि, समयें थाशे सर्व. ॥

आज जाउं घर आपणे, मूकी मननो गर्व. ॥९॥
वाणी जेह मुखें वदी, ते निफल न होसे नेट. ॥
अर्थ अमे ओ साधशुं, मननो सांसो मेट. ॥ १० ॥
इम सुणि मंत्री आविओ, नेहें निज आवास. ॥
वात सर्वे निज स्वामिने, आखे मन उल्हास.॥ ११ ॥

॥ ढाल. ॥ २८ ॥

॥ राम सीताने धीज करावेरे, ओदेशी. ॥
हवे माता पिता दुख भरिओरे. ॥ वैश्रमण वैपत वरिउ. ॥ कुदष्टि सुता आवारि उरे. ॥ तापस थवा मन करिउं. ॥ १ ॥ तिहां एक त्रिदंमिउं वरो वासेरे.॥ स्वयंभु नामे तसु पासे. ॥ ते वणिक आवे तिहां रोजरे. ॥ सुणवा तस आगम वोज. ॥ २ ॥ शांभ लतां तेहनी शिक्षारे. ॥ अंते लीधी तस दीक्षा. ॥ पूरण निज पंथमा लीनोरे. ॥ शौचादिकमां रहि लीनो. ॥ ३ ॥ अणगल जलमां उगांहिरे. ॥ नित्य नाहे नद्यादिक मांहे. ॥ भाजन कोपीन उप गरण रे. ॥ रोज पखाले वार त्रण. ॥ ४ ॥ गुरु पद पाम्यो काल केतेरे. ॥ उपदेश कुपथना देते. ॥

शुद्ध पंथने तेह उथापेरे. ॥ अन्यने निंदे आप थापे. ॥ ५ ॥ आतम सर्व देवमे मानेरे. ॥ उत्तम देवने अपमाने. ॥ कधर्म बुद्धि वश कीधोरे. ॥ मद मत्सरे घेरी लीधो. ॥ ६ ॥ मरी एकें द्रियादिक मा हें रे. ॥ ते, अनंत पुदगल अवगाहे ॥ पुन्नीना पराक्र म जाणी रे. ॥ कुदृष्टि थई सपटराणी. ॥ ७ ॥ मिथ्या दर्शन मोह राजारे. ॥ ते वात सुणी थया ताजा. ॥ आपणि उन्नति थाए जिहांरे. ॥ कुण मु दित न थाए तिहांरे. ॥ ८ ॥ वलि कर्मे तिहांथी निकाश्योरे. ॥ लेई मनुज तणी गति वाश्यो. ॥ ब्रह्मदत्त ब्राह्मण घर जायोरे. ॥ सोमदत्त नामे निपा यो. ॥ ९ ॥ तिहा पण कुदृष्टिएं केमेरे. ॥ करयो रिपुनो करवानो मेमो. ॥ पति पुत्रिसुं जई वलगीरे. ॥ अध क्षण नरहीं ते अलगी. ॥ १० ॥ दुष्ट दल ते हनी वपरालेरे. ॥ मोकल्युं वलि मोह भूपालें. ॥ कग्रह हिंसादिक बहुशुरे. ॥ पर दलने करे जे दोह लु. ॥ ११ ॥ तप तिहा पण तेह अपारोरे. ॥ करे यज्ञ ने वावे जवारा. ॥ अगनि कार्जे हणे छागरे. ॥ तसु मास भक्षण धरे राग. ॥ १२ ॥ हल लोहल

वण तिल दानरे. ॥ गौ भुरि कन्या उपान, ॥ दाशी तुरग सय्याने कपासरे. ॥ इत्यादिक थापे उल्हास.॥ ॥ १३ ॥ इम विजा पण दुःखदाइरे. ॥ धर्मने ठले पातक घाई. ॥ करावी ते पामंयो नरकेरे. ॥ मली . ने मोहने कटके. ॥ १४ ॥ ए अठावीशमी ढालरे.॥ शांभलजो थई उजमाल. ॥ ऊदय रत्न कहे उल्हासेरे. ॥ समता रखे मोहने पासें. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

वलि तिहांथी लई वासिओ, एकेंद्रियादिक मांहि ॥ परावर्त्या परवश पणे, अनंत पुदगल त्यांहि ॥१॥ बौधादिक मतमां धरी, धर्म ठले अघठेक. ॥ १ ॥ करावि इणि परे फेरव्यो, जीव ते वार अनेक.॥२॥

॥ ढाल ॥२९ ॥

रूमीरे रवारणी रमंता पद्मणीरे ओ देशी.

सौभाग्य पुर नामें नगरे वलीरे. मानव खेत्र मझार गृहपति सुंदर घर उपजाविनेरे. ते वरुण नामें कु मार ॥ १ ॥ इणि परें चिंते कर्म नरेसरूरे. में जीव

संसारी एह. ॥ चारित्र धर्म समीपे नवि धरयो रे, आज लगे दुःख गेह ॥ इ० ॥ २ ॥ नामे धर्मबुद्धि पण महा पापणी रे, जिहा लगि एहथी दूर ॥ न रहे तिहा लगि पहोत्ताशी नवि शकूरे, चारित्र धर्म हजूर ॥ इ० ॥ ३॥ सम्यक् दर्शननी सुता विनारे, अलगी एह न थाय. ॥ तेहने संगे ए लहेशे सही रे, शुद्ध दिशा सुख दाय. ॥ इ० ॥ ४ ॥ शुद्ध दिशाएं श्रुति दूति तणीरे, अरथी थाशे एह. ॥ सु गुरु सदागमथी ते पामशेरे, योग मेलु तिणि तेह. ॥ इ० ॥ ५ ॥ अभिप्राय कर्मनो एहवो ओलखो रे, बीनो मोह नरेंद्र ॥ कलुपानो मनसु राग केसरीरे, धून्यो द्वेष गजेंद्र. ॥ इ० ॥६॥ मनसु बीनो मोह नरेसरूरे, तव मत्री सामत. ॥मजलस मेलीने वेगा मिलीरे, आलोचे एकंत. ॥ इ० ॥७॥ तव कोट निज नाथने ते कहेरे, त्रिभुवन गजन स्वामि. ॥ तुमने पण सविता साहिवा रे, सहिजे तुमा रे नाम. ॥ इ० ॥ ८ ॥ दीर्घ निसासो मेहली ते कहेरे, जे तुमे कह्यो ते तत. ॥ चाबख सम पण महागी चाकरी रे, सुर पतिसा धूजत. ॥ इ० ॥ ९ ॥

मुज पायकने पण क्षोभ पमामवारे, समरथ नहिं कोय. ॥ पण एं कीजे मुजथर बीरडुं रे; बंधवे मेल्यो विगोय. ॥ इ० ॥ १० ॥ सेह कहे सुं नवु गयुं कि शुं रे, कर्म परिणामने संग. ॥ मोह वदे तव एक नवो इणेरे, उपजाव्यो छे रंग. ॥ इ० ॥ ११ ॥ स दगुरु संग सदा मनो सहि रे, ते जीव संसारीने जोग. ॥ मनसुं चाहे छे ए मेलवारे, एहवुं कहे छे लोग. ॥ इ० ॥ १२ ॥ अम कुलकंद समूलो बाळ वारे, जे दावानलनो काल. ॥ श्रुति दूतिका ते पासें प्रेखसेरे, ते सद्गुरु अम कुल काल. ॥ इ० ॥ ॥ १३ ॥ उदय वदे ओगणत्रीशमीरे, मारु रागें ढाल. ॥ भावी भवियण भावें शांभलोरे, आगें थाई उजमाल. ॥ इ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा. ॥

तव हुंकरो मुख मूकि नें, बोल्या सघला तेह. ॥
जो एवुं छे तो प्रभु, न करो चिंता ओह. ॥ १ ॥
अमे करीशुं ओहवुं, जिम ओ चिंता मूल. ॥
ते गुरु आवी तिहां नवि शके; कारण लहि प्रतिकूल.२

मोह राजा मन हरखिने, तव फिरि आवे तास. ॥
वलो वेगें तेहनुं करो, जिम सफल फल मुफ आस. ३
इम कही ते उतावला, पावक पहोता त्यांहि. ॥
पाप शुकन आलोचिने, प्रेरया मारग मांहि. ॥ ४ ॥
विविध विघन प्रेरया वली, श्रम आलस शिर रोग.॥
छत्र भंग नृप वियह, मृगी उपद्रव्य सोग. ॥ ५ ॥
गुरु आगमननो गोलिशुं, भीत्यादिकें मलि भंग. ॥
कीधो हुकम ते केलवी, सत्रूगो लहि संग. ॥ ६ ॥
कुदृष्टि सुता कथने करी, धर्म ठले बहु पाप. ॥
अकेंद्रियादिकमां ऊपनो, वरुण मरी ते आप.॥७॥

॥ ढाल. ॥ ३० ॥

सीरोहीरो शेलो हो दाडिम योव पुरो, ए देशी.

वली नत्र पेर्ने हो, विमल पुर धरिउं ॥ रमण सेठ घेरें हो, कर्म ते दुःख दरिउं ॥ १ ॥ यौवन पहोतो हो, सुमित्र नामें सोई. ॥ ए दिन कर्म हो, तव तिहां तक जोई. ॥ २ ॥ आव्या आचारज हो, मोज धरो मनमां ॥ गुण जलधी पूरे हो, बहु शाल क वनमां ॥ ३ ॥ संयम श्रीयें शोभित हो, पूरित

प्रसम भरें ॥ तपें तप तेजें हो, जे सत्य शौच धरे. ॥ ४ ॥ नय भ्रमरें भूषित हो, मुख पंकज जेहनु ॥ शीलें विलेपित हो, तनु राजे तेहनु. ॥५॥ सद गुण शृगारें हो, उंपे श्रग सदा ॥ चारित्र सी माथें हो, न चले जेह कदा. ॥ ६ ॥ समकितनें धरवा हो, थिर जे मेरु परें ॥ मति श्रुत ज्ञानी हो, मंमित मुनि करे ॥ ७ ॥ तव शुद्ध सिद्धातें हो, श्रोता तिहा रसिश्रा ॥ पूजन नृप श्रादें हो, सहु श्रावे धसिश्रा. ॥ ८ ॥ मन करयुं तिहा जावा हो, सु मित्रें पण जेहवे. ॥ ते लही मोह राजा हो, इम बोल्यो तेहवे. ॥ ९ ॥ रे रे अही राखो हो, वाकी गया वाजी भागी ॥ इम सुणिने ससभ्रम हो, क टया सहु जागी ॥ १० ॥ रोके तसु राखवा हो, पायकने प्रेरे ॥ मोह महीपति हो. इम बहु उठेरे. ११ ॥ श्रालस श्रलसावा हो, प्रेखे मूढ पणुं ॥ कु टवना रागने हो, चमावे सूर घणु ॥ १२ ॥ श्रव ज्ञा करि श्रागें हो, मद ठलवा माझी ॥ करया सज क्रोधादिक हो, प्रमाद करया राजी ॥ १३ ॥ श्रदत्त गुण श्रोप्यो हो, शोककरयो सूरो ॥ श्रज्ञा

न भयादिक हो मेरी दल पूरो ॥ १४ ॥ कपि यह हट्टनी हो, सबल सजी सेवा ॥ विषय वकारचा हो. वली व्यसन देवा ॥ १५ ॥ नाटक पेदणादिक हो, कोतुक कोमि सज्या.॥ निज स्वामीने कामे हो ॥ तिंण निज काम तज्या ॥ १६ ॥ विलली करि घाया हो, इत्यादिक सघला. ॥ वेगें तिहा जट ने हो, अनेक करी अर्गला. ॥ १७ ॥ केंण कोइक दिन हो, गुरु पासें जाता ॥ वलि अहि गरयो हो, विघन करी माता ॥ १८ ॥ ते गुरु पण अेक दिन हो, विहार करे तिहांथी. ॥ ते पण मरी पहुतो हो, आव्यो हुतो जिहांथी. ॥ १९ ॥ अेकेंद्रियादिक हो, माही तिम राख्यो. ॥ काल अनंतो हो, पहिले जिम भाख्यो. ॥ २० ॥ गोशमी ढालें हो, मोहना बल जेहवु. ॥ बल नथि केहनु हो, उदय वदे एहवु. ॥ २१ ॥

॥ दोहा. ॥

ते संसारी जीवने, अेम अनती वार. ॥
फेरा तेमज फेरव्या, अेकेंद्रियादि मझार. ॥ १ ॥

अवंति पुरि अवतारिउं, नगदत्तने गेह. ॥
सिंधु दत्त नामें त वली, कर्म परिणामे देह. ॥ ९॥
योवन भर जव आविओ, सुगुरु सदागम संग. ॥
तव कर्म जिम तिम करी, मेल्यो मन उछरंग.॥ ३॥

॥ ढाल. ॥३१ ॥

॥ रामचंद्रके बाग चंपो मोही रह्योरी, एदेशी. ॥
मोम लही तें वात, चिंता ससुद्रें पमयो री. ॥ कहे
मेली निज साथ, अहो अे ऊंचो चमयोरी ॥ १ ॥
तरकस खुटा तीर, अंत अतीनो न आव्यो. ॥
धरिअे केम करि धीर, फट अे अेहनो फाव्यो ॥२॥
ज्ञानावर्ण सामंत, तव तिहां अेम वदेरी. ॥
प्रभु तुम सुभट अनंत, अेक अेकथी अवधिरी.॥३॥
सागरथी सुणो स्वामि, अजवी अेक भरी री. ॥
नंदनी सुन्यता नामे. माहरी सज्ज करी री. ॥ ४ ॥
मोकलो तेहने पास, सुणजे अफल करी री. ॥
तव नृपें प्रेखी तास, चाली सा प्रेम भरी री.॥ ५ ॥
सिंधु दत्तना मनमांहि, जई तिणे वास कियो री. ॥
नव तेहने गुरें त्यांहि, इम उपदेश दियो री. ॥६॥

मिथ्या दर्शन तसु नारि, तेहनी सुताने तजीरी ॥
श्रुत जे सुणि नर नारी, शिव सुख तेह भजी री.७
गुण वखाण्या गेलि, सम्यक् दर्शन तनयाना. ॥
मोहने मेलो वेलि, अर्थी थाउं दयाना. ॥ ८ ॥
मोहनुं दल महा दुष्ट, पग पग सहुने पीसे. ॥
कोण पमासे कष्ट, भव संकटमां भीसे. ॥ ९ ॥
चारित्र धर्म पसाय, वलो तस सैन्य वलो री. ॥
सहिनें बोल सवाय, दुर्गति दूर टलो री. ॥ १० ॥
इम दीधो उपदेश, सिंधु दत्तने तेह सरे. ॥ पण
थयो अफल अशेष, प्रवल महा सून्यता पूरे॥ ११ ॥
पूछे तस परखद लोक, मारगमां घर जातां ॥ ति
हां कोई शांभल्यो श्लोक, ते कहे हुं नहि ज्ञाता
॥ १२ ॥ मित्रादिने उपरोध, गुरु कने तेह गयोरी॥
बीजे दिन पण प्रतिबोध, सून्यताएं न लयो री १३
चालणी नीरने न्याय, तेहनें गुरुनुं कह्युं री. ॥ मन
मां न रह्युं कांई, चित्त सून्यताएं ग्रह्युं री. ॥ १४ ॥
तव गुरु गया अन्य देश, कुदृष्टि कुधर्मे वुधें री ॥
सिंधु दत्त वाड्यो विशेष, कुमत कदा ग्रह वधेरी.
॥ १५ ॥ जव रही सून्यता दूर, तव ते रंग भरें

री ॥ कह्यो कुमतिनुं भूर, समझी चित्त धरे री.॥१६॥ एम करे पाप उपाय, एकेंद्रियादिक मांहि॥ उपजी वेठ अपाय, काल अनंतो त्यांहि ॥ १७ ॥ एक त्रीशमी ढाल; उदय रत्न कही आखि. ॥ वलिरा जानुं रसाल, चारित्र इहां छे साखी. ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

हृदयांतर हवे अन्यदा, चिंते कर्म परिणाम. ॥ अहो ए किमे वापमो, न लहे धर्म सु ठाम. ॥ १ ॥

॥ ढाल. ॥ ३२ ॥

॥ झरमर वरशे मेह जरूखे वीजली हो. ऐदेश. ॥

बंधव मुझ बलवान, जोरावर जालमी हो लाल. ॥ जोरावर जालमी॥उद्धत एहनो साथ, प्रबल महा पराक्रमी हो लाल ॥ प्रबल महा पराक्रमी. ॥१॥ चारित्र धर्म नरींद्रनुं, जइ जुए व्रज्यु हो लाल. ॥ ज० ॥ ए संसारी जीवनुं, एहवुं नहीं गजुं हो लाल. ॥ ए० ॥ २॥ तुठ थाए बल तास; कला करुं तेह वी हो लाल. ॥ क० ॥ पण पोतानी पांख; पक्षे

वे ठेमथी हो लाल. ॥ प० ॥ ३ ॥ विषम ए दो न्याय, हुए शुं जूरतां हो लाल. ॥ हु० ॥ जे थाए ते थाउ, प्रतिज्ञा पुरतां हो लाल॥प्र० ॥ ४ ॥ वम वानल वारिधि जेम, दुखें पण निर्वहे हो लाल.॥ दु० ॥ शशक काजे ससि जेम, कलंक पाले सहे हो लाल. ॥ क० ॥ ५ ॥ उपकार करतां आप, गुणे कृय नवि गणे हो लाल. ॥ गु० ॥ जिम देह दजामी दीप, दिशा तमने हणे हो लाल. ॥ दि० ॥ ६ ॥ धर्मादिक सवदां मुफ, जो कृय वांबे सदा हो लाल. ॥ जो० ॥ तो पण करुं उपकार, एहनुं जाणो मुदा हो लाल. ॥ ए० ॥ ७ ॥

यतः

उपकारिणी कतम रसेवा, सदयत्वं यदि तत्र कोति रेकः ॥ अहित सहसावलम्बे, सघृणं यस्य मनः समास धुर्यः ॥ १ ॥
अपास लक्ष्मी हरणोठवैरतां, माचिंतयि त्वाचतदद्रि मर्दनं. ॥ ददीनिवा संहरये महा र्णयो, विमरसराधि रवियां हिवृत्तय. ॥ २ ॥

वसी एक ज्ञानी वात, कर्ण मांहें कही हो लाल. क. ॥ १३ ॥ ए रवमर्गे अरिनो वृंद, कहुं तिम मा रजे हो लाल ॥ क. ॥ सीखारूण मनमांहि, भली परें धारजें हो लाल. ॥ भ. ॥ १४ ॥ मोहनी सीतेरमो भाग, कांइक ऊणो सही हो लाल. ॥ कां. ॥ मेवी उगन्योतेर भाग, अधिक केतो लही हो लाल. ॥ अ॰ ॥ १५ ॥ ज्ञानावर्णादिक चार, अ रीनो त्रीशमो हो लाल. ॥ अ॰ ॥ नाम नें गोत्रनो भाग, तजीने वोशमो हो लाल. ॥ त॰ ॥ १६ ॥ ओगणत्रीशमी ओगणत्रीश, कांइक अधिका वधी हो लाल. ॥ कां॰ ॥ हणजे तूं हुसियार, ए पम्मगे मन रवी हो लाल. ए॰ ॥ ए साते थाशे क्षीण, कटक तव एहनु हो लाल. ॥ क॰ ॥ मुह भंगथाशे विशेष, गजुं शुं तेहनुं हो लाल. ॥ ग॰ ॥ १८ ॥ तव निर्भय पणे महमात्य, सम्यग् दर्शन तणुं हो लाल. ॥ स॰ ॥ देखीस तूं सहि द्वार, जे सुखदाई घणुं. ॥ जे॰ ॥ १९ ॥ वत्रीशमी ए ढाल बोली बहु भेदनी हो लाल. ॥ बो॰ ॥ उदय रत्न कहे एम, अरि वछेदनी हो लाल. ॥ अ॰॥ २० ॥

॥ दोहा. ॥

तिहां राग द्वेष रूपें अछे, द्वारे सजम कपाट. ॥
ते ऊघाम्यवानो पछे, देखामीशुं घाट. ॥ १ ॥
हमणा में ए जिम कह्यो, तिम तुं करजे तंत. ॥
तव तिणे जिम आचर्युं, अरिनो लेवा अंत. ॥२॥
सम्यक् दर्शन मंत्रिनुं, जब इणे दिठुं द्वार. ॥
तव कर्म सदगुरु तणो, योग मेल्यो तिणिवार. ॥३॥
सहायनी सुधी दक्षता शुन्यसा जिणे पलाय. ॥
सुगुरु सदागम संगते, कर्म आण्यो साय. ॥ ४ ॥

॥ ढाल. ॥ २३ ॥

॥ आख्याननी देशी, रामगिरि रागें चाल. ॥

मोह राजा मूर्छा लीनजी, ज्ञानावर्ण सामंत दीन जी. ॥ नाम गोत्र शोकाधीनजी. ॥ रूए राग केसरं थई बलहीन जी. ॥ बल हीन सवलुं सैन्य देखी मिथ्या दर्शन नाम. ॥ मंत्री स्वर तव थयो ऊभो धरी हियामा हाम. ॥ अवस्था सहु निज साथनी अवलोकी अमरख भर्यो. ॥ अश्रद्धान नामे मह

दुष्ट, चूर्ण ग्रही वेगें परवरयो. ॥ १ ॥ पहोतो जई सीघ्रे ते नंदन पासेजी, सुगुरु सदागम तव तिहां भासे जी. ॥ ते नंदन आगे आलस ठामी जी. ॥ मोह मिथ्या दर्शनना मामी जी. ॥ मांमी कह्या मोह साथना अवगुण थकेक. ॥ तव धर्म नृपना पक्षना पण, गुण कह्या अनेक ॥ धर्मि सुर शिव हुए संपद, पापी नरकादिक लहो ॥ तव दक्षता प्र भावथी, ते साचुं सघलु सद्दहो. ॥ २ ॥ तव मि थ्या दर्शने निज कामेंजी ॥ दुष्ट चूरणते अश्रधा नामेजी ॥ हेला तसु दीधुं हिमत योगेंजी ॥ तव ते चेती तास प्रयोगें जी ॥ तिण प्रयोगे मति पा लकी, चिंते ते नंदन ताम ॥ कुण कर्म ने कुण कु गति ने सुर धाम ॥ किणे कांई दीठु नहीं ए, आ ल जिम तिम ऊचरे ॥ फोगट माटे फद मामी, पेट भराए इम करे ॥ ३ ॥ समीप वार्ति निश नि श एमजी ॥ ताली लेइने कहे धरि प्रेमजी ॥ अहो च रचा ए चितनी उपाइजी ॥ धरिजे शु कहेछे दृढ थाई जी ॥ दृढ थई अहो धर्मनी ए. करी चर्चा फो क ॥ प्रत्यक्ष ते प्रमाणियें, किणे दीठो छे परलोक

तिहांरे कर्म राजा कोपिओ, मोहनी वाधी मानता तेहना शुभट सवला सज थया, परिपूर्ण पहेला जिम हता ॥ ४ ॥ सम्यक् दर्शन महा मंत्रीने जी. ॥ घरे जइने ते प्राणीने जी ॥ गले ग्रहीने कीधो आगेजी ॥ मोहने साथे क्रोध अथागेजी. ॥ क्रोध अथागे तेहने, तव करावी महा पाप. अेकेंद्रियादिक माहि धरीओ, जोजो मोहनो व्याप. ॥ वलि नर्क तिर्यच मनुष्य माहे, फेरव्यो ते फरि फरी, ॥ वार अनंती विगती तेहनी, ज्ञानी विण कुण लहे खरी ॥ ५ ॥ पूरव रितें खमग देखामी जी. ॥ मोहादिकने पातला पामी जी. ॥ सम्यक् दर्शन मंत्री द्वारे जी. ॥ वार अनंती इणि परकारें जी. ॥ वार अनंती गयो पण तिहां पाम्यो नही प्रवेश. ॥ रोग विषय रस क्रोध योगे अफल करचो उपदेश. ॥ फरी मोहादिकें सज्ज थई, एकेंद्रियादिकमां धरचो, ॥ उदय रत्न कहे वार अनंती नेंनीशमी ढालें फरयो. ॥ ६ ॥

॥ दोहा. ॥

मलय पुर नामे नगर, मानव क्षेत्र मझार. ॥

इंद्र नाम अवनी पती, राज्य करे ते वार. ॥ १ ॥
विजया राणी तेहने तेहनी कुंखे तास. ॥
अंगज पणे अवतारीओ, कर्म परिणामे खास.॥२॥
विश्वसेन वारू तिहां, निरुपम दीधुं नाम. ॥
अनुकमी योवन आविओ, सकल कला गुण धाम३
अशोक सुंदर उद्यानमां, एक दिन रमवा काम. ॥
परिकर पुरे पर वरयो, राज कुमर ते जाम. ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ३४ ॥

फरमर फरमर हो सेला मारु वरशे लो. ए देशी. ॥
तव कर्मे हो सु गुरु सदागम योग, तिहां विश्वसेनने वनमां मेलिओ. ॥ तेहने दर्शन हो उलस्युं वीर्य वशिष्ट तिणे शु विशेषे मोहने अवहेलिओ.॥१॥
ते पमगे हो दिक शत्रुनांतन पूर्वेथी अधिक ठेदी प्रेमने भरे. ॥ प्रणमीने हो सु गुरु सदागम पास, कर जोमी बेठो सपरकरे. ॥ २ ॥ सदागम हो जाणिने शुगुरे तास, श्रुति संगम कियो तव साकहि. ॥
विस्व सेनने हो श्रवणे लागो विरतंत. सुणतां जेहथी ज्ञान दशा सही. ॥ ३ भमाम्यो हो भव सागर

माहे भूरि. भद्र भोला तुंने परे परे भोलवी.॥प्रौढ पापी छे हो मोह राजाने प्रधाने, मिथ्या दर्शने राख्यो ओलवी ॥ ४ ॥ गेहिनी सगे हो मेरवी निज नंदी नी सोय, धर्म बुद्धि नाम तेहनुं जूठू धरी, महा पापणी हो त्रिभुवने भमती तेह, सहु प्राणीने घेरे वश करी. ॥ ५ ॥ धर्मने ठले हो करावी पाप अघोर पामें नरक गती सहु प्राणीने, मिथ्या दर्शन हो तात कुदृष्टी मात, मन तेहना रीझवे हित आणिने ॥ ६ ॥ मिथ्या दर्शन हो कुदृष्टि जे करे करतुक, श्या श्यां मामो ते कहू तुझ आगले ॥ रागादिक हो दोष रहित जे देव, अदेवपणुं थापे तेहमा ठले ॥ ७ ॥ निस्पृहादिक हो गुणे जे राजे गुरुराज, अगुरु बुद्धी तेहने विषे धरे ॥ दयादिक हो, सहित जे धर्म सदाय, ते धर्मना द्वेषी सहु जीवने करे ॥ ॥ ८ ॥ कुदेव कुगुरु हो कुधर्म सुं करो तल्लीन, विपर्ययपणु उपजावी बहू परे ॥ आचरावी हो प्राणीने पाप अनेक, दुरते दुःख दाखे सहुने शिरे ९ तुझने पण हो मोहादिकें मली जोर, काल अनंतो कष्ट दधा घणा. ॥ सकुटंब हो मिथ्या दर्शन सु

विशेष, महा दुःख दीधां नवि राखी मणा ॥ १०
तेहनी नारी हो पुत्रीए पीमयों जेह, सहस्र जीभे
जो विवरी ने कहे ॥ तो पण तेह नो हो पार न
पामे कोय, उदय चोत्रीशमी ढाले इम कहे.॥११॥

॥ दोहा. ॥

श्रुति भाषित इम शांभली, भय पामी ते भूर॥
गद गद स्वर गुरुने कहे, पद प्रणमी हित पूर. १
आज लगें प्रभु ए सर्वे, हूं नवि समज्यो काइ. ॥
आचरणे अज्ञानने, आतम मेल्यो ठाइ. ॥ २ ॥
एहवा मुफ असरण भणि॰ वीरियें आणतां वाज. ॥
सरण होशे प्रभु तेहनु. उपदेशो ते आज ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ३५ ॥

अणसण तीरे विरह अनाहक दीधुं अे देशी.
गुरु कथने फरी तेहनेरे. श्रुति समजावे विशेष. ॥ चार
अनंती में तुनेरे. ए दीधो छे उपदेश. ॥ गु॰ ॥ १ ॥
किहांएक शून्यताने ढलेरे, अश्रद्धान योगे क्यांहि.॥
मद मोह द्वेष वसे किहांरे, सठ गुणने महिमांहि.॥

गु. ॥ २ ॥ कुदृष्टि श्रुता प्रसंगथीरे, जे में कह्यो ते छेक. ॥ आतम हित अण वांछतेरे, तें सफल करयुं अनेक. ॥ गु० ॥ ३ ॥ हित उपदेश जे कहुं हवेरे ते तुं सुण सावधान. ॥ उपयोग सुं तव तें सुणेरे, कर जोमी धरी कान. ॥ गु० ॥ ४ ॥ सो कहि सु गुण सुधारशेरे, नरिश्रो सागर रूप. ॥ चारित्र धर्म छे भुपतिरे, जस राजधानी अनूप. ॥ गु० ॥ ५ ॥ सम्यक् दर्शन मंत्री भलोरे, सदागम सोदर सार. ॥ सदबोध बंधू जेहने वमोरे, सर्वे जीवनो हितकार. ॥ गु० ॥ ६ ॥ पीपल पान तणी परेरे, मोह राजानुं सैन्य,धुजे जेहना नामथीरे, पामे अवस्था दैन.गु.७ परे परे पीमयो घणुरे, सवधू सुता समेत. ॥ मिथ्या दर्शनने जिणेरे, रंगेशुं रण खेत. ॥ गु० ॥ ८ ॥ पाइयो धर्म प्रसादनेरे, मोक्ष तरुनु मूल. ॥ धरवा गुण रूपी वगेरे, पाणीस्वर जे महा स्थूल. ॥ गु० ॥ ९ ॥ सुख स्मृति विपद ते नहींरे, जे तुंवो न आपे ऐह. ॥ सम्यक् आश्रित सत्त्वनेरे, पहोंचामे भव छेह. ॥ गु० ॥ १० ॥ तनुजा छे एक तेहने रे, सकल सौभाग्य सदन. ॥ धर्म बुद्धि सहि तेहनुं

रे, नाम छे गुण निपन्न. ॥ गु० ॥ ११ ॥ जंतु जे एहने भजेरे, निविम धरीने नेह. ॥ सम्यक् दर्शन मंत्रीनुरे, दर्शन पामे तेह. ॥ गु० ॥ १२ ॥ दिगंजे दुरगति हरेरे, सरणे राखे सदीव. ॥ मोहादि त्रास पामे मनेरे, जेहने नामे अतीव. ॥ गु० ॥ १३ ॥ तस दुहिता न लहो जिणेरे, ते दर्शन लहे न तास.॥ सत्व ते सरण विना सहीरे, पग पग पामे त्रास. ॥ गु० ॥ १४ ॥ जो गरजू होय तुं तेहनोरे, तो सा मेलुं तुझ. ॥ जिम भागे भव यातनारे, मननी मटे अलुझ. ॥ गु० ॥ १५ ॥ पांत्रीशमी ढाल एकहीरे, जे मोहनीमां जे जाति. ॥ शांभलजो सा चे मनेरे, उदय वदे इणि भाति. ॥ ग० ॥ १६ ॥

अवगुण फारि तिणे कचरचा, कुधर्म बुद्धिना कामि रे
सुद्ध धर्म सुधी परें, तां लगि कह्यो अविरुद्ध. ॥
आदरवानी एहने, जां लगि उपनी बुद्धि. ॥ ४ ॥

॥ ढाल. ॥ ३६ ॥

॥ लेख आपीने कहावे ए देशी. ॥

तव मगन थईने तेह ॥ सदगुरुने कहे सस्नेह ॥
भगवन तुम श्रुति सुपसाए, धर्म बुद्धि हूं पाम्यो
उछाहि ॥ १ ॥ चित्तमां हवे चाहूं करवा ॥ तुम
भाखित धर्मनी सेवा॥ कुदृष्टि कुधर्म बुद्धिनो॥ संगन करुं
अन्य लिंगीनो ॥ भाष्यो करि तेणे सुपसाय ॥ शुद्ध
धर्म विधान उपाय ॥ तव गुरु कहे ताहरी ए थि
रता ॥ थई अमने उछाहनी करता. ॥ ३ ॥ श्रोता
श्रुत अर्थी लाधे ॥ वक्तानुं महा बल वाधे ॥ शुद्ध
धर्म विधान कहेवाने ॥ अमे पण थया एक ताने ॥
॥ ४ ॥ शुद्ध धर्मनो जे थाय अर्थी ॥ पहेली पर
हो रहे ते परथी ॥ मन वचन कायानी शुद्धे ॥
निर्भय नेहे एक बुद्धे ॥ ५ ॥ सम्यक् दर्शन विण
स्वामी ॥ अन्यने न करे शिर नामी ॥ मनसुं हित

राखे बहुलं ॥ दिल किहांरें न करे मांहिलुं ॥ ६ ॥
सम्यक् आराधो एह ॥चमता सुख आपे अछेह.॥तव
चिंते.राज कुमार॥आणी हृदयमां हर्ष अपार॥७॥अहो
ए सम्यक दर्शनकेरो ॥ प्रभाव दिशे छे भलेरो॥ नाम
पण अति सुंदर जेहनुं ॥ केहवे दर्शन देखोस तेहनुं
॥ ८ ॥ अंतरंग आलोची एम ॥ मनमां धरी ते प्रे
म ॥ तव अवसर ओलखी तास ॥ राजा कर्म परि
णामें खास ॥ ९ ॥ शुद्धता परिणाम स्वरूप ॥ अ
पर्व कर्ण नामें अनूप ॥ दृढ तीक्ष्ण कठिन कुठार
एक आप्यो तेहने उदार ॥ १० ॥ कानमा वलि
कही एक वात ॥ तव वल्लस्युं वीर्य विख्यात ॥
युगते सुं यथोक्त प्रकारें ॥ पाले जई तेह कुठारे.
॥ ११ ॥ निबिड राग अने बीजो द्वेष ॥ परिणति
रूप लहो सवि शेस ॥ ग्रंथी नाम कमाडनी जोडी
ततखिण ते नाखी त्रोडी ॥ १२ ॥ मोहादिक शत्रू
ने मथतो ॥ उत्तम पंथने अनुसरतो ॥ अंतःकरण
नामे सुविचार ॥ महा मात्य प्रसाद उदार ॥ १३॥
उदय रत्न वदे एम वाणि ॥ त्रत्रीशमी ढालें जाणो॥
जिनवाणी जे सद्दहिसे ॥ लाभ ते अपूर्व लहिसे. १४

॥ दोहा ॥

प्रतिज्ञा पूरी थई, तव हरखो कर्म परिणाम ॥
अति विशुद्ध अध्यवसायमें, आपे एहने ते ठाम ॥
अनिवृत्तिकरणनामे इसी, वज्रदंम प्रचंम ॥
ते पामी तस उल्लस्युं, अभिनव वीर्य अखंम ॥
द्वेष गजेंद्र मोह राजनो, सुत तेहना सुत दोय ॥
क्रोध मान नामें लहो, अनंतानुबंधी सोय ॥ २
तथा बीजो सुत मोहनो, राग केसरी पुष्ट ॥
माया तेहनी नंदनी, अनंतानुबंधनि दुष्ट ॥ ४ ।
सुत तेहनो वलि जाणमी अनंतानुबंधी लोभ ॥
मिथ्या दर्शन मंत्रीश ते, जे मोह घरनो मोभ ॥
ए पांचे अति आकरा, ते दंम हण्या पूव ॥
मेलो नहि तेहनो किमे, ऊभा थई ऊव. ॥ ६
तिम फेरी चूरया तिणे, जीवित दे गत सान ॥
महा अटविमां जई पमया, मत्ता गत तजि मान ॥

रे. ॥ अंतः करण नामे तव मोहोलें, राज कुमर ते आयो के दर्शन देखीने. ॥ सम्यक दर्शननुं सार, मोह्यो मुख पेखिने. ॥ १ ॥ तिहां उपसम समकित रूप धारी, सम्यक् दर्शन मंत्रीने रे, ॥ देखंता दिल उलस्युं तेहनुं, मृग जिम सुणि तंत्रीके. ॥ द० ॥ ॥ २ ॥ पुष्करावर्त नामे धन योगे, जिम तरु दव नो दाधोरे. ॥ नव पल्लव थाए तिम तेणे, हर्ष अपूर्व लाधोके. ॥ द० ॥ ३ ॥ जिम पंथीसर देखी रीझे, ग्रीष्म ऋतु मरु देशोरे. ॥ दुर्जन वचने दाधो जिम साधु, सुवचने सींचों विशेषेके. ॥ द० ॥ ४ ॥ जतम दरिद्री जिम धन धारा, देखीने दिल हींसेरे, हिमें बाल्या जिम अंबुज विकसे, वारु वसंत जगीसें के ॥ द० ॥ ५ ॥ जेम विरही वलभने योगें, मेघागमे जिम मोरारे. ॥ मालती लही जिम मधुकर माल्हे, चंदने देखि चकोरा के. ॥ द० ॥ ६ ॥ मोहादिक वेरिएं मलिने, काल अनादि अनंतरे. ॥ दुःख दावानल दझव्यो ते प्राणी, एहवो तप्त अत्यंत के ॥ द० ॥ ७ ॥ सुधारस पुर समो महा शीतल देखीतास दिदाररे. ॥ तिमविस्वसेननो मन उल्हासि

थी, आनंद पाम्यो अपार के. ॥ द० ॥ ८ ॥ तव गुरु राज कहे फिरि तेहने, विगतेंसू विस्तारिरे.॥ व ली वली सीखामण वारू, हेजेसूं हितकारीके.॥ द०, ॥ ९ सामग्रीसमी ढाले सुणो श्रोता, उदय रत्न इम बोलेरे. ॥ मुक्ति तो तेहने छे मुह आगें, जे दर्शन थी नवि मोले के. ॥ द० ॥ १० ।

॥ दोहा॥

कह्यो छे जो पुरवे, तो पण दृढवा काम. ॥ सूरिवर कहे नृप सुत सुणो, एक चित्तें अभिराम॥१॥

। ढाल. ॥ ३८ ॥

॥ हमीरांनी देशी ॥

रखे राचो कोई अन्यने, जीव सलामती सीम कुमरजी ॥ आण एहनी आराधजो, निश्चयसूं धरि सीम. ॥ कु० ॥ १ ॥ सूर पण न सके चालवी, दृढ तिम धरजो धीर ॥ कु० ॥ प्राणांते पण छोडियें व्रत नवि खंडियें वीर ॥ कु० ॥ २ ॥ संका कंपा विगंछावली, पर पाखंमी प्रसंग ॥ कु० ॥ प्रसंसा प

र धर्मनी, रखे करो मन रंग ॥ कु. ॥ ३ ॥ पिम
प्रदान प्रपादिक, एहवा अनेक प्रकार ॥ कु० ॥
समकितने ते सर्वथा, दूषणना देनार. ॥ कु. ४ ॥
आतमहित वंछक नरे, समकित राखवुं शुद्ध ॥ कु०॥
थोडुं पण जो मेलुं करे, तो मांमे मोहादिक युद्ध
॥ कु० ॥ ५ ॥ पापी ते सहु बलिपमे, तव समरी
पूरव वीर. ॥ कु. ॥ कोपे चमयो कालो गले, लई
जाए निज घेर ॥ कु० ॥ ६ ॥ विमंबी विविध परें
वली, निर्दय तेह निठोर. ॥ कु० ॥ ते माटे तूं ए
हनुं, जतन करजे जोर ॥ कु. ॥ ७ ॥ किहारे जो
ते पामसे, थोमो पण अवकाश. ॥ कु. ॥ तो बाधो
गढ भेलसे, रखे करो विसवास. ॥ कु. ॥ ८ ॥
सम्यक् दर्शनने सदा, आराधजे इक चित्त ॥ कु. ॥
पतिव्रता नारी परें, मेली मननी भ्रांति ॥ कु. ॥ ९
चारित्र धर्म राजानने, योग्य जाणि गुण गेह. कु. ॥
देखामशे दिन केटले, भक्त वत्सल प्रभु तेह. कु.
॥ १० तनुजा बे छे तेहनी, अंगथी पण नहि अ
लगी ॥ कु. ॥ पर्म वल्लभ पूजित जगें, शीलशुं
रही जे विलगी कु. ॥ ११ ॥ साम्राज्य संपद

दायिनी, प्रवर लक्षणोपेत. ॥ कु० ॥ सुख खाणी सुभग घणुं, सकल सोहागनुं खेत ॥ कु० ॥ १२ ॥ सर्वस्व गुणनी ओरमी, देश विरति एक दिव्य, कु० सर्व विरति बीजी सही, नामे उतम तेरे सेव्य. ॥ कु० ॥ १३ ॥ एक मने आराधतां, चक्री चारित्र धर्म. ॥ कु० ॥ ते पुत्री तुने परणावशे शाश्वत जे छे सर्म. ॥ कु० ॥ १४ ॥ तरु आरनी धारा जिसुं, छे आराधन तास. ॥ कु० ॥ सुजाणने सुखनुं मुल छे, अजाणने छे दुःख रास. ॥ कु० ॥ १५ ॥ त्रिविध तेहने सेवतो, पामीश तुं सुख पूर. ॥ कु० क्रम क्रम चमतो पगथिए, रहे तो तास हजूर. कु. १६ ॥ परम प्रभुता पद पछे, मुक्ति पुरीनुं राज्य. कु.॥ पामीश परमेश्वरपणुं, जिहां वैरी न आणे वाज॥ कु. ॥ १७ ॥ अमत्रीशमी ए ढालमां, उदय रत्न कहे एम. ॥ कु. ॥ सुखिया तो तेहज सही, जे हने संयमसुं प्रेम. ॥ कु० ॥ १८ ॥

सम्यक् दर्शन मंत्रिनो, सेवक थई तिणिवार ॥
नेहें शुगुरुने नमी, पोतो पोताने गेह.
कुमर ते सपरे करे, लाहो अपूरव लेह. ॥ २०
सुगुरु वचन संभारतो, सम्यक् दर्शन सेव.
सम्यक् ते सूधा करे, नवि नेहे नित मेव. ॥२
कर्म राजा तव चिंतवे, अहो प्रतिज्ञा प्राहि. ॥
पूरी में पामी हवे चिंता न रही कांहि ॥ २२
बंधव मुफ वहु कोपशे, जो आगे तो पण सत्य
अर्च पुदगल वपहरी, एहने नाहिं भव स्थित्य २३
प्रौढ सहाय प्रभावथी, निवृत्ति पुरियें मेंट. ॥
आखर ए सहि पोहशे, खवी मोह आखेट. ॥

॥ ढाल ॥३९॥

॥ विरागी थयो, ए देशी. ॥

अनुक्रमी ते राजा थयो, जनके जातां पर लोक. ॥
भुमिका तेहने भालवीरे, सुंप्यो सघलो लोकोरे. १ ॥
समकित सांचवे, पाले राज्य पडूरोरे. ॥ न्यायशूं
नीतीशुं, दुर्जनने करे दूरोरे. ॥ स० ॥ २ ॥ निरानं
द हवे एकदारे, अमर स्वर हित अत्यंत. ॥ पक्ष

पोतानो पेखीनेरे, कोप्यो राग केसरी चिंदयोरे. ॥ स० ॥ ३ ॥ दृष्टि राग रूपें थईरे, वमो सुत मोह नो ते वीर. पिताने प्रणमी संचरयोरे, पहो तो विश्वसेनने तोरोरे. ॥ स० ॥ ४ ॥ छिद्र जुश्रे छल कारणेरे, निशि दिन रहे तिजोक पण. लाग नपामे ते किशोरे, थापवा निज मत वंकोरे. ॥ स० ॥ ५ पुर्व परचित्त एकदारे, तव एक तापस त्यांहि.॥ श्राव्यो पुर उद्यानमारे, शांभल्युं ते राई. ॥ स० ॥ ६ ॥ विश्व भूति नामे ते सहीरे, कपट कलानो कोट. ॥ दरीउ दुष्ट विद्या तणोरे, चुके न मंत्रनी चोटोरे ॥ स० ॥ ७ ॥ श्राकर्ण्या श्रज्ञाननारे, जन सहु जोवा जाय. ॥ पण नरपति नावे कदारे, समकित जिणे दुहवायोरे ॥ स. ॥ ८ ॥ कोईक साथे कहाव्युं इशुंरे, तव ते त्रिदमीएं तास. ॥ दर्शनने पण श्रावतारे, इयो थाए छे विणाशोरे. ॥ स. ॥ ९ ॥ पूर्वे प्रसंगतणे वसेरे, दाक्षिण लगे नर देव ॥ कांइक सुह सरमे करिरे. तिहां पहोतो ततखेवोरे. ॥ स. ॥ ॥ १० ॥ मंत्र विद्या कौतुक कला रे ॥ तपसी दे खामे तास ॥ दृष्टि रागें तव तक लहीरे. नृप घटें पू

रयो वासोरे ॥ स. ॥ ११ ॥ त्रिदंमिए तिम रीझव्योरे, राजा आवे तिहां रोज ॥ नित जोए कौतुक नवांरे, ॥ चित्तमांहे धार चोजोरे. ॥स० ॥१२॥ चित्त चंचल थयो कुमरतणोरे, कुदृष्टि रागे करयो जेरोरे. ॥ ते सम कितथी चल्योरे; इम भाखे ते वेरोरे. ॥ स० ॥ १३॥ ए श्वेत पटा भिक्षु जमयारे; कला न बुझे कांइ ॥ ए त्रिदंमि भगवानमारे ॥ज्ञान वंर्णमं किसी मायोरे, ॥ स० ॥ १४ ॥ तव सम्यक् दर्शन चितवेरे, कु दृष्टि स्नेह काम राग ॥ रूपे इहां राग केसरोरे. भग टयो पूर्ण वही लागोरे. ॥ स० ॥ १५ ॥ एक ज्वर तणे जोरे करीरे, व्यापे सघला रोग. ॥ तिम ए, ए कने आगमेरे. ॥ आवशे इहां अरि ओघोरे. ॥ चि. ॥ ॥ १६ ॥ इहां रेहवुं जुगतुं नहींरे. मुफने हवे ते माट. ॥ अलोप थयो इम चिंतिनेरे, कुसंग लही ते कु घाटोरे. ॥ चि० ॥ १७ ॥ मिथ्या दर्शन मंत्रवीरे. किहांएथी प्रगटी त्यांहि, ॥ गले झाली तेहनेरे. ना ख्यो निज फंदामांह्योरे. ॥ चि० ॥ १८ ॥ कुलिंगी संग कराविनेरे, धर्म ठगे बहु पाप. ॥ एकेंद्रि यादिकमां धरयोरे, मोहादिकें मली सपापोरे. चि०

॥ १९॥ तिमज राख्यो तिहां रोकिनेरे. तेहने अनंतो काल. ॥ आगए चालीशमी ए कहीरे. उदय रत्न कहे ढालोरे. ॥ चि॰ ॥ २१ ॥.

॥ दोहा. ॥

वली हवे ते एकदा, कर्म नृपे धारि हेत ॥
धन श्रेष्टीने धाम लेइ, उपजाव्यो नर खेत ॥ १ ॥
सुभग नामा सुत ते सही, यौवन पाम्यो जाम ॥
सुगुरु सदागम संगथी, समकित पाम्यो ताम ॥२॥
मिथ्या दर्शन आदि दे, दुस्मन कीधा दूर ॥
सम्यक् दर्शननी सेवना, तिमज करे भरपूर ॥ ३ ॥
सम्यक् दर्शन मंत्रि जे, क्षायोपसमिक रूप ॥
त्रिविध आराधे तेहने, आणी भाव अनूप ॥ ४ ॥
वरष केतां एक वही गयां, सुपरें करतां सेव ॥
परण्यापूर्व एकदा, सुत तसु जणतां खेव ॥ ५ ॥
अवसर जाणी आपणो, चलि तिहां आव्यो वेग ॥
रोस भरें राग केसरी, उपजाव्या उद्वेग ॥ ६ ॥
ते सुभग तणां घटमां सही, बीज रूप बलवंत ॥
स्नेह राग मिसें संक्रम्यो, तव उपनो स्नेह अनंत॥

मात पिता भगनी विषे, भाइ विषे अति भूर ॥
दास दासी परें जनविषे, प्रीतीनुं वाध्युं पूर ॥ ८ ॥
बाहिरथी आवे घरे, जो नजरे नावे कोय. ॥
तो तेहने जो तो फिरे, भूख्यो तरस्यो सोय. ॥ ९ ॥
नजरे देखे तेहने, तव तसु थाय करार. ॥
पुत्र तणा तो प्रेमनो, परमेश्वर लहे पार. ॥ १० ॥

॥ ढाल. ॥ ४० ॥

नणदल सालूमा मांमो तिमोमणी रे, ए देशी. ॥
वारी वेहुं मासांनों वाल ते आलिंगे लई उरसंगे हो. ढलबल ढोरुमामां मनमो ढकि रहिउं, वारी मुखपर मारवी गण गणे, तो पण चुंबे मुख रंगे हो. ॥ ढ० ॥ १ ॥ ढो. ॥ वारी खेले खरमी नाशिका वारी लपनथी चुए लाल हो. ॥ ढ० ॥ वारी को काकरी लुहे करें, मल मुत्र बहु जंबाल हो. ॥ ढ० ॥ २ ॥ ढो० वारी केमें घाली कीकलो, वारी त्रिक चुक चाचरे तेह हो. ॥ ढ० ॥ वारी सुत भरत नीं परें भमे, गलियां गलियां पुर तेह, ॥ ढ० ॥ ॥ ३ ॥ढो० ॥ वारी अनेक विधें हुलरावतो, वारी

लोकनी न गणे लाज हो. ॥ ठ० ॥ वारी दिन सा
रो लागी रहे, वारी भोजन नकरे काज हो.ठ.४ ढो.
सुखे राते सूए नहीं, वारी जिहां नवि उंघेत बाल
हो ॥ ठ० ॥ वारी भर निंदामांथी भमकिओ, वारी
ऊठे लेवा संभालहो ॥ ठ. ॥ ५ ॥ ढो० ॥ वारी
जनकना भाणामांहेथी, वारी मीठुं मधुरुं नेह हो;
॥ ठ० ॥ वारी आसमी जाए सवे, वारी खातो थ
यो जव तेह हो. ॥ ठ० ॥ ६ ॥ ढो. ॥ वारी ति
हा तिहा साथे संचरे, वारी जिहा जिहा जाए ते
बाल हो. ॥ ठ. ॥ वारी जे जे कांई जोइये तेहने,
चित्तमां राखे चालहो. ॥ ठ. ॥ ७ ॥ ढो. ॥ वारी
निशाले जइने ते, वारी पठावे रेही पासे हो.॥ठ.॥
वारी पांमस पामां बहु करे हो, वारी पूरे पमयानी
आसहो. ॥ ठ. ॥ ८ ॥ ढो. ॥ वारी व्याधातिएे उ
दये वली; वारी अधिक करे उचाट हो. ॥ ठ. ॥
वारी ते ऊपरे खमी रहे, वारी अहनिशि सूए न खा
ट हो ॥ ठ. ॥ ९ ॥ ढो. ॥ वारी वैद्य तेमावे वलि
वालि; वारी औषध करे अनेक हो ॥ ठ. ॥ वारी जा
णा जोसीने भष्या, वारी विध विध मेले विशेष हो ठ.

॥१०॥ढो.॥ वारी मंत्र यंत्र मणि औषधी, वारी अने क परे वतार हो. ॥ ढ० ॥ वारी करी इम करता कांई, वारी जो पमे करार हो ॥ ढ० ॥ ११॥ ढो. वारी हिमत तो हारी हिए, वारी दुखी थई ने दीन हो ॥ ढ० ॥ वारी विविध परें विलवे घणु, वारी वंधे आरती लीनहो. ॥ ढ० ॥ १२ ॥ ढो०॥ वारी हाहा शुं थाशे हवे, वारी नावे कां अमेत मोत हो. ढ० ॥ वारी अती नेहें इम ऊचरे, वारी घर गयुं सर्व सुहोतहो. ॥ ढ० ॥ १३ ॥ ढो० ॥ वारी चालीशमी ढाले जुओ, वारी स्नेह वर्से गई सान हो, ॥ ढ० वारी उदय रत्न कहे तेहने, वारी सुण जो सहु सावधान हो. ॥ ढ० ॥ १४ ॥ ढो० ॥

॥ दोहा. ॥

इम करतां मोटो थयो, जालिम तेह जुवान. ॥
परणावी तस प्रेमसुं, कन्या रूप निधान. ॥ १ ॥
हाट बेसामी हेतसु, सीखवे रही समीप ॥
वणिज कला तसु वेगसुं, कुमर लही कुल दीप ॥ २॥
धनद सेवतुं धन सर्वे, सुभगे सोंपी तास ॥

धव धव कीधो घर धणी, अंगें धरि उल्हास ॥ ३ ॥
देवूं देवूं ते वसू, गत्थ नेगृह व्यापार॥
पोतें कांई प्रीछे नहीं, बेठो रहे घर वार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ४१ ॥

लाल वेसरदे ए देशी.

इम अंगजनी चेष्टा लीनो॥ भावथें भरमां रहो भी नो ॥ लाल सुत नेहें ॥ मनसुं मुं फाणो ॥ सु० ॥ पापें पथ राणो ॥ सु० ॥ ला० ॥ १ ॥ सुत स्नेहें ते जो जो सुभगो. दुर्गति लहेसे महा दुभगो ॥ ला० ॥ २ ॥ दसमां हे न संभारे देवा ॥ वली वीसारी गुरु सेवा ॥ ला. ॥ ३ ॥ सुत विसार्यो पमचो सांसे ॥ मुखथी न कहे सामी वरांसे ॥ ला. ॥ ४ ॥ अलगा रह्या गुरुना उपदेश ॥ वेरणि थई धर्म कथा विशेष ॥ ला. ॥ ५ ॥ सम्यग् दर्शन नामें पण तेह ॥ आरति मने लही अछेह ॥ ला.॥६ स्नेह रूपें राग केसरी वलिओ, लहि ने तिहांथी ऊचलिओ ॥ ला. ॥ ७ ॥ सम्यक् दर्शन नामें पण तेह ॥ आरति मने लही अछेह ॥ ला. ॥ ८ ॥ मि

थया दर्शन मनोसर थायो ॥ लेई परिकर ने तिहां आयो ॥ ला. ॥ ९ ॥ सुभगतणां गढमां सु कुटंबे. आवी वश्यो अवलंबे ॥ ला. ॥ १० ॥ जात वधू नी जव थयो जोरो ॥ तव संचारयो तिणे दोरो ॥ ला. ११ तिणे दोरे सुतनो दिल फरिओ ॥ तव तातनो गुण विसरिओ ॥ ला. ॥ १२ ॥ आठे पहोर उद्वेग उ पाए ॥ ए दीठो अम न सुहाए ॥ ला. ॥ १३ ॥ सघला अर्थनुं ए मूल ॥ अमने सुखमाहे जगावे शू ल ॥ ला. ॥ १४ ॥ सुखे बेसी रहेवा न दीए ॥ अ वगुण केता मुख वदीए ॥ ला. ॥ १५ ॥ इम चिं ति घरमांथी नेटे ॥ बापने काढयो ते बेटे ॥ ला. ॥ ॥ १६ ॥ सुधर्म बुद्धि तजीते सुभगो ॥ अंगज व धूथी घणुं उभगो ॥ ला ॥ १७ ॥ घर घर भीख मांगीने खाए ॥ किहारे पेट पूरुं न भराए ॥ ला.॥ ॥ १८ ॥ मन वचन ने काया केरा ॥ करी पातक तेह घणेरा ॥ ला. ॥ १९ ॥ तिमज एकेंद्रियादिक मां भमिओ ॥ दुःखें मोहादिकें दमिओ ॥ ला. ॥ ॥ २० ॥ एकतालीशमी ढाले कहे उदय ॥ श्रावक विण कूण हूए सदय ॥ ला. ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नर भव वलि कर्म दियो, सिंह नाम नर सोय ॥
अनुक्रमि समकित पामिओ, यौवन आव्यो जोय
विषय राग त्रीजुं वलो, रोसे धारे ने रूप ॥
वश्यो तेमा राग केसरी, मन हरख्यो मोह भूप
शब्द रूप रस गंध फरस, तेहना त्रेविश भेद ॥
तीव्र राग तेहनो धरे, अह निशि तेह उमेद ॥ ३
रमणी रागें रंजिओ, मांजी सोनो मोह ॥
आपें जई अलगो वश्यो, पिण नवि खमे विछोह
जे सा बोलि ते खरुं, बीजो न गमें बोल ॥
हितकारि तेहनुं करयुं, मनसुं मानें अमोद ॥ ५
वाहला सहु विष सारिखा, वनिता अमृत वेल ॥
सरण न को श्यामा समुं, वाला समी न वेलि ।
मनसुं तो इम मानतो, अवरां कहें अव हेलि ।
सुखनुं मूल छे सुंदरी, बाकी धीनो मेल ॥ ७ ।

॥ ढाल ॥ ४२ ॥

॥ तट जमुनानो अति रलिआमणो रे. ए शी ॥
तव तसु नारें रे निज जोरो लहीरे. जूना नाम टा

सी जेह ॥ दूर करीने रे दूजा दिल भावता रे, राख्या घरे रंग लेह ॥ १ ॥ नखरा जो जो रे निलज नारिनारे, अमखिल मेली वचालि ॥ सलिल सुगंधे रे स्नान करे नित रे, वीणे वधारी वाल ॥ न० ॥ २ ॥ सुरभि द्रव्ये रे नित भीनी रहे रे, पेहेरे, मन गमता वेष ॥ भूषण भारे रे अंग भागी पमेरे, दर्पणमां रहि देख ॥ न० ॥ ३ ॥ भली परे भूजे रे भोजन भावतारे, मन माने ये मोज ॥ जे जे गमे रे ते ते जारशु रे, रमणी रमते रोज ॥ न० ॥ ४ ॥ माया गाले रे तो पण ते मानुनीरे, न्यायने वचने नाथ ॥ जभिने जोरे रे भली परे भोलवे रे, जो जो जुवतिनी जात ॥ न० ५ ॥ पवित्र अ नारी रे छे पतिव्रता रे, सतिओमां शिरदार ॥ दयिता माहरे रे छे देवपूतलो रे, भापे इम भरतार ॥ न० ॥ ६ ॥ एक दिन तेणे रे पारखा कारणेरे, अछतो दोष वपाय ॥ माथामाहि रे मारयो पग पानिए रे, तव तस मर्दे ते पाय ॥ न० ॥ ७ ॥ कहे कांइ जूठू रे नही ए कामनी रे, चतुरा पमि मुने चूक ॥ आज पछी एहवु रे हु नहि आचरु रे दिलमां न धरो दूख ॥ न० ॥ ८ ॥ जो वलि चुडू रे

इम करतां कदा रे, तो चंदन रसथी जोर ॥ शीत ल तुम पगे रे प्रहार करि मुने रे, सुख देयां बल फोर ॥ न० ॥ ९ ॥ तवसा चिंते रे दास ए रांक ने रे, श्याने नमाडुं भूर ॥ जे गमे मुने रे तेहने लावूं घरे रे, संका मेहेली दूर ॥ न० ॥ १० ॥ तव बीजे दामे रे नर दोषा समेरे, श्रंगणे तेमे एक॥ नर कोई तरुणीरे नाथने ते कहेरे, सुणो स्वामी सु विवेक ॥ न. ॥ ११ ॥ पितृनु प्रेष्युंरे पितृ लोक थीरे, मनुज आवी रह्यो बार ॥ ते मुफ साथेरे क रवा कांई वारतारे, इछे एकांते अपार ॥ न. १२॥ पण हूं न करुं तमने पूछया विना रे, पर घर नं जा लोक ॥ मननुं कल्प्युं रे काले कहे किश्युं रे, अछता वपाए दोप ॥ हु. ॥ १३ ॥ तुमे तो महा रां रे लक्षण सरवे लहोरे, लोक लवे जो लाख ॥ तो पण केहनुं रे कह्युं मानो नहीं रे, स्नेह पूरे छे साप ॥ हू. ॥ १४ ॥ ढाल श्रे बोलीरे बेतालीशमी रे उदय वदे इम धारि ॥ कामिनी परें रे कोई आप गोपवा रे, समझुं नहि संसारि ॥ हु. ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तव ते कहे प्रिया तुने, त घटे कहेवुं श्चेम ॥
विकल्प कोइ तारे विषे, कहो हुं चितवुं केम ॥१॥
हुं नहिं बीजा सारिखो, लोकने कहिए लाग ॥
मेहेलुं जे मुरख पणे, आपणा घरमां आग ॥ २
ते माटे जाई तुमे, तस सनमानो तेम ॥
पुर्वज प्रीते आपणा, जयकारी होय जेम ॥ ३

॥ ढाल ॥४३ ॥

॥ रुक्मणि राणि मोहोलमां, ए देशी ॥

तव सा जई तेहसुं, खेले विध विध खेल हो लाल
खेलाएं तनु सोंपती, रसनी चलावी रेल हो लाल.
॥ १ ॥माया जो जो महिला तणी, जे किणे परखी
न जाय हो लाल ॥ ठगवा पुरुषने ठेतरे, आखर
केहनी न थाय हो लाल ॥ मा० ॥ २ ॥ भरतारने
भाखे पछे, अवहेली मुने एणे हो लाल ॥ भक्ते
तुमे भजो नहीं, पूर्वज रूठा तेणे हो लाल ॥ मा०
॥ ३ विनयतणे वचने करी, भाव देखामी भुरि हो

लाल ॥ तिम संतोष्यो तेहने, मैं उलट आणी कर हो लाल ॥ मा० ॥ ४ ॥ पूर्वजने ए प्रीछवी, प्रस न्न करसे विशेष हो लाल ॥ सवला पितुनो स ही, अति मानी तो एष हो लाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ बी जूं पण बहु काम छे, पितृसंबंधी स्वामि हो लाल॥ दिन केताएक ते वती, एरहेशे आगामि हो लाल॥मा.॥ ६॥ ते माटे मैं महुतरयो, जिहां लगें रहो आंहि हो लाल ॥ भोजन तिहां लगे अम घरें, करजो तुमे उछांहि हो लाल ॥ मा. ॥ ७ ॥ तव ते कहे तें रूडूं करयुं, आमंत्र्यो जे एह हो लाल ॥ नालि परें भुंजाव जो, अति आदरें सस्नेह हो लाल ॥ मा. ॥ ८ ॥ पितृ जन कोइ प्राहुणा, आवे आपणे भुवन हो लाल ॥ चाही कीजे चाकरी, पोते होवे जो पुन्य हो लाल ॥ मा. ॥ ९ ॥ शालि दालि घृत शालणां, लापसि घृत पुर आदि हो लाल ॥ उपपतिने ते अंगना, सविधे जमामे स्वाद हो लाल ॥ मा. ॥

नवा,आपे धरी उमेद हो लाल॥ भरतार भक्ति भरें करि, नित नवला निवेद हो लाल ॥ मा. ॥१२॥ तव ते जार वदे अहो, पूर्वज तुज भलो पेर हो लाल॥ संतोष्या वे में सही,मनमांहि धरसे महेर हो लाल॥ मा.॥१३॥ जे जे करे वे सेवना, ते ते पहोंचे वे तास हो लाल ॥ एहवुं जाणी ने तेहने, अंगें थयो उल्हास हो लाल॥ मा० ॥१४॥ भक्ति अपूर्व उलसी, अष्टांग प्रणमी विसेप हो लाल ॥ कांई जे खाता कगरे, शिर चढावे ते शेप हो लाल ॥ मा० ॥१५॥ तेतालीसमी ढालमां, जो जो माहिलाना काम हो लाल ॥ उदय वदे निज नाथने, गोरीए कीधो गुलाम हो लाल-मा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

जो कोई कहे तेहने, दुशीला तुज नारि ॥
तव ते कहे हुं जाणुं अछुं, ए सघलो आचार ॥१॥
निर्मल मुज नारी अछे, गोप्य न राखे मुज ॥
संबंध पहिलो ए सर्व, मांमि कह्यो वे मुज ॥ २ ॥
इम उत्तर नापे ए किश्यो, कह्यो न माने कांइ ॥

मगन थयो महिला रसे, निर्गम समके नाहि ॥३॥
तव एक दिन कोई दुर्जने, देखाड्यो ते जार ॥
तेहने घरमां पेसतो, सम्यक् परें सु विचार ॥ ४ ॥
पोताने घेरें पेसतो, पेषी तेह पुरुष ॥
घर आवी घरणी प्रते, रंगे जणावे रुष ॥ ५ ॥
कांते कह्यो ए किसी, लव करे छे लोक ॥
तव सा कहे थई तरतरी, लोक तणा मुख बोक॥६॥

॥ ढाल ॥ ४४ ॥

॥ सीता हो पीउ सीतारा प्रभाते, ए देशी ॥
जाण्युं हो पिउ जाण्युं तुमारुं में आज, सघलुं हो पिउ सघलुं जाण पणुं सही॥ परघर हो पिउ पर घर भंजा लोक, तेहनी हो पिउ तेहनी वात लागा वही ॥ १ ॥ घरनी हो पिउ घरनी जेवम लही जेह, परनी हो पिउ परनी न माने वारता॥ दोषी हो पिउ दोषी जन विण दोष, पापी हो पिउ पापी रही रहे पचारता ॥२॥ में तो हो पिउ में तो आगलथी एह, तुमने हो पिउ तुमने गुज कह्युं हतुं,॥ तुमें हो पिउ तुमें दिलनुं कूड, भलें हो पिउ भलें आज करयुं छतुं ॥३॥ फलशें हो पिउ फससे

मनोरथ माल, जो जो हो पिउ जो जो आज थकी सहु, धरशे हो पिउ धरशे पितृपण हेत ॥ भगति हो पिउ भगति तमारी देखी वहु ॥ ४ ॥ भावी हो पिउ भावी प्रमाणे बुद्धि, आखर हो पिउ आखर सहुने ऊपजे ॥ मतिने हो पिउ मतिने मानि फलपत्ति, जगमां हो पिउ जगमां जोतां नीपजे ॥ ५ ॥ सुंदर हो पिउ सुंदर अवसर मानि, मुकने हो पिउ मुकने जाणीने सदा ॥ रहिजो हो पिउ रहिजो रखोपा काज, महारी हो पिउ महारी हाथ फालो मुदा ॥ ६ ॥ आपद हो पिउ आपद कोइ अत्यंत, लहेसो हो पिउ लहेसो तुम लक्षण लहो ॥ दोशेहो पिउ दोशे बांको दीह, अमने हो पिउ अमने जे अेहवुं कहो ॥ ७ ॥ निपट हो श्रोता निपट निभृयो तास, पोते हो श्रोता पोते रोश भरी रही ॥ उदय हो श्रोता उदय रत्न ए ढाल चुंपे हो श्रोता चुंपे चुमालीशमी कही ॥ ८ ॥

तव एक दिवशें ताकिने, मनोहर महिषी एक ॥
गोप्य रखावी आपणी, चिटपाहे सुं विवेक ॥ २
तव सिंह भणे सुण सुंदरी, महिषी नावी बार ॥
के कोई चोरें अपहरी, के रही रान मझार ॥ ३
ते कहे तो हुं शुं करुं, फुटूं ताहरुं कर्म ॥
आचरण जेवां ताहरां, मूढ न जाणे मर्म ॥ ४ ॥
तव शोधे ते सघली दिशा, आरतिवंत अपार ॥
भूख्यो तरस्यो वन भम्यो, पण न लहि शुद्धि लगार ५
घर आवी तव ते घणुं, मुख मेलो नीसास ॥
नारीने कहे नवि जमी, अहो हवे शी आस ॥ ६

॥ ढाल. ॥ ४५ ॥

वीजाजी हो रतन कुआ मुख सांकमोरे, ए देशी,

तव सा कहे तारो जेवोरे, पितजो ॥ पितृ ऊपर छे भाव ॥ स्वामी सुणजो सीख साची ॥ पि. सिद्धि छे घरमां तेहवी रे, ॥ पि. ॥ कहुं छुं पामी प्रस्ताव स्वा. ॥ पि. ॥ १ ॥ वधतो वालि थासे कि शोरे, पी. ॥ आगल तुम उतपात ॥ स्वा. ॥ मुहुरत

श्ये मांमगुं सहीरे पी. ॥ धूल तुमारी धात ॥ स्वा ॥
२ ॥ श्रोताजी हो, तव ते वेगें ऊठिनेरे ॥ पी. ॥
वदे विलगी पाय ॥ वात सुणजो सैणवारु ॥ प्रि
याजी हो, सघलुं तिम ए साचुं कह्युंरे, प्रिया मं
पितृ मेल्या पजाय ॥ वा० ॥ ३ प्री. ॥ तेमाहि हवे ते
हवुंरे, प्रि० ॥ आराधन करो एम त्रियाजी हो ॥
जिम आवे आपण मंदिरेरे, त्रि० ॥ पूर्वज घरीने प्रे
म ॥ वा० ॥ ४ ॥ श्रोताजी हो, तव सा कोपी
कामिनीरे, श्रो० ॥ मंदिरमां न समाय ॥ वा० ॥
सवाजी हो सत्य पुरुष तु रहे ने परो, रे ॥ स० ॥
इम बोली तभराय ॥ वा० ॥ ५ ॥ स० ॥ लक्षण
ताहरां सहु सवेरे, स० ॥ इम कही मारयो लात
वा० ॥ फरी फरी मुख नाखे परेरे, श्रो० ॥ हम
सेवी पग साथ ॥ वा० ॥ ६ ॥ स० ॥ जोर पणें युव
ती तणेरे, श्रो. ॥ चरणे थापी रयो सीस, वा० ॥
साधी सहु तव सा कहीरे, पी० ॥ पुर्वजने सुजगी
स ॥ वा. ॥ ७ ॥ पी. ॥ पण मर घर पंमित लोक
नारे, तमे घरसो वच मनमांहि ॥ वा. ॥ तव ते
कहे हवे आजथीरे, श्रो ॥ नांहि धरु जीवित तांहिं ॥

वा. ॥ ८ ॥ त्रि. ॥ महारुं करयुं फल में लह्युंरे. श्री. हजी सुं वलो नथी सीख ॥ वा. ॥ वेल परें इम वीं धिनेरे. श्री. ॥ ते कामिनीएं करयो वीक ॥ वा. ॥ ॥ ९ ॥ श्री. ॥ उदयरत्न इम उचरे रे ॥ श्री. पिस्ता लीसमी ढाले ॥ वा. ॥ श्री. ॥ मंद महिलाने वसें पम्योरे. श्री. ॥ न जुए आप संभाल ॥ वा. ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

वलि पूजा उपचार बहु, आणावी पिउ पास ॥
पितर पूजे सा प्रेमदा, अगर उखेवी खास ॥ १ ॥
इम करतां आराधतां, यामनी जव गई याम ॥
तव ते विटने तेम्निने, निज पीउने कहे आम ॥ २ ॥
मनुष्य पितृनु मोकल्युं, आव्युं छे ग्रह बार ॥
तव ते कहे तुमे जई सुणो, जे जंपे तेह विचार ॥ ३ ॥
भक्ति करो बहु परें भली, जिम आपणे जयकार ॥
परिघल कमला पामिए, तिम करजो तुमे नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ४६ ॥

॥ श्रेणिक मन अचरज थयो, ए दशी ॥
तव सा जई ते कने, प्रेमे परव रीतें रे ॥ सुख

विलसी निज स्वामिने, प्रीढवे मन प्रीतें रे ॥ १ ॥
स्नेह वसें परवस थयो, ते भामतीएं भोलविओरे ॥
भवसंकटमां नारिओ, आचरणमां ओलवीओ रे ॥
स्ने. ॥ २ ॥ विनय विवेक वचन रसें, में पितृ संतो
ष्या विशेषें रे, ॥ महीषी किहां एकथी आवशे,
वलती कुशल कल्याण करेसे रे ॥ स्ने० ॥ ३ ॥
प्रदोष समे तम पसरते, महषिी रिंकती मोदेरे ॥
द्वारें पेखी दोमती, तव सिंह हरख्यो सविनोदें रे ॥
स्ने. ॥ ४ ॥ अदभुत प्रत्यय रूपनो, अति रंज्यो र
मणी रागेरे ॥ वलि कांइ आपो आगना, इम कहे
स्त्री आगेरे ॥ स्ने० ॥ ५ ॥ शिर धुंमावो सा कहे,
जिम विशेषें ते रीझेरे ॥ धुंमन वाहलुं प्रेतने, ते तिम
करे दिन बीजेरे ॥ स्ने० ॥ ६ ॥ मइ विषय रागरूपें क
री, राग केसरीएं विगोयोरे, प्रमदाने वस पामिने, अ
वतार आलें खोयोरे ॥ स्ने. ॥ ७ ॥ देव गुरु आ
दिक दिल थकी, पारें हारें प्रमदा राचीरे ॥ धर्मा
दिक धंधो लह्यो, सुंदरी जाणी साचीरे ॥ स्ने. ॥
॥ ८ ॥ कोइ किहारें कहे तेहने, ते समकित दर्श

न सेवारे ॥ किम मेहली तव ते कहे, सुणो सहु स
मजावे हेवारे ॥ स्ने. ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

सम्यक् दर्शन मेतस्याः, प्रिया या एव निश्चितं ॥
सम्यक् दर्शनोयन्यस्तु, कोपि धूर्तः प्रकल्पितः ॥ १ ॥

राज केसरीना राज्यमां, इम ते बोले उधुरे ॥ आचरण
अवलुं ओ सर्वे, सम्यक् जाणी सूधुरे ॥ स्ने॰ ॥ १० ॥
सम्यक् दर्शन मंत्रवीं, दिल चोरी रखो दूररे ॥ मि
थ्या दर्शन तव मोदशुं, पेवो निज दलपूररे ॥ स्ने. ॥
॥ ११ ॥ मरण लहीने मूढते, ओकेंद्रियादिक आदि
रे ॥ योनिते फरसे फरि फरि, वाधो विषय सवा
दिरे ॥ स्ने. ॥ १२ ॥ छेतालीसमी ढाले छेतरयो, वि
षये तेह वराकोरे, उदय रत्न कहे अहो भवी, विरु
आ विषय विपाकोरे ॥ स्ने॰ ॥

॥ दोहा ॥

अवतारयो वलि अन्यदा, जिनदास श्रेष्टि गेह ॥
पुत्रि पणे ते प्राणिने, कर्म तिहांथी लेह ॥ १ ॥

जिनश्री नामे ते सही, सकुटंबे ते सेव ॥
सम्यक् दर्शन मंत्रिने, सेवे सदा शुभ द्वेव ॥
जिनश्री पण पाले तिणे, समकित धरी स्नेह
विमल सेठ शुद्ध श्राद्धने, परणावी छे तेह ॥
देव धर्म गुरु रागिणी, श्री जिन धर्म उदार ॥
करतां कुल मंमन थयां, तेहने पुत्र वे चार ॥
घर धणिआणी ते थई, आण न लोपे कोय
चारो नहि कोई अवरनो, जे एह करे ते हो
धनश्री नामे धामिणी, वमा पुत्र घर नारि ॥
सारथ वाहनी ते सुता, स्वरूपवंत उदार ॥ ६

॥ ढाल. ॥ ४७ ॥

॥ ठेमानाजी २ ठे, ए देशी ॥

ते हवे तक सांधी विनयो. द्वेष गजेंद्र धाई ॥ मोह
गजेंद्रने मननी मांजे. जो जो मुफ सकजाई ॥१॥
दुर्दयोजी ॥ मोहने मोह राजा महा राजा ॥ दू. ॥
मेहेलावी तेहनी माजा ॥ दू० ॥ वजमावी सुयश
वाजा ॥ दू. ॥ योजी योजी २ दुर्दयोजी ॥ आं ॥
ज्येष्ट वंधु मारो जोरावर, राग केसरीरो सालो ॥ जी

ती करी आव्यो ते जालिम, पोते जई तिहां पालो. ॥ दू. ॥ २ ॥ तातजी महेर करीने तेहने. नेहनो आप्यो नेजो ॥ अहिंसी वार अमारो वारो. भम जाणी तिहां भेजो ॥ दू. ॥ ३ ॥ इणि परें उल्हसी ठ जे, अमरखमुं आवरिश्रो ॥ जनकने प्रणमीने ते वेगे. जिनश्री घर संचरिश्रो ॥ दू. ॥ ४ ॥ ते ह तणे संजोगे तेहने. धनश्री तपरें द्वेष ॥ परे परे ते पुत्र वधुसुं, ठपनो श्रोप ॥ दू. ॥ ५ ॥ दीठी रीसें बले दिलमाहि, अवलुं अवलुं बोले ॥ प्रसि नहीं भाणामां पुरुं, खोटा अवगुण खोले ॥ दू. ॥ ॥ ६ ॥ विण अपराधे वांक ठपाई. चहोमे शिर मा चाटुं ॥ बहु विच्यारी पघ चापे तव, सासु मोर पाटुं ॥ दू. ॥ ७ ॥ काम करया सघलां अवहेले, निक्षुकने पण मेलो ॥ पोते आपीने पचारे, पुत्र न राखुं भेलो ॥ दू. ॥ ८ ॥ रोटी अन्नादिकनी रीसें, आगलथी नये अमवा ॥ कण मात्र जो कोई खाए. तो लमकी बेसे नमवा ॥ दू. ॥ ९ ॥ विनयवती ते न करें अविनय. पद प्रक्काले वेहेसी ॥ निभ्रंगी तव नाखे तेहने. पगसुं पाळी वेसी. ॥ दू० ॥ १० ॥

वासो चोखे तो वाळि तेहने, निपट नाखे निंठेटी ॥ प्रीसती वेला जो रहे पासें, तो थसगी करे अरठे टी ॥ दू० ॥ ११ ॥ रखे एहनो कांइ थाए चारो, धमी एक घर नवि ठमें, इम जाणी रहे ढंढ जोती, भूंमी कहिने भंमे ॥ दू० ॥ १२ ॥ देव धर्मने गुरुने दिलथी, वली मेहल्या वीसारी ॥ ढांकणादिक भाग लही भांमें, जूनुं पण संभारी ॥ दू० ॥ १३ ॥ लोक आगल हीमें लवलवती, अछता अवगुण कहेती ॥ बहु पाछो उत्तर नविवाले, कुल लज्जाने वहेती ॥ दू० ॥ १४ ॥ द्वेष भरे रहे धगधगती, सदाकाल ते सासू ॥ वेरणीनो परें बहु ते, आंखें पमावे आसू ॥ दू० ॥ १५ ॥ समतासीसमी ढालें सासूने, बहु सार्थे वेर ॥ उदयरत्न कहे चाल्यां आवे, आगम मांए इणे पेर ॥ दू० ॥ १६ ॥

॥ दोहा. ॥

समज्युं सयल स्वरूप ते, विमल श्रेष्टि आदि ॥
स्वजन कुटंब सहु पुर जने, वाध्यो तव विषवाद १ ॥
जोसीखामण कोइ कहे किशी, तो कोपे सुविशेष ॥

क्रोध दावानल धम धमे, आकल हुइ अशेष ॥२॥
मावी कर मेवी तदा, दुर्जननी परें दूर ॥
सहुएं जाणी मलिने जिनश्री, भूमी जाणी भूर॥३॥
सम्यक् दर्शन पणे सही, छटक गयो तव ठामि ॥
परिकरसुं वासी तदा, मिथ्या दर्शन मन कामि॥४॥

॥ ढाल ॥ ४८ ॥

आज सखी सामलोआरे मुने मारगमां, ए देशी.

एकदा ते रोसें भराणीरे, वदे छे जिम तिम वाणीरे॥ विमल श्रेष्ठिकने विवहारीरे ॥ तव आव्यो कोई अधिकारीरे, ॥ १ ॥ मुखें मौन धरी रही वहुरे ॥ सासु तव भांमे वहु रे ॥ तिहां बेठे ते नरें दीठोरे॥ अन बले जाणे अंगीठोरे ॥ २ ॥ तव ते कहे सुण भद्रेरे ॥ सुवहुसुं वढे छे छिद्रेरे ॥ फोकट ए फनेत थावुंरे ॥ एक श्लोक कहो समझावुंरे ॥ ३ ॥

वहुनो स्वभावते सारोरे ॥ दीसे छे लाज अपारोरे॥ नाहकसुं एहने निभ्रछोरे ॥ वढी लेवा सुं वछोरे॥४ कालें थासे एहनो चारोरे ॥ मनमा एहवु न विचा रेरे॥ आखर ए घर थासे एहनु रे॥ दिल दुःख धरिए सु तेहनुरे ॥ ५ ॥ इत्यादिक इणि परें वारीरे ॥ घ रे गयो ते व्यवहारीरे ॥ ते ऊपरे पण सा कोपीरे॥ अहो लाज माहरी इणे लोपीरे ॥ ६ ॥ केवल वहु सु वढे नवि धापेरे ॥ वीजाने पण सतापेरे ॥ हवी ए कुण ताहरो सणीजोरे ॥ तातो थई जण श्रीजोरे ॥ ७ ॥ सीखवणी ए सहु ताह रीरे ॥ इणे जात विगोई माहरीरे ॥ इम कहेती करे ग्रहि पालीरे ॥ थई वाघणीसी विकरालिरे॥८॥ घन श्री उपरे तव धाईरे ॥ धराश्रें पमी भसकाईरे ॥ हि या ऊपर वेसीनेरे ॥ हणी छेरीएं दंत पीसीनेरे ॥९॥ तव हाहाकार करी धायारे ॥ सहु सज्जन मलिने आ यारे ॥ तव तेहने पण सा खीजीरे ॥ हणवा दोमी छरी वीजीरे ॥ १० ॥ पाटू यैष्टिका पहाणेरे ॥ तेहने तव सहु मली आणेरे ॥ तिहां लगे जा वहु तिणे मारीरे ॥ तेहने पण स्वजने संहारीरे ॥ ११ ॥ अ

समंजस एहवुं जोईरे ॥ सकुटंब विमल सेवे सो
ईरे ॥ संयम पंथे परवरिश्रोरे ॥ जिनश्री जीव
नरकें संचरीश्रोरे ॥ १२ ॥ वली मच्छ एकेंद्रियादे
रे ॥ अवतार लिया विखवादेरे ॥ इम काढ्यो का
ल अनंततोरे ॥ हेथ गनेंद्र थयो वलवंतेरे ॥ १३ ॥
ए अमतालीसमी ढालेरे ॥ उदयरत्न वदे अंतरादे
रे ॥ जे जिनमतमा रहे भीनारे ॥ ते नर नरमाहे न
गीनारे ॥ १४ ॥

॥ दोहा. ॥

वली ते मानव ऊपनो, विप्र ज्वलन सिष नाम ॥
श्रावकनो तिहा संगते, समकित पाम्यो ताम ॥१॥
श्री जिन धर्मने साधता, दिन केता एक छेह ॥
मोह राजाएं मोकली, निर्द्धन तात सु गेह ॥ २ ॥
तव तेहनी सहचारिणी, दरिद्रता पणे दोम्हि ॥
आवी तिहा वतावली, मंदिर तसु मन कोम्हि ॥३॥
तव जई वश्यो नाहने गाममे, ज्वलन सीपते जाय ॥
हल खेमे हाली परे, तिहा नाहें अवर उपाय ॥४॥

॥ ढाल. ॥ ४९ ॥

॥ चित्रसंकीरो भमर सुजाण जे हडहारो, ए देशी॥

तव हेप गजेंद्रने धाय, वमो पुत्र विन्नवे ॥ महारा
ज ॥ अनंतातु वंधी क्रोध, नामें ते हरषें सुं हवे ॥
महाराज ॥ १ ॥ वैश्वानर बीजुं नाम ते, तातप्रतें
वदे ॥ म० ॥ एक अरज महारी महाराज के, आज ध
री हदे ॥ म० ॥ २ ॥ पहेलें ए विप्रनी पासें, हुं
रहेतो उसटे ॥ म० ॥ विचें सम्यक् दर्शन आवी,
वश्यो एहने घटें ॥ म० ॥ ३ ॥ तेणें हूं थयो दूर,
हवे अवसर सही ॥ म० ॥ जो आपो तुमे आदे
श, तो तिहां जाउं वही ॥ म० ॥ ४ ॥ तुमे
वेगा रहो ते माट, आपो आगना मुने ॥ म० ॥
जइने करुं अरि फेर, गले ग्रहुं विप्रने ॥ म० ॥५॥
पिताजी तुमारे प्रसादें, हूं जय कमला वरुं ॥ म० ॥
दुसमन शिर दई चोट, कि देसुटे धरुं ॥ म० ॥
६ ॥ इम तातनी अनुमति लेह, अनंतानुं बंधिओ
॥ म० ॥ क्रोध चाल्यो थई महासूर के, अवसर
साधिओ ॥ म० ॥ ७ ॥ जई पहोतो ते विप्रने संग,

ज्वलनसिष तव थयो, ॥ म. ॥ ज्वलनासिखा समान, नामार्थ संग्रह्यो ॥ म. ॥ ८ ॥ अपराध विना पण जोर,'' क्रोधें रहे धमधमी ॥ म. ॥ हृदयात रथी माहारोष, न जाय उपसमी ॥ म० ॥ ९ ॥ थोडु गुनह पण दंत, पीसी निज नारने ॥ म०॥ बाधी मारे बहु मार, न पामे विचारने ॥ म. ॥१०॥ वळावि करे उन्माद, अनल परें परजले ॥ म. ॥ पामोसी करे पोकार, तोहे पण नवि पले ॥ म० ॥ ११ ॥ बालने पण बांधी जोर, तामे तेहवी परें ॥ म. ॥ बहु लोक मलि जेम, गालो दिए आवी घरे ॥ म० ॥ १२ ॥ पिताने वेलो पांय, मारे निज मातने ॥ म. ॥ बहिनने दिए बहु गाल, भंमे निज भ्रातने ॥ म. ॥ १३ ॥ पूज्यने पजाए अपार के, गुरुने अवगणे ॥ म० ॥ निष्कारण पणे सहु साथ, कोपे क्रोधें घणे ॥ म० ॥ १४ ॥ ओगणपंचासमी ढाल, उदय इम उचरे ॥ म. ॥ सत्रु कोई क्रोध समान, बीजो वल नविकरे ॥ म. ॥ १५ ॥

॥ दोहा. ॥

अग्निरूप थई आकलो, भृकुटि चमावे भूर ॥

आंबीवरणी तपतपे, क्रोधें दीशे क्रूर ॥ १ ॥
आंखो ऊंबामा जिसी, रोसें राती थाय ॥
मार्तंम मम्मलनो परें, सासु क्रिणे न जोवाय
सीता कुल परें थरथरी, स्वेद बिंदु जरंत ॥
मुहमांथी जिम तिम लवे, विकल परे विलस
अग्निकुम्मसो आलखी, बोलावे नहिं कोय ।
अवश्य अंगारा परें, सहेजें बीलाव्यो सोय

घाले ॥ ५ ॥ वासे ने पासे हो, पंधे खा
ए खारे, जंघ ग्रिवा उदरें हो, वहु मारयो आरे॥
तव जीभ काढी ने हो, ते भूमेंसु रद्यो लिपी ॥
श्वानरें प्रेरयो हो, तव थयो विप्र पपी ॥ ७ ॥ त
पूछडुं मरमे हो, वली दंते करमे ॥ शकट बधी
हो, दंत घणुं घरमे ॥ ८ ॥ तव खेत्रने ढलीए हो
मारे पुरे रही ॥ मोटे महा स्थूले हो, पूरी तेणे
ही ॥ ९ ॥ तिहारे ते थाको हो, जव थयो धरि
यो ॥ ढे पां ते तले हो, ते बलद मुओ गलिओ
॥ १० ॥ तो पण ते जमनी हो, रोष न उतरीओ
दाध्यो विशेषे हो, जिम लहेरे दरिओ ॥ ११
महा क्रोधने पूरे हो, हृदयांतर रेल्यो, समकित
घाणे हो, तव ततखिण मेल्यो ॥ १२ ॥ तव मि
थ्यादर्शन हो, मोहादिकें मली ॥ गले फासीने हो
ते नाख्यो नरकेवली ॥ १३ ॥ तिमज भमाम्यो हो
भवनी कोमे गमे ॥ ते काल अनंते हो, आवे
लंचो किसे ॥ १४ ॥ पंचासमी ढाले हो, उदयरत
कहे ॥ समकित विना भवनो हो, कोइ न पा
लहे ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सम्यक् दृष्टि कुलें अन्यदा, धनंजय नृपने गेह ।
रुकमिणी नामे रागिणी, तेहनी कुषें धरयो तेह
पूरें मास प्रसविओ, कुबेर नामे कुमार ॥
श्रावक कुल जन्म्या भणी, समकित लाधुं भार॥२
सीघ्र कला साधी सवे, पाम्यो यौवन वेष ॥
तेज प्रतापें ते तपे, दुमरो जाणे दिनेश॥ ३ ॥
व्याघ्र नामा एक वाघस्यो, पल्लि पति अति प्रौढ
गंजे न को तस गढपती, नपुंसक जे मन वौढ ॥ ४
धनंजय धरपति तणो, दुर्ग वासित दुष्ट ॥
मुलक उजाडे महा वली, परिकर लेई पुष्ट ॥ ५
गरढेरे पण एहुने, आगे अछे अजीत ॥
वली पम्यो ते तिणि समे, भूरि पमाडे भीत॥ ६॥
कोईक देश दपटयो तिणे, बूंब सुणी तिणि वार।
ते ऊपर बाहर चव्यो, कुबेर ते राज कुमार ॥ ७ ॥
दैव योगें महा दुष्ट ते, आव्यो एहने हाथ ॥
कोईक भावी भोगथी, सकुटंब सहु साथ ॥ ८ ॥
ते दुर्गे निज दल थापिने, वरताविं निज आण ॥
आव्यो घरें वसट भरें, सहु जन करे वखाण ॥९॥

ढाल ॥ ५१ ॥

॥ चित्रोमा राणारे, ए देशी ॥

गुण गीत गवाते रे, महा महोत्सव थाते रे ॥ वहु विरुद्ध बोलाते. कुमर ते आविओरे ॥ सहु बोले श्ला घारे, आविने आधारे, ॥ दुस्मन दूर भागा, जन मन भाविओ रे ॥ १ ॥ तव अवसर जाणी रे, पितु आण प्रमाणी रे ॥ अमरप अति आणी, आव्यो ते कने रे ॥ देव गजेंद्रनो जात रे, विश्वांतर भ्रात रे ॥ नाह मोरा विख्यात, जग लहे तेहने रे ॥ २ ॥ अनंतानु वंधी मानरे, सैल राज राजानरे ॥ ए वे अभिधान, तेहना जाणो तमेरे ॥ तेहने अनुसर वेरे, भराणो ते गरवेरे ॥ मुखें इम वरवे, सूरा शिर छूं अमे रे ॥ ३ ॥ नयण गगनने गाएं रे, रोम कभा थाए रे॥सुर गुण न समाए,तेहना शरीरमां रे ॥ अहंकार अछेह रे, त्रिभुवनमां तेहरे ॥ न माए तिणि देह, थंभी रह्यो धरिमांरे ॥ ४ ॥ सहुकोने साखेरे, मुखथी इम भाखेरे ॥माहरांपिम पाखे, ए दुष्टने कुणहणेरे॥ रांकनी परें टरमेरे, अमारे घरढेरे ॥ राज्य कीधुं जरमे, न जी

त्यो किरणेरे ॥ ५ ॥ धन जय पण एहरे, वाणिक वृत्ति गेहरे ॥ वेगो रहे मेह धरी अन्न प्राणिओरे ॥ जो हुं न हुओ आमोरे, तो भावि भीजव मेरे ॥ इहां करी जाओ, किहारे हुए प्राणिओरे ॥ ६ ॥ गायुं जे गाओरे, ॥ इटले जे चाहेरे ॥ ते नर तिणि वाएं थई वाउलारे ॥ निज गाल फुलावीरे, बहु वात बनावीरे ॥ सहुने समफावी, कहे चर राउलारे ॥७॥ कुमरे कह्यो शिष्टरे, पोढो ए पापिष्टरे ॥ देवे पण दुष्ट, न जाए गंजीओरे ॥ देवने ए कुमाररे, वे वि ण निरधाररे ॥ एहनो अहीं वार, किणे किहारे भं जिओरे ॥ ८ ॥ एहवी सुणी टूलोरे, फूली थई चोलोरे ॥ निज वल लही वहुलो, कुकव तणी पेररे ॥ सहुने अण नमतोरे, दान देई मन गमतोरे॥ मृदु गुणने वमतो, पहोतो निज मंदिरेरे ॥ ९ ॥ मात तात ने गुरुनेरे, देवने श्रुत धरनेरे ॥ न नमे कवीश्वरने, मुखे बोले नहीं रे ॥ भूषण धरी भारी रे, निज तनु सिणगारी रे ॥ वेवक समारी, वेसे ते सही रे ॥ १० ॥ तंबोली वाजे रे, गह्वरस्थ दसुभ साजे रे ॥ पुरी समाजें, वोले वेतमां रे ॥

आशा वयणा रे, फेरवतो नयणा रे ॥ देखीने सय
णा. नें जुए हेतमारे ॥ ११ ॥ त्रिभुवन तृण तोलेरे.
गण तो इम बोले रे ॥ मुझथी सहि मोले. सुरपति
सारिखो रे ॥ इम निज परिकरमा रे, बेठो वरवि
घरमा रे ॥ नाणे केहने हरमा. न जूवे पारखोरे ॥
॥१२॥ एह एकावनमां रे. ढालें ते अनमी रे ॥
उदय वदे ननमी. आपे केहनेरें ॥ विद्या वंत ने
सूरोरे, दानेश्वरी पूरो रे ॥ विण गर्वे सनूरो. कहे
सहु तेहने रें ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

अवनिपति हवे एकदा. मोकलीने प्रधान ॥
पुत्रनी पासें मोकले. तेजई कहे तसु थान ॥ १ ॥
तेमे छे तुम तातजी. कुमरजी मिलवा काज ॥
आवो तिणे आसतजी. वाट जुए महाराज ॥ २ ॥
वासर बहु वही गया. दीठा तुम दीदार ॥
तरसें छे ते कारणे. जिम चातुक जलधार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ५२ ॥

हो मत वाले साजना मुझ कोई न छेमोवे, एदेशी॥
बोले कुमर ते बेतमा, मुख नाक तणुं आणि मरमीरे॥

मूछे वस देतो थको; वली नजर करीने क्रमी रे ॥ वो. ॥ १ ॥ काम किसुं छे माहरुं, अहो वलि एहने केणे रे ॥ संकटमां नाख्युं किसुं, तमे छ मुझने तेणेरे ॥ वो. ॥ २ ॥ जो एहवुं होय तो कहो. इंद्रादिक ने पण बांधीरें ॥ आणो सोंपुं एहने, सत्रु जाणी तक सांधी रे ॥ वो. ॥ ३ ॥ पण अमे नावुं को कने. अम पासें पण जो कोई रे ॥ नहीं आवे तो सुं थशे. सर्वे मेल्युं छे जोई रे ॥ वो. ॥ ४ ॥ काज किसुं किणे नीपजे. आखर महारा पिंम पांखेरे ॥ हूं अेहवो नथि कोइ देखतो. जे रणथंभने रा खेरे ॥ वो० ॥ ५ ॥ तव मंत्री कहे तेहने, जि हां वाजे तुम यस वायरे ॥ तिहांलगे महा राजा शिरें, शत्रु कोई ऊभो न थाअेरे ॥ वो० ॥ ६ ॥ जनक भगत अति जालमी, जगमांहे इक तूं जायो रे ॥ ताहरी जनिताअें तुं सही, सूरां शिरताज कहायोरे॥ ॥ वो० ॥ ७ ॥ पण अे न घटे बोलवुं, तुम सरिखा ने सुणो स्वामीरे ॥ पितु काजें पण आवुं नहीं, अे वात छे तुम खामीरे ॥ वो० ॥ ८ ॥

आर्या व्रत.

सोर्य सौदर्यवा, विया लक्ष्मीर्वच
,स्विता न्योवा ॥ सोभा नावहति ·
गुणो, विनया लकार परिहीणः ॥१॥

वसंत तिलका छंद.

त्यागो गुणो गुण सता दधिको मतो मे,
विद्या विभूषयति तं यदिक ब्रवीमि ॥
पर्याप्त मस्तिथदि सौर्य न पाह किंतु,
यद्यस्ति ते भुविनयः सगुणाधिराज ॥ २ ॥

श्लोक श्रे वे सचिवें कह्या, कुमरने सीखामण का मेरे ॥ कुमरे पण सुण्यो श्रढे, श्रागममा कोडक ठा मेरे ॥ वो० ॥ ९ ॥

यतः आर्या व्रत.

दुप्रतिकारो माता, पितरौ स्वामी
गुरुश्च लोकेस्मिन् ॥ तत्र गुरु रिहा
मुत्रच, सुदुकर वर प्रतिकारः ॥ १ ॥

इम श्रागल वलि काडेउचेर. तव कुमरने तिहा सै

ल राजेरे ॥ प्रेरयो तव बोल्यो फरी. गर्व नही समा जेरे ॥ बो ॥ १० ॥ रे ज्ञात दग्ध घमार तू, अमने सिद्धा सी आपेरे ॥ त्रिभुवन तत्व लहु प्रेमें, जो ते कोई अमसु जवावेरे ॥ बो० ॥ ११ ॥ तें माटे ताहरा बापने, लई सीखामण भाखोरे ॥ जिम था प्रे अ पाधरो, तणिम काई मति राखोरे ॥ बो० ॥१२॥ इम कहीने गले, झाली ने. काढी मेल्यो तव ते होरे ॥ जई कहे ते महाराजने, सबंध सवे धुर छेहोरे ॥ ॥ बो० ॥ १३ ॥ उदयरत्न इम ऊचरे, बावनमी अ में बोलीरे ॥ ढाल गुमानी लोकने. गमसे जो जो दिल खोलीरे ॥ बो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तव चिंतंते भूपती, अहो मुझ पुत्र अत्यंत ॥
अहंकारे ए आवरयों, जिरती कसि न लहत ॥१॥
राज तज्यु तिणे कारणे, वसव्यु मोहने राज ॥
हवे मुझने जुगतु नथी, साधु पर भव काज ॥२॥
इम चिंती अगज प्रते, रंगे देवा राज ॥
सामग्री सघली सजी, मोहे ते महाराज ॥ ३ ॥

ाष्य राखी ते गोलिसुं, प्रेखे वली प्रधान ॥
ानुजने एक दिन तेमवा, राग दसे राजान ॥
तेहा जई ते कहे तेहने, कोईक काज विशेप
ात तेमे ते तुमने, आवो सीघ्र क्षण एक ॥
हैल राजा संकेतथी, अनुक्रमे एके एक ॥
अपमान देई अवगएया, कुमरे मंत्री ठेक ॥
अवहेल्यो सामंत गण, ममलोके मेल्या धूल ।
जे जे आवे तेमवा, ते तोल लहे अकतूल ॥
तव तसु माता मोकली, निपट निभंछी तास ॥
पण पुत्र स्नेहे न ओसरे, अनेक करी अरदास
पाय पमी जिम तिम करी, माए महि पति प
अति कठे ते आणिओ, तव नृप थयो उल्हास

हारमां जी ॥ २ ॥ देश देशथी दूत, कन्या दान काजे सही जी ॥ राजवीए मन रंग, मोकल्या छे तुम गुण लही जी ॥ ३ ॥ पुरो मनोरथ तास, ए राज्य तुमारो संग्रहो जी ॥ अमे थासुं अणगार, प्र जाने तुमे निर्वहो जी ॥ ४ ॥ तव सैल राजि अव ऐह, मंत्र गुमानने मेलीओ जी ॥ तव भ्रकुटी च मावी भाल, उतर तिणे इम दिओ जी ॥ ५ ॥ रज सरीखो ए राज, सुं आपो तुमे अमने जी ॥ एवा तो राज संतेक, प्रगट करी दिउं तुमने जी ॥ ६ ॥ इम कही पगनो प्रहार, आसन ऊपर मारीने जी ॥ ऊठी नीसरयो बार, वन जावुं मनें धारीने जी ॥ ७ ॥ अयोग्य जाणी ततखेव, सम्यक् दर्शनने तज्यो जी. मोह राजाने साथ, तव सहसा आवी मल्यो जी ॥ ८ ॥ ए कलो अटवी मांहि, पहोतो ते तजि गेहने जी ॥ नील ना में लघु जात, राज्य दीधुं नृपें तेहने जी ॥ ९ ॥ पोते लेई संयमभार, शिव पद पाम्यो अनुक्रमें जी ॥ हवे ते कुवेर कुमार, एकलो अटवीमां भमे जी ॥ १० ॥ चित्र नामें चंद, ते व्याघ्र पल्लि पति सुत तदा जी ॥ युद्ध समें गयो नासि, ते वनमांहें वस्यो मुदाजी ॥

॥ ११ ॥ तेणे दीठो कुमार, तीरे मारयो तव ता किने जी ॥ पामी मरण अकाल, ते नरकें गयो मद ठाकिने जी ॥ १२ ॥ मगादिकनी गति मांहि, काल अनंतो घेरीओ जी ॥ त्रेपनमी ढालें तेह, उदय कहे उदें करियो जी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

महापुर नगरे मेलिओ, कर्मे ते वलि काढि ॥
धनाढय श्रेष्ठिने घरे, पूरो तेह धनाढि ॥ १ ॥

। ढाल. ॥ ५४ ॥

साहिबोरे माहरो फलि रह्यो भागोद्द, ए देशी ॥
पदम नामे तिहां थपिओरे, आजन्म थकी ते बा ल ॥ अनंतानुबंधि माया वलें रे, मायावी अति अ सराल ॥ पोढो रे प्राणी जो जो मायानो पास ॥ १ ॥ राग केसरी जी ते सुतारे, बहुली जस वीजुं नाम ॥ तेहने उदयें ते थयो रे, एक कपट कलानुं धाम ॥ पो॰ ॥ २ ॥ बालपणें पण बहु विधे रे, छोकरा नें छेतरी तेह ॥ खावुं धूती खाए सवे रे, जेहना ढ

सना नावे गेह ॥ पो. ॥ ३ ॥ साधु स्वभाव जाणे सहु रे, सुणि वचन तणा विलास॥ मोटो थयो तव मायने रे, वापने पण धामे पास ॥ पो.॥ ४ ॥ भाईने पण भोलवे रे, भगनिने भमामे जोर ॥ परिजनने पट दे घणा रे, करी कपट कला कठोर ॥ पो. ॥ ॥५॥ धूते धर्म दाता प्रतें रे, मित्रसुं मांमे महा कूम॥ देवनो पण खोटें दिलें रे, महास्तवना करी ते मूढ ॥ ॥ पो. ॥ ६ ॥ निवेद मोकले हरी रे, ध्रुंगलूणा घटा आदि ॥ कद्धांतर घाली गळे रे. माने नहिं किमे अपराध ॥ पो. ॥ ७ ॥ साचो किहांए न उतरे रे. कोइन लहे मन अभिप्राय ॥ वंच्याविण मेले नहीं रे. कुण परजन स्वजनने माय ॥ पो. ॥८॥ जनकादिक जाणे इश्यो रे. तेमी तेहने गुरु पास ॥ आवीने इम वचरयुं रे, एके अवधारो अरदास ॥ पो. ॥ ९ ॥ भगवन अमारे कुले रे, आजलगें एहवो कोय ॥ नर मायावी न नीपनोरे. सेवक पण एहवा न होय॥ ॥ पो. ॥ १० ॥ महेर करीने ते वती रे. एहवो आपो उपदेश ॥ मायावी पणुं मूकिने रे, कुल वटे चाले ए स विशेष ॥ पो. ॥ ११ ॥ चोपनमो ए

चेतजो रे. दाखें सहु धरमी लोक ॥ धूर्त पणुं जोतां धरा रे. आखर उपाएसोक ॥ पो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा. ॥

तव गुरु करुणा आणिने, धर्म कथा कहा धार ॥
माया शील मानव तणी, सहु मने धरे अघीर॥१॥
अपराध जो न करे किश्यो, तो पण सर्पनी पेर ॥
आशंका मन ऊपजे, सहुने जाणी जहेर ॥ २ ॥
मायावी वलि मानवी, अधम कुले अवतार ॥
मरि पामे महिला पणुं, दुरग रुले अपार ॥ ३ ॥
इम ते प्रति बोध्यो थको, दिन केता इक तांइ ॥
मूके मायावी पणुं, कांइक कर्म सहाय ॥ ४ ॥
मिथ्या दर्शन बल घट्यो, तव समकितनी सेव ॥
करतां दिन केतां गयां, हरखें सुणो सहु हेव ॥५॥

॥ ढाल ॥ ५५।

॥ समवसरण त्रिभुवन पति सोहे, ए देशी ॥
एक दिन तस उपाने विसवासें, पिताएं राख्यो ते पासे हो ॥ पोतुं सुंपी एक वासरे, जनक जमवा

निजघर ॥ पहोतो जिहारे उलट भरे, श्रोता सुण जो ते अवसरे ॥ जो जो पास मायानो ॥ १ ॥ घो मो खेलावतां नृपना करथी, मुद्रा रत्न पड्युं धरती हो, मूक लीधूं ते किणे, लेई देखाड्युं तिणे ॥ पदम ने हाट श्रेणे, देखि ओलख्युं एणे ॥ जो० ॥ २ ॥ अवसर जाणी पूर्व मायाए, तव ते प्रेरयो तिणे गाय्रे हो ॥ लेतुं अलंकार अेह, मुक बले सस्नेह ॥ ही अे हर्ष धरेह, दये उत्तर गुण गेह ॥ जो० ॥ ३ ॥ कथन धरयुं तेहनुं अेणे मनमां, तव मिथ्या दर्शन तेहना तनमां हो ॥ मोह सहित संक्रमिश्रो, तिहारे समकित रमिओ ॥ अल्पमूलें तव गमिश्रो, भूपण लीधो अण नमिओ ॥ जो० ॥ ४ ॥ तातने पण कांई न कह्यो कपोतें, पप्रछन्न राख्यो पोतें, हो ॥ तव भूपें ढंढेरयो, पुरमां फेरयो सवेरो ॥ मुद्रा रत्न अे मेरो, जे कोई आपे वहेलेरो ॥ जो. ॥ ५ ॥ ते निदोंष थई साबाशी लेसे, नहिं तो प्राण सहित मुद्रा देशे हो ॥ तव सारुं ते नगर, थयुं चिंतार्थे विगर, जिम आगमां अगर, थाय्रे बलीने फगर ॥ जो. ॥ ६ ॥ पासें सोय्रे ते कांई वात जणावी, ध

नाव्य सेवने आवी हो ॥ तव ते अेकांते धरी धरी. पूछे पुत्रने फरी फरी ॥ कांन ढांकी हे हरी हरी. अे सूं बोलो छो अरी अरी ॥ जो. ॥ ७ ॥ अेहवो कुण थई साहस भागी. मरण लिअे मुखें मांगी हो ॥ महर्द्धिक लोकें पितांअें ॥ पुर जन पमोसी मांअें॥ अनेक अनेक उपाअें. तेहने बुझव्यो त्यांअें ॥ जो. ८॥ जुनी वंसनी जमने त्यांएं. अभिप्राय तेहनो न ज णाअे हो ॥ इकदिन राज भंमारी, जवहरीमां शिर दारी ॥ तेहनो मित्र अेक भारी. प्रदेशी विवहारी ॥ जो° ॥ ९ ॥ कोईक काम विशेषे त्यांही. आव्यो छे उच्छाहें हो ॥ भंमारीने संकेतें. थई विणजारो हे तें ॥ पदम पासें ते प्रीतें. पहोतो कपटेंसुं रीतें ॥ जो° ॥ १० ॥ कहे ते तेमी अेकांते. सिंहलेस्वर भूकंते हो ॥ मुद्रारत्नने कामे. मुजने प्रेर्‍यो अे गामे ॥ जो होअे तमारे धामे. देखामो तो आवामे जो° ॥ ११ ॥ मूल मुखें तुमे मांगसो जेतां, अमे आप सु तेतां हो ॥तव ते पदम विचारे, अेहने आपे नि रधारे ॥ जासे देश उतारे, प्रगट नहीं थाअे किहा रे ॥ जो° ॥ १२ ॥ इम चिंती ते देखामे, जे हा

थें. राज पुरुष तिहां तेड्वे हो ॥ भंमरीनी ते साने पकमी आवी ते थाने ॥ न्याना सहित राजाने, जई संप्यो पदमाने ॥ जो० ॥ १३ ॥ प्राणांते लगि दी घो प्रहार, अनेक विघनो मार हो ॥ मरी काल अ नंत, भवमां भमिओ ते जंत ॥ पंचावनमी ए तंत, ढाल उदय कहंत ॥ जो० ॥ १४ ॥

॥ दोहा. ॥

जयपुर नगरे अन्यदा, श्रावक कुल श्रीकार ॥
घनदत्त धामें ते थयो, सुत सोमदत्त उदार ॥ १ ॥
सुकुल संयोगें पामिओ, सम्यक् दर्शन संग ॥
पण निर्धन धातो फरे, धन काजें धारि रंग ॥ २ ॥

॥ ढाल. ॥ ५६ ॥

चांदलिओने जंम्यो रे हरणी आथमी रे. एदेशी ॥
धनने कार्जे रे ते धातो फरे रे, संबल हीण सदीव रे॥ तैलादिक रे वाणिज करे वहोरे, आपद सहे अतीव रे ॥ ध० ॥ १ ॥ इणि परें करतां माया गांठमी रे. गरथनी कांइक गांठ रे ॥ घणे कालें रे वाजी तेह

ने रे, पाधरी आवी कोई आंतरे ॥ ध. ॥ २ ॥ व्यापार तिहां रे कणनो करे रे, तव राग केसरी थाए रे ॥ अनंतानुबंधे रे लोभ तिहां मोकल्यो रे, भव जेहनो भमवाय रे ॥ ध. ॥ ३ ॥ बहुली करी रे जे लघु बंधवो रे, सागर बीजुं जस नाम रे ॥ तनुज ते जाणो रे, राग केसरी तणो रे, तेहना तनुमां वश्यो ताम रे ॥ ध. ॥ ४ ॥ दामनी तिहारे रे सोमदत्तने रे, इछा बाधी उदाम रे ॥ वणिज वधारयो रे तव बहु भांतिनो रे, सहस्त्रपति थयो ताम रे ॥ ध. ॥ ॥ ५ ॥ लघु दुख सहिता रे थयो लखेश्वरी रे, दिन केता इक तेह रे ॥ कोमि लंख वेते रे वलि केते दिने रे, कोटि ध्वज थयो तेहरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ जिम जिम वाधेरे वैभव तेहथीरे, बमणो वाधे तिम लोभरे ॥ अगनि न ध्राभेरे जिम जग इंधणेरे, तिम लोभनो दीशे नहि थोभ ॥ ध० ॥ ७ ॥ अतिशय लोभेरे देवने अवगणेरे, गुरुसुं राखे ते गाढरे ॥ सेव्यो पण ना पेरे दमगी केहनेरे, कुमी काज करे राढरे ॥ ध. ॥ ८ ॥उपदेश देतारे मने आटी भजे रे, धर्मने कामे धरे ढीलरे ॥ पापने ठामेरे पुरुषातन

फोरवेरे, दान देतां करे अमखोलरे ॥ घ० ॥ ९ ॥
समकित तिहारे रे रह्यु वेगलु रे, मिथ्या दर्शनने मो
हरे ॥ सपरिवारेरे तिहां आवि वस्यारे, तव वाधी
तेहनी सोहरे ॥ घ० ॥ १० ॥ दिल दोमावी बहु
देसावर्मेरे, विधि विधिना व्यवसायरे ॥ मोटा
मोटारे तिणे तव मांमिआरे, जलवट थलवट
धाअेरे ॥ घ० ॥ ११ ॥ क्लेश साथेरे वाधी सं
पदारे, केई रत्ननी कोमीरे ॥ तृष्णा पुरो रे तिणे
मेली तदारे, अंगथी आलस छोमीरे ॥ घ० ॥ १२॥
उदयरत्न इणि परे उच्चरेरे, अे उपनमी ढालरे ॥ प
रखी जोतारे मोहना सैन्यमारे, लोभे भुंमो चंमा
लरे ॥ घ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

तो पण तृष्णा नवि मिटे, अर्थ उपायो जेह ।
रखोपु करतां तेहनुं, निद्रा नावे नयणेह ॥ १
रात दिवश झूरण रहे, लेपू जूए लखवार ॥
बसामिंना बच्चा परें, फेरवे अर्थ अपार ॥ २
बदाम कार्जे त्यजे बापनें, माने मूके दूर ॥

याचक लागे जहेरसों, भोजन न करे भूर ॥ ३ ॥
तोली मापीने गणी, जोई आपे तेह ॥
घण कष्टे घर खरचे पण, तिल पापम थयो तेह ॥४॥
खाए खोरू धान ते, नवुं न खाए रेप ॥
हाथो हाथे आपतां, प्रतीत न पामे एष ॥

॥ ढाल ॥५७ ॥

मोरा आदि जिन देव देखी तुफने आनंद भयो, एदेशी॥

मुसाई भाइने तिणे, एकदा निज आथे ॥ कोमे गामे सुखी किसे, लोभने पर माथे ॥ जो जो लोभना काम ॥ लोभ भूमो अेह ऊंमो दरिओ लह्यो ॥ १ ॥ नाणानुं ते लेखूं करतां, वहु कीया तव पंच ॥ पूरा न पमे तेहने काजें, थई पिचा पिच ॥ जो. ॥ २॥ पग वंधीने लेखूं करतां, वही गया दिन सात ॥ मुसाई ते मृत्यु पाम्यो, विसुचिका संघात ॥ जो.॥३॥ तव दुष्टमां सिरदार तेहने, लोक कहे ए लंम ॥ वल्या हाथनो विरुद एहवुं, वली कहे करचंम ॥ जो० ॥ ४ ॥ प्रसिद्ध अेहवी परवरीरे, आप्युं तेह

नु कोय ॥ हाथमां नफाले हाहा, लोभें लुसुं होय जो० ॥ ५ ॥ नगर मांहि अेकदा तिहां, मुंवो थयों काठ ॥ पिरनी महा खोटी पमी, नहीं आव्पानो घाट ॥ जो ॥ ६ ॥ सागेर तव प्रेरयो तेहने, कामें हलिइ लाभ ॥ हीमत हिए राखतां, तंमलि मांहे आभ ॥ जो. ॥ ७ ॥ तनुजने पण ते न धीरे,काई नापे काम ॥ रखे जाणे ए माहरो, दुष्ट वरे दाम॥ जो. ॥ ८ ॥ पांचसें सकट लेई, लोभने उच्छाहिं॥ स्वजन लोके वारता रे, गयो अटवी मांहि ॥जो.॥ ॥ ९ ॥ काष्ट तिहां मजूर कापे, अरहा परहाके क्यांहि ॥ एकाकी तें आप जई, वेगें तरु ग्राही ॥ जो. १० ॥ दैव योगें दुष्ट तिहां, आव्यो एक वाघ ॥ देखी सोमदत्तने तिणे, मारयो जई लाग ॥ ॥ जो. ॥ ११ ॥ विलपतो विलुरी नाख्यो, नखे नस ताणि ॥ एकेंद्रियादिक मांहि जई, उपनो ते प्राणि ॥ जो. ॥ १२ ॥ भवनी ते कोमें भमिओ, काल अनंत ॥ उदये ए ढाल कही, सतावनमी तंत ॥ जो. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

समकित दुर्लभ पामिने, इणि परे वार अनंत ॥
बल हीणो ते वापमो, जगमां हारयो जंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥५८॥

सु साधु गुरुसमोरे मन माने, ए देशी ॥

किहां एक रागे किहां एक द्वेषे, किहां एक अनं तानुबंधि ॥ क्रोध मान माया लोभ योगे, समकित न सक्यो संधि ॥ जगतमां जो जो मोहनो जोरो ॥ १ ॥ वीजे पण एहवे भव बहुले, पामी ने नीगमिओ ॥ समकित सुरतरु सरिखो सहेजे, दुर्गति दुखे तिणे दमिओ ॥ जो. ॥२॥ किहां अेक संका दोष संयोगे, अने वली अतिचारे, कियां एक क्रोधी कामे विकारे किहां एक कुटंबने भारे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ किहां एक वलभ तणे वियोगे, धननी सा दिक सोगे ॥ किहां एक परदल भय प्रयोगे, किहा एक रागने योगे ॥ ज० ॥ ४ ॥ किहांएक दुगंछा दरिद्र भावे, पुरुषस्त्री नपुंसक वेदे ॥ किहां अेक

संग व्यसनने रंगे, किहांश्रेक कुशास्त्रने भेदे ॥ ज. ॥ ५ ॥ इम थतेके काल अनंते, नर भव लही ल ही हार्यो ॥ समकित रतन चिंतामण करथी, से सार तिणे वधार्यो ॥ ज० ॥ ६ ॥ मोह राजाने जोरे करीने, सम्यक् दर्शन सार्थे ॥ पुरी जिहां ति हां न प्रीति बंधाणी, तिणे दुःख लह्या तेह अनार्थे ॥ ॥ ज० ॥ ७ ॥ क्षेत्र पलोपम असंख्यात भागें, प्र द्रोश रासि प्रमाणे ॥ समकित फरस्या पर्गी ल्यो प्रोढी, भव कीधा ते प्राणी ॥ ज० ॥ ८ ॥ अठा वनमी श्रे ढाल बोली, उदयरत्न कहे आगे, ॥ सबंध ए सावधान थईने, श्रोता सुणजो रागें ॥९॥

दोहा. ॥

विजय पेट पूरे अन्यदा, धर्म श्रेष्टिने गेह ॥
सुंदर नामे सुत तपनो, जीव संसारी तेह ॥ १ ॥
सुगुरु समीपे श्रुत सुणी, समकित धरी सुजाण ॥
विचरे जिन मारग विधे, धरतो वृत पचखाण ॥२॥
कर्म तव करुणा करी, धर श्रुत अध्यवसाय ॥
तदरूप करवाल तसु कारि, आप्युं तिणे वाय ॥३॥

मोहादिक महा शत्रु जे, तरीर तणा तिणे ध्वंस ॥
अविकृतर छेदे तदा॰ करतो कर्म प्रसंस ॥ ४ ॥
मीना कुल भागा तदा, अप्रत्याख्याना तरण ॥
कषाय ते करवालथी, जिम सिंह आगे हरण ॥५॥
सम्यक् दर्शन तव सचिवे. सु गुरु पासे लेह ॥
चारित्र धर्म महा चक्रवर्त्ति॰ देखामयो नयणेह ॥६॥
गुरुए तव गुण तेहना कह्या, चारित्र धर्मने जेह ॥
सुविधि सेवि सहजे लहे, सुर नर शिव सुख तेह ७,
वली विशेषे वर्णव्या, गुर राजे गुण तास ॥
तव सुंदरे सो स्वामी करयो, अंगे धरि उल्लास ॥८॥

॥ ढाल. ॥ ५९ ॥

॥ कर जोमी रहो. ए देशी ॥

समकित धारी सांभल्यो, चारित्र धर्म भूपालरे ॥ यो
ग्य जाणी तव तेहने: परणावी उजमालरे ॥ स०॥
॥ १ ॥ देश विरति लघु कन्यका, तेहने संगेत धारेरे
नाहक त्रस जीव नवि हणुं, दुविधि त्रिविधि किहोर
रे ॥ स॰ ॥ २ ॥ स्थूल प्राणीने जालवुं, वलि वर
जु अतीचाररे ॥ बंध बंधन छेदन नवि करुं, न भरुं

वधतो भाररे ॥ स० ॥ ३ ॥ भात पाणि रोकू नहीं. श्रे पांचे मन सुद्धिरे ॥ अतिचार ते पाले सदा. वृत राखवानी बुद्धिरे ॥ स० ॥ ४ ॥ इम करतां हवे श्रे कदा. पिता तेहनो पर्हतोरे ॥ तव घरना कारभारमां सुंदर रहे ते भीनोरे ॥ स० ॥ ५ ॥ अवसर तिहारे श्रोलखी. पासें तेहने प्रेखीरे ॥ स० ॥ निस्तूसता मां हादिकें. जे वृतने नाखे उवेखीरे ॥ स० ॥ ६ ॥ तसु संगे ते आदरे, निर्दय पणुं अतागें रे ॥ संगावे ते लोकने, धन जे पासें मांगे रे ॥ ॥ स. ॥ ७ ॥ वध बंधन ताडन करे, कोइ मरी अकलाए रे ॥ इम करतां निर्धन थयो, तव राज्य का मूलें घाश्रे रे ॥ स. ॥ ८ ॥ तव हिंसा प्रगटी जेहसुं, अप्रत्याख्यानावरण रे ॥ क्रोधादिक पण थया छता, अधम जेहना आचरण रे ॥ स० ॥ ९ ॥ तव वृतनी भागी वासना, वंधने केहने बंधे रे ॥ तामे तरजेने हणे, धर्म त्यजि पमयो धंधे रे ॥ स. ॥ १० ॥ देश विरति दुलही तदा, असवी रही तेहथी रे ॥ पण कुलक्रम मूके नहीं, छूटी न सके जेहथी रे ॥ स. ॥ ११ ॥ देव वंदे देहरासरे, पडुपा

ती थई पूजे रे ॥ दर्शन करे दिन प्रतें, दिल नवि राचे दूजे रे ॥ स. ॥ १२ ॥ नरके न गयो ते व्रती पण दे विरति विराधी रे ॥ वलि समकित विराधिउं, तेणे मरीने ते अपराधि रे॥ स. ॥ १३ ॥ भुवन पातिमां उपनो, हीन जाति थयो देवरे॥ भव अनंता वलि भम्यो, ते जाणे जिन देवरे ॥ स० ॥ १४ ॥ उदयरत्न कहे अहो भवी, ओगणसाठमी ढालेरे ॥ समकितथी चुको रखे, जेणे पामिये भव जालेरे ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सालिभद्र विवहारिओ, समकित दृष्टि तास ॥
अंगज ते थयो एकदा, मणि भद्र नामें तास ॥१॥
समकित तिहां सहेजे लह्यो, देश विरति वारे दार॥
स्थूल मृषावाद विरमणा, व्रत करयुं अंगीकार॥२॥

॥ ढाल ॥६०॥

॥ सूं करियें जो मूलज कुडुं, ए देशी ॥
कन्या गो भुमि थापण मोसो ॥ कुमो सांखने कुमो दोसो ॥ इत्यादिक जे जूठा मोटा ॥ द्विविध त्रिवि

घ न बोले खोटां ॥ १ ॥ बीजो व्रत साधे इणिं भा
ते ॥ अतिचार पांच त्यजे मन खाते ॥ सहसात
कारे आल न बदे ॥ स्वदार तणु वलि गुह्य न खो
ले ॥ २ ॥ कूमो उपदेश ने कुमो लेख ॥ अज्ञात
कांइ न बोले विशेष ॥ ए पांचे अतिचारने त्यज
तो ॥ व्रत बीजाने रहेते भजतो ॥ ३ ॥ अेक दिन
जनक गयो अन्य हाटे ॥ कोइक वस्तु लेवा मा
टे ॥ तव मोहादिक पमामवा क्षोभ ॥ अप्रत्याख्या
नावरण जे लोभ ॥ ४ ॥ मृषावाद आदे भट सोई॥
तेह पासे मेल्या तक जोई ॥ तेह तणे आगमने
अेह ॥ वणिज काज वदे अलिक अछेह ॥ ५ ॥
पामोसीनुं वस्त्रादिक ल्यावे ॥ बमणो लाभ ते पोते
खावे ॥ पोतानुं आपे परहाथे ॥ बहु मूल खावा
पर माथे ॥ ६ ॥ ग्राहक जो पूछे सुणि सेठ ॥ सुं अे
हनुं मूल लेसो नेट ॥ तव ते कहे अमे कह्यो जे
तो ॥ सोगन सेती लेसुं तेतो ॥ ७ ॥ तव ग्राहक
कहे बोलोने साचुं ॥ अेक मूल कहो तो अमे राचूं॥
तव कहे कहुं छुं निरधार ॥ अेतामांहि नहीं फेरफार
॥ ८ वारु तमे अे लेसो केते ॥ ग्राहक कहे अमे

लेसुं ध्येते ॥ तव सेठ कहे श्रे मूलें जो आपुं ॥ तो घर ध्रमें मुं ग्रहणे थापुं ॥ ९ ॥ इत्यादिक बोली वं कांई ॥ भोला लोकने मेले वाई ॥ मनसुं मूल ते साचुं मानी ॥ लाभ आपी ते जाए अज्ञानी ॥१०॥ उदय रत्न कहे सातमी ढालें ॥ जिम तिम लोक ने नाखे जालें ॥ लोभिओ नर जगमा लखवातें ॥ पण जे कारि ने लहे दिन रातें ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

समय लही सागर तदा, इम तसु दे उपदेश ॥
जूठुं तूं सुं जंपतो, संकाएं सु विसेस ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ६१ ॥

गोकुल घामनें गुंद रे रे. ए देशी ॥

जूठू बोलतो जोखमां रे, मलि मालि सुं करे मांम ॥ माहरा वाहला रे ॥ मृपावाद वदे इस्युं रे, लोभे भेरयो ले वंम ॥ मा.॥ जू. ॥ १ ॥ फेरव्यो तुंहोसे फारसुं रे, नथी लहतो कांइ न्याय ॥मा.॥ घरनुं खरच बहु उमे रे, प्रचूर भांमा भराय ॥मा.॥ जू. ॥ २ ॥ वाणो

तरी वली आपवी रे, करवा भोगोपभोग ॥ मा.॥ वेसे राणि बहु बाजारमां रे॥ जोमवा विवाहादिक योग ॥ मा॰ ॥ जू॰ ॥ ३ ॥ साचूं बोलतां सुखिया रे, लहियें न लाभ अपार ॥ मा. ॥ अलिक अछे अकूप निधिरे, केतेक वामे निरधार ॥ मा ॥ जू.॥४॥

॥ यतः श्लोकः ॥

वाणिज्ये परमो नीवी, वेस्यानां
परमो निधिः ॥ लिंगीनां परमाचारः
मृषावाद नमोस्तुते ॥ १ ॥

जूठूं बोले बीजा बहु रे, तेहनी थासे जे पेर ॥मा.॥ गति थासे ताहरी पण तेहवी रे, वणिजने साचने वेर ॥ मा. ॥ जू. ॥ ५ ॥ ते पण काने कांई तूं धरे रे, जे मुखथी वके ए मूम ॥ मा. ॥ पर घर सुरा पिमिया रे, अखंम एहना पारखंम ॥ मा. ॥ ॥ जू॰ ॥ ६ ॥ नघर वारा नकरा सदा रे, सुखें आपे ए सीख ॥ मा. ॥ पण कह्यो एहनुं जे करे रे, ते आखर मांगे भीख ॥ मा. ॥ जू. ॥ ७ ॥ माधु मुमन्युं जो होय रे, तो मुमना मानियें वयण ॥ मा॰॥

सोहेलुं न रहेउं संसारमां रे, जोने उघाडिने नयण ॥ ॥ मा० ॥ ज० ॥ ८ ॥ उपदेश तेहनो ते सांभली रे, अलिक बोले निशंक ॥ मा० ॥ व्रत भागुं वी से विसारे, देश विरति नाठी लहि वंक ॥ मा. ॥ जू. ॥ ९ ॥ देव पूजादिक आचरेरे, अनुक्रमे पुरि ते आय ॥ ॥ मा० ॥ हीन व्यंतर ते उपनोरे, समकित भ्रष्ट माहिमाय ॥ मा० ॥ जू० ॥ १० ॥ किहा मुगो किहा बोबमो रे, कंठ तालु जीभ दंत ॥ मा० ॥ अधुर रोग दुर्गंधतारे, एहवा मुख रोग लहंत ॥ ॥ मा० ॥ जू० ॥ ११ ॥ किहां ए बोल्युं गमे न हिरे, दुस्वर सहुरहे दूर ॥ मा० ॥ नर भव पामी एहवा वहुरे, पीमा दीठी प्रचूर ॥ मा. ॥ जु. ॥ १२ ॥ नर्क तीर्यचमा ते भम्योरे, एणीपरें काल अनंत ॥ ॥ मा० ॥ ओकसठमी ढालें उदय वदेरे, जुवे वा ह्यो ते जंत ॥ मा० ॥ जू० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

एक दिन ते वासि रूपनो, वणिक श्रावकनो पुत्र ॥
सो मनमें अति सुदरुं, समझे सघला सूत्र ॥ १ ॥

धण कण सोवन रजत रस, इंधण वसन तृण आदि ॥
बादर अदत्त न आदरे, दुविधि त्रिविधि आल्हाद ॥२॥
त्रीजो वृति तजि सर्वथा, स्थूल अदत्ता दान ॥
अतिचार पंच वरजे तदा, तेहना थई सावधान॥३॥

॥ ढाल ॥ ६२ ॥

हरि गुण गातां लाज लागे तो लागजो रे, ए देशी॥
चोरनी आणी वस्तु न ल्ये चित्तसुं लही रे ॥ न ल्ये चित्तसुं लही रे ॥ चोरीने काजें किहां रे, सहाय्य वली आपे नही रे॥व० ॥ १ ॥ उलंघे न राज्य विरुद्ध, आपद पद ते कदा ॥ आ० ॥ कूमा तोलने कूमा मापके, वरजे ते सही ॥ व. ॥ २ ॥ सरसमा निरस न भेलि, क्रियाणां केलवी रे ॥ क्रि. ॥ त्रीजूं वृत पाले तेहके, इम न मने लवीरे ॥ इ. ॥ ३ ॥ बहुली सागर वहंते, अप्रत्याख्यानिआरे ॥ अ. ॥ तिणे भं नेरयो तेहने. राय संतानीयां रे ॥ रा. ॥ ४ ॥ तव वृतने विराधी तेहके, पूरवनी परे रे ॥ पू. ॥ धयो हीन जाती देव, पीभयो पापने भरे रे ॥पी. ॥ ५ ॥ भवांतर भमिओ भूर. दरिद्रे दामिओरे ॥

॥ द० ॥ वलि श्रावक कुल अवतार, ते प्राणी पा मिओरे ॥ ते. ॥ ६ ॥ दत्त नामें तिणरे देव. तिर्यंच नारी पणुंरे ॥ ति. ॥ दुविधं त्रिविधं लीधुं नीव वली, आगें भणुंरे ॥ आ. ॥ ७ ॥ मनुप महिलासुं संगके, कायाएं करीरे ॥ का. ॥ न करूं हुं निर्धार लही, दुखनी दरीरे ॥ दु. ॥ ८ ॥ इत्वर परिग्रहता, अपरि ग्रहता तजेरे ॥ अ. ॥ अनंग क्रीमा. अपरासि, जा णी नवि जे भजेरे ॥ जा. ॥ ९ ॥ जोमे न पर वीवाहके, महा दोप जाणिनेरे ॥ म. ॥ विपयनो तीव्राभिलाप वरजे, हित आणिनेरे ॥ हि.॥ १० ॥ इणिपेरें चोथुं व्रत लई, आराधतां रे ॥ आ. ॥ के तो गयो तसु काल के, समकित साधतां रे ॥ स. ११ ॥ पुरुप वेदोदय तीव्र, तिणे योगें करीरे ॥ ति. ॥ व्रत ने विराध्या तेह के. आयु अंतें मरीरे ॥ आ. १२ ॥ पूर्व परें हीन, देव तणी योनी गछे रे ॥ दे. ॥ भव मां भमियो भूर ते. क्लीव थई पछेरे ॥ क्ली. १३ ॥ बोली बासठमी ढाल. ए उदय ऊचरेरे ॥ ए. ॥ ध न्य सदा नर तेहजे. धर्म हृदे धरेरें ॥ ध. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

उपनो पुनरपि अन्यदा, धन बहुल इणि अभिधान ॥
समकित धारी श्राद्धते, पंचम अणु व्रतवान ॥ १ ॥
षेत्र वास्तु रूप्य हेम धन, धान्य द्वि चतुष्पद कुप्य ॥
परिमाण तेहनु तेह करे, चितमांही धरि चूप ॥ २ ॥
योजन दान बंधन वली, कारण भावादिक ॥
अतीचार ए पांचे प्रथक, तेहना लहो तहकीक ॥ ३ ॥
दुर्गम कांई लही एहनो, विवरी कहुं विचार ॥
सभाजन सहु सुणजो तुमें, नेहेंसुं नर नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ६३ ॥

॥ गामी रागें जकमी, ए देशी ॥

षेत्र वस्तु प्रमाणथी, अधिक तणी इछाए जी ॥ पा सेनां लेई प्रेमसुं, एक करें उछाएं जी ॥ आगल पाछलनां ग्रहे उछाएं, एक करे जे योजना ॥ वामी वरमी टालिने ते, भावेंसुं सुणो भवि जना ॥ अतिचार पहेलो एह भाख्यो, पांचमें व्रत शुभ म ती ॥ अतिचरी जे अधिक लोभें, षेत्र वास्तु प्रमा

एथी ॥ १ तार अने सोना तणो, नियम करे जे ने हे जो ॥ चोमासादिक समय लगे, अधिक न रा खुं अहें जी ॥ अधिक न राखुं एहथी, इम नेवमी मने अर्गला ॥ पछे नृपादिक मोज योगें, आथ पामी अर्गला ॥ स्वजनादिकने सोंपी ते फरी, संग्रहें धारे मोह घणुं ॥ इणि परें थाए नियम दुहुलुं, तार अती सोना तणुं ॥ २ ॥ धन धान्यादिक मान जे, वलंगे अति लोभे जी ॥ वृद्धि देखि मुर्छा लगें, मनमां जाए न थोभें जी॥ मन न थोभे लाभ जाणी, पोतानुं कारि पर घरें ॥ थापि तथा निज जनने, आपे इम वहु बंधन करे ॥ मुंभादिक वलिवांधे मोटा, इणि विधे अज्ञान जे ॥ अतिचरी अतिचार त्रीजे, धन धान्यादिक मान जे ॥ ॥ ३ ॥ द्विपद चतुष्पदमां नथी, जे तृष्णाने जोरें जी ॥ प्रसव लही पशु वाललनो, अवधि अपूगे चि त चोरें जी ॥ चित चोरीधरी पर घरे इम, कारणे अ वसर लही ॥ पछे आणे घरें पोताने, निदानी अव सर लही ॥ अतिचार चोथो एह भीलयो, गुरु व चने ज्ञानथी ॥ लोभें जे इम मन न भगावे, द्विपद

चतुपदमां नथी ॥ ४ ॥ कुप्य सयनासन आदिदे, भाजन सत्र कचोलां जी ॥ दश पंच ते मेली मोकलां, बाकी नियम बहुलां जी ॥ वृत उपहरे वृद्धि देखी, भंजावी ने घाट ते ॥ स्थूल घमावे तजी थिरता, पण जाणो उवाट ते ॥ जिम तिम करीने संख्या पूरी, पण पूराए भेव आपदे ॥ इम रंग वसे जे अधिक राखे, कुप्य सयनासन आ दि दे ॥ ५ ॥ ते पण बहु दिन पालिने, सागरने उपदेशे जी ॥ स्थूल परिग्रह परिमाण ते, वृतने भांगी विसेसे जी ॥ वृतने भांगी भम्यो भवमां, पूरवनी परे वली ॥ दिग परिमाण पण तिमज कि हारें, पम्यूं सागरने मली ॥ भोगोपभोग पण तिम ज भागुं, अनर्थ दंम उसालीने ॥ नाख्युं धर तिम सा मायक वृत्त, ते पण बहु दिन पाली ने ॥ ६ ॥ वली लेई विराधियां, देसावकासिक आदे जी ॥ दशमुं अग्यारमुं बारमुं, वृत विषयादि प्रेमादेजी ॥ प्रमादे पोषधोपवास, वृत विषमीको भवी ॥ अतिथि सर्व भाग भागों, अदत्त गुणने अनुभवी ॥ हास्य विक था रौद्र आरति, ध्यान योग भ साधियां ॥ विषय

कषाय ने राग द्वेषें, वली लेई विराधियां ॥ ७ ॥ इणिपरें भमतां तिणे, वे त्रण पांच चार जी ॥ व सात आठ कोइक नवें, नव दश अग्यार नें बार जी ॥ बारे वृत धरी बहुल नेहे. वलि वलि मोहने वशे ॥ विराधीने वमी समकित. दुःख दीठा दुरिग त थशे ॥ अनुभवी महा आपदा. मुखे कही न जाए तेकिण ॥ ढाल त्रेसठमी ए उदय भाखे. इणिपरें भ मतां तिणि ॥ ८ ॥

कर्म ग्रंथादिक ते भणी. तात तणा सु पसाय ॥ ५ ॥
वृत बारे वलि आदर्या, टाले तसु अतिचार ॥
ज्वाले कर्म कषायने. पाले शुद्धाचार ॥ ६ ॥

। ढाल. ॥६४ ॥

आदि जिणेसर वीनती. ए देशी.

तव मोह बेठो निज आसने. एक दिन इम आलो चेरे ॥ अहो अहो ए वंचो चढो, सुं करशुं एम सोचेरे ॥ १ ॥ मोह राजा मने खोभियो. देश ने रखे दिलगीरीरे ॥ तव सचिवादिक सहु मली. कहे भापो मन हीरोरे ॥ मो० ॥ २ ॥ तव मोह नृप बोल्यो मुखें. सुं पूछो छो सचिवोरे ॥ रोहिणी दिशे थई रागिणी. आरे आपणासुं अतीवो रे ॥ ॥ मो० ॥ ३ ॥ ते हवे किम वसे आवसे. आपणे एम सुणोनेरे ॥तव हसि बोल्या ते सहू. आरियणने अवगणिनेरे ॥मो०॥४ ॥ निवम सहु जग तिहां लगें.प्रभु जीतम एक पावेरे ॥जे न पहोचे जिहां लगें, अे शुंवो ल्या तमे आजेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥ तव मोह कहे तिहां मोकलो, कोईक अेहवो जोरावोरे ॥

ढी वाले तेह ने, देखाडी निज चालोरे ॥ मो० ॥
॥ ६ तव ते कहेवा करे तेहने, इम सुणिने तव
आपेरे ॥ उभी थई इम ऊचरे ॥ विकथा निज बल
व्यापेरे ॥ मो० ॥ ७ ॥ प्रसाद करीने प्रभु, आ
पो मुफने आदेशोरे ॥ प्रमाण पेखुं हुं तेहनुं, तिहां
जई ने सुविशेषोरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ तर तरी देखी
तेहने, प्रधानादिके प्रेरीरे ॥ तव तसु पासें जई ति
णे, ततपिण लीधो घेरीरे ॥ मोहराजा मन रीझि
उ० ॥ ९ ॥ चार रूपें चतुरायई ॥ विकथा योगि
नी वारुरे, वदन वसी जई तेहने, क्लेश करी दी
दारुरे ॥ मो० १० ॥ चोसवमी अ ढालमां, वद
य वदे अआंटीरे, ॥ मोटी मोह राजा तणी,
मुगती जातां ढे घांटीरे ॥ ॥ मो० ॥ ११ ॥

॥ दोहा. ॥

तात घरें रहता तिहां, भलां वसन भोजन ॥
पामे परिघल रोहिणी, जो जो करे सहु जन्न ॥ १ ॥
काम काज न करे किश्युं, अरति न एक लगार ॥
मात पिता सुपसायथी, को न कहे तुंकार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ६५ ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, ए देशी ॥

देव भूवन तव गए थके जी, ठलट आणी कर ॥ वात प्रीय कोई प्रेखीने जी, देव वंदना त्यजे दूर ॥ ॥ १ ॥ विकथा निरसें चाहें रोहिणी जी, पोते जइने तेह पासे ॥ वेसामी ने बोले इश्युं जी, ए मेहेली सुण तुझ आवासे ॥ वि० ॥ २ ॥ आज ए तुम घरें नीपनुं जी. काज कर्यो मुने केणे ॥ ते कहे श्रीलिक ए उचर्युंजी, तुझ आगल सहि तेणे॥ ॥ वि० ॥ ३ ॥ तूं वारुरे माही वंदे रोहिणी जी. मुझने पण थोलवे छे माम ॥ सा कहे समकण विना सही जी. जिम तुं तुलवेछे भाम ॥ वि. ॥ ४॥ इम उत्तर पडुत्तर आपतांजी. वढवामें आव्यो तां पार ॥ तव वीजासुं राज कथा करे जी. विकथाएं वाही अपार ॥ वि. ॥ ५ ॥ ते पण घर गई थाकिने जी. तव त्रीजासुं तेणे सराग ॥ पुरुष स्त्रीनी प्रारंभी कथा जी, ते सासारियाने भये गई नाग॥वि०॥ ॥ ६ ॥ चोथीसुं चाहीने तेकरे जी, भक्त कथा ति

हां भूर ॥ इम पांचमीसुं देशकथाकरे जी, आवे तव शिर पर सूर ॥ वि, ॥ ७ ॥ इम आचरतां विकथा अनुदिने जी, कोई श्रावक कहे अेक दिन्न ॥ कर जोमी तेह कामनी प्रतें जी, भद्रे आवी देव भुवन्न ॥ वि० ॥ ८ ॥ अेक मने त्यजिने आसातना जी, नमवुं घटे नाथने पाय ॥ ते वंदनातो रहि वेगली जी, किम कहो छो कर्म कथाय ॥ वि० ॥ ९ ॥ तव उत्तर आपे ते तेहने जी, बंधव बीजे को काम किहारे को नवि मले केहने जी, केहने को न जाअ धाम ॥ वि० ॥ १० ॥ प्रिय मेलो थाअे अेथानकें जी, तेणे सुख दुःखनी कुण अेक ॥ पासवमी अेढाल वातथी धर्मने कर्मनी जी, वात थाअे विसराल ॥ वि० ॥ १२ ॥

दोहा ॥

उपाश्रय पण अजा तणे, सहेजे ताजि व्याख्यान ॥
जेते श्राद्धी सुं करे, विकथा तेह सदाय ॥ १ ॥
साधु श्रावकने श्राविका, साधवीना सुविशेष ॥
अवर्णवाद मुखें उच्चरे, अनुदिन तेह विशेष ॥२॥

नवं सोखामण ये साधवी, भद्रे भणतर सर्व ॥
जाए छे तुझ वीसरी, जिम गुण जाए गर्व ॥
एह भवे दुःख दायिनी, केवल कष्ट निवास ॥
एहवी कथा कीधे सुं होय, अनर्थ दंभ आवास
सदनं जे संपत्ति तणुं, मुक्ति पुरीनुं मूल ॥
शुद्धा सम ते स्वाध्याय करे, अहनिशि थई अनुकूल ५

॥ ढाल. ॥ ६६ ॥

जोसीयमो जाणी जोस विचार, ए देशी ॥
मुह मरमी तव ते कहे रे, साधवी जी सुणो वात॥
साधुजने पण सर्वथा रे, विकथा न वरजी जात ॥१॥
गुरुनी जी मति मति म करो मांम॥ आंचली ॥
न गमे मुने पाखंम ॥ गु. ॥ न तजाए अनर्थ दंभ॥
तो जीभ थाए सत खंम ॥ गु॰ ॥ २ ॥ मुहपतिए
मुख बांधिने रे, तुमे बेसो छो जेम ॥ गु. ॥ तिम
मुखे ऊंचो देईने रे, बीजे, बेसाए केम ॥ गु॰ ॥
३ ॥ मुख बांधी मुनिनी परे रे, पर दोष न वदे प्रा
हिं ॥ गु. ॥ साधु विना संसारमां रे, क्यारे को
दीठो क्यांहि ॥ गु. ॥ ४ ॥ सरल पणे अमे सहीरे,

जेवूं देखुं ज्यांहिं ॥ गु. ॥ परने पण मुख ऊपरें रे, तेहवूं भाखुं त्यांहि ॥ गु. ॥ ५ ॥ कपट न जाणुं केलवी रे, अवरां परे एक रेख ॥ मुह रखतो सगा वापनी रे, वात न जंपु विशेष ॥ गु. ॥ ६ ॥ कोरुं सोवूं सो कोई रे, पण अमे अमारी टेव ॥ मरणां तें मूकूं नहीं रे. जो दुहवाए देव ॥ गु. ॥ ७ ॥ सदउपदेश नवि सद्दहे रे. अयोग्य वपमी एह॥ अजाण जाणी तव अजाण रे. उवेखी मेलो तेह ॥ गु. ॥ ८ ॥ संकांतजी सा एकदा रे, श्रुत सुणतां गुरु पास ॥ वस्त्रें वदन आछादिनेरे, मुसकें मुकति हास्य ॥ गु. ॥ ९ ॥ जण श्रवणे जू जआ रे, अनेक वदे अवदात ॥ लख लख करतो तें करीरे, वखाण मांहे व्याघात ॥ गु. ॥ १० ॥ मोती महीषी तलावनुं रे, जल जिम मोले जोर ॥ तिम वखाण मोल्युं तिणेरे, सभा जनसुं करी सोर ॥ गु. ॥ ११ ॥ सारथ वाहनी सुता लहीरे, कोइ न वारे कांइ॥ तिम तिम बमणो तें थइनेरे, वलतो लाजे नांहि ॥ गु. ॥ १२ ॥ जो गुरुवादिक वारे कदारे, तो ग्रामो कहे तनु भीम ॥ भगवन हूं वगनो परेंरे, बेसी रहूं गुख वीम ॥ गु. ॥ १३ ॥

पण पडुत्तर पूछ्या तणोरे, जो जिम न देवाय ॥ तो लोक सहु मुगी कहेरे, ते बीके काइ बोलाय ॥ गु. ॥ १४ ॥ अयोग्य जाणी सर्वथारे, गुरें पण मेह ली उवेख ॥ तव निशंक मुखे मोकलेरे, विकथा करे विशेप ॥ गु. ॥ १५ ॥ ढालतमी ढालें जुओ रे, वातें विणसे काज ॥ आखर उदय रत्न कहेरे, वातें विघमे लाज ॥ गु. ॥ १६ ॥

॥ दोहा. ॥

विकथाने जोरें करी, वीसरयुं विद्या पूर ॥
अर्थ पण आगम तणा, दिलथी तव थया दूर ॥१॥
व्रत मेल्या वीसारिने, आलोए नाहिं अतिचार ॥
प्रमादें न नमे देवने, न गमें नियमाचार ॥ २ ॥
भणतां मन भेदे नहीं, धर्मे न धाए चित्त ॥
पडिकमणु अनादर पणे, करे विकथाए सहित॥३॥

॥ ढाल ॥६६ ॥

॥ करे लमा घमी देरे, ए देशी ॥
कोइक साथे एकदा, विकथा कोइ कुठाम ॥ मग

न पणे मांमी तिणे, केवल जाणे क्लेशने काम ॥१॥ अणतुं आल न दीजिये रे, आले थाये उत्पात ॥ वरजो विकथा वात ॥ तजो पियारी तात ॥ अ० ॥ २ ॥ रखे कोई इहां शांभले, न रह्यो ते उपयोग ॥ विकथाने वस परवसे, सहसा वदे सुणि लोग ॥ अ० ॥ ३ ॥ पटराणि ए पुरनाथनी, अति दुःसीला दुष्ट ॥ सम्यग हुं समझुं अछुं, पापिणी ले पुष्ट ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोइक भले माणसें, कह्या मुझने एह ॥ तेमाटे वीसे वसा, साचुं ए नहीं संदेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ तिणे समे ते थानके, कोइक काम विशेष ॥ ते राणी नी दाशी तिहां, वदंत सुण्यो ते अशेष ॥ अ० ॥ ६ ॥ ते राणी ने दाख्यो तिणे, राणिये राय हजूर ॥ आदि थकी अवदात ते, कह्यो करी दिल क्रूर ॥ अ. ॥ ७ ॥ तिहां राये तेमावी रोहिणी, तेने तेम्यो गयो तिहां तात॥ प्रथवी पति पूछे तदा, एकांते तेमी ते वात ॥ अ. ॥ ८ ॥ कहे भद्रे जे तें सुण्यो, मुझ महिला अवदात ॥ ते सुं साचो सुंदरी, विवरी कहो ते वात अ. ॥ ९ ॥ ए तो में सुण्युं नथी,

सा कहे सांभलो स्वामि ॥ हुं केहनुं कांई जाणुं नहीं वेठी रहुं निज धाम ॥ अ. ॥ १० ॥ जिम तिम ल वती जाणी तिहां, तव ते दासी तेमि ॥ अहिनाणे सहु अवनि पति, पुराव्या कोर कोमि ॥ अ. ॥ ११ ॥ मुखा मुखें इम मेलतां, संसये पमी सोय ॥ उत्तर नवि आपे किश्यो, जगति सामुं रही जोय ॥ अ. ॥ १२ ॥ तव सारथवाह सुभद्रने, तिहां रोसे तेमी राय ॥ ते दासियें दाखविओ, संबंध ते सभकाय ॥ ॥ अ० ॥ १३ ॥ तव सहसा वज्र पमे सिरे, तिम थई पूछे तात ॥ अहो अहो पुत्री ए किश्यो, दासी वदे अवदात ॥ अ० ॥ १४ ॥ एकांते पण ओ किश्यो, पूछतां बहु पेर ॥ उत्तर जव आपे नहीं, तव तातें तजि हेर ॥ अ० ॥ १५ ॥ तेमावी ते तारुणी, जे आगल अणे वात ॥ आगलथी कही हुती, ओ दाखी ते दासी संघाते ॥ अ० ॥ १६ ॥ कामनी ते आवी कहे, सारथ वाहनी साख ॥ हा एणे इम कचरयुं न जाणुं इये अभिलाप ॥ अ० १७ ॥ जन क तेहनो जाणे अछे, मूल थकी मुख दोप ॥ ते वनितानें वस जाइनें, तनुजाने तेमी सरोप ॥ अ. ॥ १८ ॥

आवी अवनीपति कने, नेत्रें धरतो नीर ॥ पयंपे ते पाए नमी, दिलसुं थई दिलगीर ॥ अ० ॥ १९ ॥ ठासठमी ए ढाले छटकी, सौ को रहे सेण ॥ उदय वदे आपद पमे, कोई न माने कहेण ॥ अ० २०

॥ दोहा ॥

आज लग प्रभु अम कुलें, दीठो पण कोई दोष ॥ जीव जातां लगे नवि वदे, पापनो जाणी पोष ॥१॥
अेण दीठो अेण सांभल्यो, अे दोष दाखो महाराज ॥ कलंक प्रथम अे मुझ कुलें, अेणें चढाव्युं आज ॥२
बीज तणा ससिहर थकी, विमल मुझ वंस विशेष ॥ कछुरुओ ते कालो करयो, अलिक वदेने अेप ॥३॥
मोकल जोभी लोक मुखें, जाणो नेम जेह ॥ वारी नहीं अे ते वती, तकसीर माहरी तेह ॥ ४ ॥
विविध गृह व्यापार वसं, संसारीने सोख ॥ नवि दीधी वलि नवि तजी, लागी तो अे लीक ॥५
ते माटे प्रभुजी तुमें, जिम जाणो तिम जोर ॥ अे अपराधिण ऊपर करो, निशंक थई निठोर॥६॥

॥ ढाल ॥ ६७॥

॥ धणिरारे पंथी ढोला मत वादविश्ये, ए देशी.॥
पर तातकीएं इम सा विगोइ हो, हो सुगुणारे, सु
णजो श्रोता ॥ प. ॥ निगुणारे, नर तिहां विगोता
॥ प. ॥ पुरनारे जन मलि जोता ॥ प. ॥ टेक ॥
नृप कहे मारा नगरमांरे, अवल पुरुपनुं येक ॥ व
चन न लोपूं हूं ताहरुं, मुजने मानवा योग्य तूं छे
कहो ॥सु.॥ १॥ सतसंम करी चोवटे रे, नहिं नाखूं
ते माट ॥ पण देशवटो देवो घटे, जिम अवर को न
वहे उवाट हो ॥ सु.॥२॥ अवनिपति तेहने इम कहो रे,
विसर्ज्यो तिणे ठाय ॥ तेण पण तेहज थानथी; तनुजा ते
कीधी विदायहो ॥ सु. ॥ ३ ॥ राज नेरे वीटी थकी
रे; राज मारग सा जाय ॥ देशवटे दुखणी घणुं,
दुष्ट लोक वदे तव त्यांहि हो ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ अहो
अहो श्राते श्राविका रे, अहो देव वंदना ए तेह
॥ परिक्रमणो मुखे वस्त्रिका, आते पूठेडुं फूल्युं
अछेह ॥ सु॰ ॥ ५ ॥ अहो ए ते भणतर भलुं रे,
एहवो ए जैननो धर्म ॥ अवगुण अछता ऊचरे, प
रना परख्या विण मर्म हो ॥ सु॰ ॥ ६ ॥ पग पग

इम पामर जने रे, निंदाती निज धर्म समेत ॥ नगर वाहिर ते नीसरी, सभारती सहुना नेह हो ॥ सु° ॥ ७ ॥ जनक वेभव न वीसरे रे, मातनो सभारी मोह ॥ बधु जन गोरव बहु परें, मनें समरे पामि विछोह ॥ सु° ॥ ८ ॥ परिजनना ते परे परे रे, आदर ध्याती अनाथ ॥ सुगुरु वियोगें सोचती, गमन करे धुजती गात हो ॥ सु० ॥ ९ ॥ दुर्गति सुखे विलपती रे, नगिहीण गामो गाम ॥ भीक्षाने काजें भमे, किहा ए पामे नहि विश्रामहो ॥ सु० ॥ १० ॥ वन माहें वेचार चली रे, काटे कोमल वर्ण ॥ रुधिरधारा श्रे सींचे धरा, ऊधराला थया आभरण हो ॥ सु० ॥ ११ ॥ क्रोध तदा कोप्यो घणु रे, अप्रत्याख्यानावर्ण ॥ आरति सैन्य वदेरीने, निर्ण समवितनु करयु हर्ण हो ॥ सु. ॥ १२ ॥ आयु पुरी ते ऊपनी रे, अपरीग्रहीता व्यतरी हीन ॥ एकेंद्रियादिकना वली, अति दुःख दीठा थई दीन हो सु. ॥ १३ ॥ किहा वेहेरी किहा बोबमी रे, किहा थयो जिव्हा रोग ॥ सतसवसी ढाले सुणो, वदय वदे आस्तिक लोग हो ॥ सु. ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

तावि लेइ मोहराय तव, महा मूढता प्रिय साथ ॥
हसी कहे सुण हे प्रिये, विस्मयकारी वात ॥ १ ॥
सूधी नियम जे श्राविका, निश्चल जेहना नाम ॥
विकथाएं जुओ तेहनी, सीसी भांजो सीम ॥ २ ॥
ए गरीबमीनुं कहो सुं गजुं, सा कहे सांभलो स्वामी ॥
अचंभो स्यो ए वातनो, जो नर सुरपति तुम गाम॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ६८ ॥

॥ सूर्य साहमी पोले, ए देशी ॥

पुरहुत चक्रीने पूज्य हो प्रभु, अमर गणे च्यद्कोभ जे॥ महारा लाल ॥ जगमां अतुलबल जास ॥ हो० ॥ सहु जीवने ये थोभ जे ॥ म० ॥ १ ॥ शिव साधना जे सोपान ॥ हो० ॥ चौद ते मांहि अग्यारमे ॥ म० ॥ पगथीये पहोता जे सूर ॥ हो० ॥ पग मांडवा चाहे बारमे ॥ म० ॥ २ ॥ पुरुष पलकमां तेह ॥ हो० ॥ हुंकार मात्रे तिहां थकी ॥ म० ॥ पामी नमाव्या पाय ॥ हो० ॥ दीन ते जिहां तिहां रुले दुखी

॥ म० ॥ ३ ॥ ए जीव संसारी अनंत॥ हो० ॥ आण
प्रमाण करी सहु ॥ म० ॥ हाजर बंधा होय ॥ हो०
॥ सुविधे तुम सेवे बहु ॥ ४ ॥ तव सम काले त्यांहि
॥ हो० ॥ सामंत मंत्री सहु कहे ॥ म० ॥ अहो टे
वीने बुद्धि ॥ हो० ॥ वातनी विगतें केहवी लहे ॥
॥म० ॥ ५ ॥ जुओ संसारी ते जीव ॥ हो० ॥ नर
भव पामी एकदा ॥ म० ॥ समकित पाम्यो शुद्ध
॥ हो० ॥ मोहे ते भ्रष्ट कर्यो मुदा ॥ म० ॥ ६ ॥
देता कोइक भवें दान ॥ हो० ॥ अनुचरें मोह
नी आणथी ॥ म० ॥ ततखिण जई थंभ्यो तेह ॥
॥ हो० ॥ किहा एक चुकाव्यो शीलथी ॥ म० ॥ ७ ॥
क्रोधें कियो किहा जहेर ॥ हो० ॥ तपना टेखी तानमा
॥ म० ॥ किहा एक करयो भावना भंग ॥ हो० ॥ घरी
तेहने दुष्ट ध्यानमा ॥ म० ॥ ८ ॥ देश विरतियो
दूर ॥ हो. ॥ किहां एक वली तस वासिओ ॥
॥ म. ॥ मोकली मोहे भृत्य ॥ हो. ॥ परे परें सुख पा
सीओ ॥ म. ॥ ९ ॥ इम योजन कूपनें मानि ॥
॥ हो. ॥ क्षेत्र पल्योपम लहो खरो ॥ म. ॥ असंख्या
तमो तसु भाग ॥ हो. ॥ सूक्षम रोम खंमे भरयो ॥

॥ म. ॥ १० ॥ ते प्रदेसे रासि प्रमाण ॥ हो. ॥ देश विरति सुणि में वरी ॥ म. ॥ पण मोहने सुभटे ते ऐ ॥ हो° ॥ कशायादिकें लीधा हरी ॥ म° ॥ ११ ॥ अप्र त्याख्यानावर्णचार ॥ हो. ॥ कषाय तणे उदये करी ॥ ॥ म. ॥ देश विरति जाए दूर ॥ हो. ॥ आगम भाषे इणि परे ॥ म. ॥ १२ ॥ उदय रत्न इणि भांते ॥ ॥ हो. ॥ अमसतरमी ए ऊचरी ॥ म. ॥ ढाल ए ढलते रागें ॥ हो. ॥ सुणजो सहु उलट धरी॥म.॥१३॥

॥ दोहा ॥

चंद्रमौलि नृप इणि समे, मोदें मुनिना पाय ॥
प्रणमीने पूछे इस्युं, करी रोमांचित काय ॥ १ ॥
भगवन् ए भूंमा घणूं, मोहादिक अरि मस्त ॥
पीमे जे सहु प्राणिने, सौंपी दुःख समस्त ॥ २ ॥
सुख सघला ले संहरी, दुःख सघला ये दुष्ट ॥
सत्य पणो ए मोह शिरें, पापी जे महा पुष्ट ॥३॥
सकल सिद्धांतनुं रहस्य छे, उत्तम तुम आख्यान ॥
ओ विचें अवर जे पूछियें, न घटे ते भगवान ॥४॥
केवल संदेह कारणें, अपण पूछुं जे कांइ ॥

दुखें भेदिश्रो ॥ समकित होणे तिहांथी नीसरी ॥ विवहार रासि वरखते अवतरी ॥ अवतरे ते लाख चोरासी, जीवा योनी सर्वदा ॥ परावर्त्तता अनंत पुदगल, पार नवि पामे कदा ॥ समकित वण संसार पारावार पार न पामिएं ॥ छकायमां छेदन भेदन दुःखें जिहां तिहां दामियें ॥ ३ ॥ समकित पाम्यानो महिमा जुश्रो ॥ मुहुर्त्त लगें जे समकेती हुश्रो॥ मोहादिक जो तस कोपे घणुं ॥ तो पण तेहनें अर्द्ध पुदगलोक पणुं ॥ घणुं तेहनें अर्द्ध पुदगल, सर्गे भवनो अगेला ॥ पछे परमानंद पामे, भांजी भवना आमला ॥ हलु कर्मी कोइक जीव वहेलो, मंगति गामी माहा बलो ॥ समकितनु ए फल में भाष्यु, सुण तु राजन मन रली ॥ ४ ॥ नृप नमि मुनिने तव कहे पमवमो ॥ भाषो भगवन ए अचरज वमो॥ समकित देश विरति वरया स्वामी॥ मोहादिक दुःख इम दे दामी ॥ दामी दुःख दे दुष्ट सघला, सुभट मोह राजा तणा ॥ तव केवली कहे अनंत कालें, आरे न श्रोसरे ए घणां ॥ सर्वदा सर्व जीवने अे,

संतावे सर्व पापिश्रा ॥ ते माटे सहु ज्ञानीश्रे पण, इमज उत्तर आपिश्रा ॥ ५ ॥

यतः आर्या

संमत्त देश विरया. पलियस्स असंख भाग
मित्ताश्रो ॥ श्रठ भव ऊपरिते. श्रनं
तकालं सम श्रेत्ति ॥ १ ॥

सम्यक् दर्शन देश विरति लही ॥ क्षेत्र पल्योपम असंख्य भागें सही ॥ देस प्रदेश राशिमा जेती ॥ तेहना भवनी संख्या कही तेती ॥ तेती संख्या लेहो तेहने जारित्र सामायक वंतने ॥ भव आठ तसु भगवंत भाख्यो, पछे पामी तव श्रंतने ॥ श्रुत सामायक सम्यक् दृष्टि, मिथ्या दृष्टि भावें लही ॥ त्रसमां हे ते भव अनंता, भमे साचूं सद्दही ॥ उगन्योत्तेरमी एह भाखी, ढाल इम उदय वदे ॥ संसार सागर तेह तरसे, शास्त्र जे धरसे हृदे ॥ ६ ॥

सर्व विरति कहो थाय से, तत्र पूछे इम महाराय ॥१॥
तव मुनि कहे तक जोइने, रंग भरे राजान ॥
अंतर ए थोमो अछे, सामल थई सावधान ॥ २ ॥
सूधो हूं सावधान छु, राजा कहे रिपि राज ॥
महेर करी मुजने कहो, संबंध ए शिरताज ॥ ३ ॥

॥ ढाल. ॥७०॥

मारुजी हो अवर नदोर माहरी बेहिनमी हो राज ॥ राजाजी हो, ए देशी.,

तिहांरे कहेरे तेह केवली हो राज ॥ मनुष्य क्षेत्र पुर एक ॥ सहाय लहोने राज ससारीने ॥स. अवतारीने ॥ स. ॥ सकु समकित छे सुखदाय ॥ स. ॥ टेक ॥ रा. ॥ इंद्र पुरें ऊपनो हो राज ॥ विश्व थकी वितरेक ॥ स. ॥ १ ॥ रा. ॥ समीर ए नामेरे नृप सोहे तिहा हो राज, जयंति नामे तसु नार ॥ स. ॥ कर्मे नृपें लई ते जीवने हो राज ॥ तेहनी कूखें दियो अवतार ॥ स. ॥ २ ॥ रा. ॥ पूरे मासेरे जनम्यो ते यदा हो राज ॥ अरविंद तेहनुं अभिधान ॥ स. ॥ थाप्युं ययोरे सहु कलाधरु हो

राज ॥ निरुपम सुगुण निधान ॥ स. ॥ ३ ॥ रा.॥ तव तरुण ते थयो रे तेहने ते समे हो राज ॥ अवसर लही उत्सरग ॥ स. ॥ उद्यानमांहि आणि मेलिओ हो राज ॥ कर्म नृपे गुरु संग ॥ स. ॥ ४ ॥ ॥रा.॥ मोहे नमी रे ते मुनींद्रने होराज ॥ते कुमर बेठो तिहा पास. ॥ स. ॥ तव कर्म नृपे रे तेहने आपिओ हो राज ॥ पमग वारु एक खास ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ र० ॥ अध्यवसाय अति सुंदरु हो राज ॥ तटरूप ते करवाल ॥ स० ॥ मोहे आदि रे सत्रु सातना हो राज ॥ स्थिति रूप तनु तिणि ताल ॥ ॥ स. ॥ ६ ॥ रा. ॥ सागर संख्याएं तव छेयां तिणे हो राज ॥ तेहना तनु केटला एक तेह ॥ स. ॥ तेहने योग्य जाणीने तव ते साधुएं हो राज ॥ निर्मल धरीमनेह ॥ स. ॥ ७ ॥ रा. ॥ सम्यक् दर्शन ते मंत्रीसरु हो राज ॥ धरपति जे चारित्र धर्म ॥ स. ॥ आगल थकी ते वने मेलव्या हो राज ॥ जे सेव्या आपे शिव सर्म ॥ स. ॥ ८ ॥ रा. ॥ सर्व विरति नामे सुंदरी हो राज ॥ सालंकारा सुवेश ॥ स. ॥ दिव्य देखामी गुण दाखवी हो राज

॥ ते मुनिए धरि मोह अशेप ॥ स. ॥ ९ ॥ रा. ॥ राज कुमरे तव रीझिने हो राज ॥ सर्व विरति वरी वेग ॥ स. ॥ सुगुरु समीपें व्रत उचर्यां हो राज ॥ सुद्ध धरी संवेग ॥ स. ॥ १० ॥ रा. ॥ दीक्षा महोत्सव कीधो दीपतो हो राज ॥ उदय वदे मनोहार ॥ श्रीताजी हो ॥ सितेरमी ढाले ताते सही हो राज ॥ नित मुनिने नमो नर नार ॥ स. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

धर पति चारीत्र धर्मनुं, सैन्य पाम्युं संतोप ॥
तव तेहने पासे रहे, दूर निवारण दोष ॥ १ ॥
अतिशय बोध आनंदिओ, सम्यक् दर्शन थिर भाव ।
पामी तसु पासे वसे, नागरिउं जिम नाव ॥ २ ॥
सदागम लीन रहे सदा, आचरि शुद्ध आचार ॥
प्रसम आभूपण पहीरणे, मार्दव मंमण सार ॥ ३ ॥
ओपे ते आर्जव गुणे, संतोपसुं मन मेल ॥
तप तरु आरे निज घरे, करे संयमसुं केल ॥ ४ ॥
सेवे सत्य सुमित्रने, सौचसुं धरी सनेह ॥
अकिंचन ब्रह्मचर्य ऊपरें, राखी राग अछेह ॥ ५ ॥

चारित्र धर्म नृप अंगना, दसे मिल्या ए दोस्त ॥
ते अरविंद अणगारसुं, जिम पाणीसुं मले पोस्त ॥ ६ ॥
सदवोध सदागम प्रेरिश्रो, मुनिवर ते महा धीर ॥
सबल मोहना सैन्यसुं, रोज चमे रण वीर ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ७१

॥ कमखानो देशी ॥

इम तेह अरविंद अणगार आरिसुं भमे, रण वढे रोज मन मोज धरतो ॥ मोह दल दलन वसवंत भ्रम भंजणो, अखम रिपु चमना खम करतो ॥ ॥ इ० ॥ १ ॥ चढो अप्रमाद अदभूत गजकपरें, एन अदंभते धारि अंबामी ॥ समाधि सिंदुरसुं जेह सल गारिश्रो, अलोभ गुण घंट घणएंत गाढी ॥ इ० ॥ २ ॥ धनुप मर्म वृत्तिसुभ संवर धरजो करें, भावना रूप सर भूरि वरसे ॥ मारि मोह रायने मर्म स्थानक लही, सत्रुनी मूरते सांस फरसे ॥ इ० ॥ ३ ॥ ब्रह्म कि ब्रह्मचयने काम भट भेदिश्रो, रणमां हृदयांतरे रोस पूरे ॥ धरि राग केसरी जोर घूमाविश्रो, अराग आयुधे नसाम्यु दूरे ॥ इ० ॥ ४ ॥ द्वेष गजे

इ॰ अक्रोध बाणे धर्यो, जाए नाठो तदा चौस पामी ॥ एम सदबोध सदागमी ओलखी, सैना सज्जतणी नसामी ॥इ. ॥ ५॥ वीर विश्वानर वीध्यो समता सरे॥ विनय बाणे वली सैल रांजे॥ सरल बाणे करी बहुली दूरें करी ॥ लोभ निर्लोभ सरे आण्यो वाजे॥ इ. ॥ ६ ॥ हिंसा असत्य अदत्त मैथुन तथा मूर्छा आदिमहावेरी बलिया ॥ अहनिशे तेहनो मूल उन्मूलतां सर्व सामंतना गर्वगलिया ॥ इ॰॥ ७॥ प्रमाद दंमाधिपे मोहने अन्यदा, तेह रिपु राज्यने जोरें घेर्यो,ताम अथाम अणगार ते ओलखी, श्रु

५ बस दाखवी, मोहसुं इम चढे तेह मोजे॥ इ० ॥ १० ॥
त्रिविधि उपसर्ग भट-उत्कट मोहना, विकट ले
कटक थया निकट वरती ॥ प्रवचन वयणथी कर्म
गति पारखी, ताम करि दूर तस तेह विरती ॥ इ ॥
॥ ११ ॥ तरुण तपसी वृद्ध वाल गिलाननी, विधि
विध परें सेवना रोज करती ॥ जोर संज्वलन कशा
ए जोरो करयो ॥ उपसम्यो प्रसम रस ध्यान धरती ॥
॥इ. ॥ १२ ॥ शब्द रूप गंध रस फरस आदे वली,
प्रगट थया पंच ए मोढ पापी ॥ सकाम रणांगणे
प्रगट थई तव तिणे, तास संतोष बलें सीख आ
पी ॥ इ० ॥ १३ ॥ मुनि मोह रायसुं एम युद्धे ज
स्यो, हारिने जीत करे हाथें ॥ उदयरत्न कहे कर्म क
र्त्ता अछे, इकोतरमी ढालमां आयु घातें ॥ इ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

जय पराजय पामतां, इणि परें ते अणगार ॥
जय लक्ष्मी वरिजे समे, ते समे सुणो नर नार॥
गाढो ते तरज्यो गुरें, कोईक काम विशेष ॥
घेरयो तव तेहने घणुं, आपणो अवसर देखि॥

प्रत्याख्याना वरण जे, क्रोध मान भट दोय ॥
पीमयो तिणे निर्दय पणे, मर्म स्थाने मुनि सोय ॥

॥ ढाल ॥ ७२ ॥

ओधव माधवने कहिजो ॥ ए देशी ॥

वेरी कषाय वाहीने, घेरी चोफेरे ॥ बलवंते वेदु जणे, यती कीधो जेरे ॥ वे० ॥ १ ॥ तव थइ ते तरतरो, गुरु साहमो गमार॥ बोलवा लागो ते वेतमां, छांमी लाज अपार ॥ वे० ॥ २ ॥ अहो आचारज जी अमे, कीधास्यो अपराध॥ युगते विचारीने जुओ, बोलि पामस्यो बाध ॥ वे० ॥ ३ ॥ अणगार तो अनेक छे, गुरुजी तुम गछ मांहि ॥ समोवमिआ मुज सारिखा, तेहने नकहो कांही ॥ वे० ॥ ४ ॥ गरीब लहो गुनह विना, केवल मुज वंक ॥ दोषो गो सहु देखतां, कोण छे निकलंक ॥ वे० ॥ ५ ॥ जो कोई बीजो पण यती, एहवु आचरे नांहि ॥ तो मुजने ठवेखवो, इम घटे आंहि ॥ वे० ॥ ६ ॥ थिवर वारे जव तेहने, कुलवंत तुज केम ॥ इम घटे इहां बोलवु, जइ बोले जेम ॥ वे० ॥ ७ ॥एतो कुस

मुक उगठे, इम चिंते ने ताम ॥ अहंकार कोपे ऊफ़ण्यो, गाढो तिणे ताम ॥ वे०॥८॥ जव गुरु कांइक कहे फरी,तव जामी कहे तेह ॥ साद तुमारा सांभली,ही ए पमिजे वेह ॥वे०॥ ९॥मालि मालि एह मेलो फरी, सुं करसो जेमि॥ आल्यो तुम ओघो मुहपति,मूकोमा हरी केमि॥वे०॥ १०॥ वेष तजावी वेगसुं,इणि परें श्रव हेलि ॥ सुण्यां तिणे मोहना सैन्यना, तेहने तिणे वेल ॥वे०॥ ११॥ दुष्ट मल्यो ते दीनने,निंदनीक ग्रहवेष ॥ पहेरावीने परें परे,दीधां दुःख अनेक ॥वे० १२ भीख मांगि करी चाकारे, पर घरे भरे पेट ॥ वर प तेहने वोल्यां घणां, करतां लोकनी वेठ॥ वे० ॥ ॥१३ ॥ अहो में भ्रष्ट बुद्धे तज्यो, धर्म त्यजी अधर्म ॥ अंत समे ते इणि परें, निंदे कृत कर्म ॥ वे.॥ १४॥ इह लोके लही आपदा, पर जवें वहु पीम पामीस एहना प्रजावथी, जवने पण भीम ॥ वे० ॥ ॥१५ ॥ इम ते आतम निंदतो, मरी ज्योतिषी मांहि ॥ अमरपणे जई ऊपनो, सुण नृप उच्छाहि ॥ ॥वे० ॥१६॥ तिहांथी चवीने जीवते, जव जमिओ

भूर ॥ बोली ए बिहेतरमी, ढाल वदथैं सत्तर ॥
॥ ते० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उपनो ते वसि अन्यदा, मंत्री सुत मनुहार ॥
राज्य पुरे रम्य श्राद्ध ने, चित्र मति नामे कुमार ॥ १ ॥
मावीत्र पर लोके गया, तव पुत्र ठवी निज गेह ॥
पोते संयम आदरि, वहुदिन पाले तेह ॥ २ ॥
पूर्वे परे मोह सैन्यने, मुहकम देतां मार ॥
अंते विषय सुख महा भटे, हरयो ते अणगार ॥ ३ ॥
संयम विरायी सुर थयो, सौधर्मे सुर लोय ॥
पल्योपमने आवखे, तिहांथी चवीने सोय ॥ ४ ॥
भुरि भवांतर ते भम्यो, कनकर नृपने धाम ॥
कंचन पुरे थयो एकदा, सुत विजयसेन इणि नाम ॥ ५ ॥
तिहां पण सदगुरु संगथी, धर्म सुणी सुख खाणि ॥
मांत पितादि मुकिने, संयम लियो सुजाण ॥ ६ ॥
तिमज हरखो रहे तेहकने, सदागमने सद बोध ॥
मोह राजाना सैन्यसुं, युद्ध करे ते जोर ॥ ७ ॥
सदागमसुं थयो स्नेह अति, सद बोधनो थयो पोष ॥

अप्रमाद भेदयो अंगमां, स्थिर थयो संतोष ॥ ८
तव पाम्यो ते महा मुनि, अप्रमत्त गुण स्थान ॥
सिद्धि सौधनुं सुंदरुं, सातमुं जे सोपान ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ७३ ॥

॥ चोपाईनी देशी ॥

कोईक कर्म परिणाम पसाय ॥ उपसम श्रेणि नामें तिणि ठाय ॥ महा वज्र दम मुनि पाम्यो तेह ॥ तव उग्र वीर्य उलस्युं अछेह ॥ १ ॥ अनादिकालना जे महा अरी ॥ तव शिरें मारयो तेह दमें करी ॥ क्रोध मान माया ने लोभ ॥ अनंतानुबंधी जे सब थोभ ॥ २ ॥ भस्म पाम्यो रहे वन्हि छिपी ॥ तिम ते च्यारे रह्या लिपी ॥ छळता थई ते पामया अचेत ॥ जिम कोईक घायल रण खेत ॥ ३ ॥ विशुद्ध समकित मोहनी पछे ॥ अर्द्ध विशुद्ध जे मिश्र अछे ॥ अविशुद्ध मिथ्यात मोहनी जोय ॥ ए त्रिहुं भेदे दर्शन मोहनी होय ॥ ४ ॥ ए त्रिणे थई तुं शांभली भूप ॥ मिथ्या दर्शन मंत्री रूप ॥ तव तेणे दमें हणिओ तेम ॥ अचेत थईने पमिओ जेम ॥ ५ ॥ अ

पूर्व करण नामे गुण थान ॥ पहोंतो तव आठमे सोपान ॥ तुमुनिवृत्ति बादर संपराय ॥ तुरत ते थाने चढयो रिपिराय ॥ ६ ॥ हणी मूर्छा पमामिया त्यांहि। नपुंशक ने स्त्रि वेद उछांहि ॥ हासुरती अरतीने शोक ॥ भय दुगंछादिक छ दोष ॥ ७ ॥ पुरुष वेद कीयो गति भंग ॥ क्रोध मान मायाना अंश ॥ त्रिहुं भेजे जाणे तहकीक ॥ अप्रत्याख्याना वरणादीक ॥ ८ ॥ ॥ बे प्रकारनी लोभ समेत ॥ अनुक्रमे एह कर्यो अचेत ॥ संज्वलनाते देतां मार ॥ नासी लोभ गयो तिणि वार ॥ ९ ॥ दशमे गुण स्थाने ते दुष्ट ॥ सूक्ष्म संपराय पापीष्ट ॥ छतो न जणाए तिम ते छिप्यो ॥ सूक्ष्म रूप करीने लिप्यो ॥ १० ॥ ते पण केम आवी तेणि ॥ मूर्छागत कीधा ततषेण ॥ एह अ वावीस कारण भूत ॥ मोहतणा जाणो अदभूत ॥ ११ ॥ ॥ अंगित माणस पमतें सहु ॥ मोह पण मूर्छा पाम्यो वहु ॥ जिम जम थम शाखा कांपवे ॥ वृक्ष घणुं विसंस्थल हवे ॥ १२ ॥ उपसम श्रेणि महा वज्र दंम ॥ सकुटुंवे हणि मोह प्रचंम ॥ इम निचेष्ट करी गुण गेह ॥ परमानंद पद पावतो तेह ॥ १३ ॥ उ

पमात मोह नामे गुण स्थान ॥ एकादशमे पहोतो सोपान ॥ केवलीना सरीखुं चारित्र ॥ धरतो ते तिहा पुण्य पवित्र ॥ १४ ॥ ये सर्वार्थ सिद्धि विमान ॥ सकल सुरा सुर पूज्या स्थान ॥ पद अेहवो ते मुनि पामियो ॥ बेचमी लगें तिहा विसामिओ ॥ १५ ॥ तव लोभें काईक चेतन लही ॥ निज तनुथी जे जूदी नहीं ॥ देहोप करण मूर्छा नाम ॥ बेठि कोप धरी तिणि ठाम ॥ १६ ॥ मोकली ते मुनिवरने पास ॥ तिणे जई कर्यो हृदय मा वास ॥ देहादिक मूर्छा गोरियो ॥ गलें झाली पाछो फेरिओ ॥ १७ ॥ इग्यारमा गुण ठाणा थकी, पापणीएं ते पाम्यो, ऋषि ॥ अनुक्रमें तेहवो अमवम्यो ॥ पाहिले पावमिए जई, पमग्यो ॥ १८ ॥ मिथ्यादर्शन मंत्रिने हाथ ॥ सुंप्यो ते मूर्छाए अनाथ ॥ तव ते अरि सवलाए ठठ ॥ पमयाते मुनिवरने पूठ ॥ १९ ॥ परिघल पाप करावी तास ॥ एकेंद्रियादिकमां दीधो वास ॥ नरकादिक गतिमा भरपूर ॥ भवमां ते ह नमाम्यो भूर ॥ २० ॥ उदय वदे सुणजो उजमाल ॥ त्रिहोतरमी ए भाषी ढाल ॥ कर्म तणी गति जे नर कले ॥ त्रिधा ताप तस दूर टले ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

व्रह्म सुर तामे अछे, नगर निरूपम एक ॥
सुनंद नामे श्रावक तिहां, वसे धनवंतो छेक ।
श्रेष्टिमां ते शिरोमणी, धना नाम तस नार ॥
तनुज थयो ते तेहनो, पुंमरीक नामे कुमार ॥

॥ ढाल ॥ ७४ ॥

॥ मेरा नाह निठुर अभिमानी हो, ए देशी ॥
बालपणाथी ते बुद्धि दरीयो, सकल कलाएं वरीओ हो ॥ तेने जोर पवन सति जागी हो ॥ थोमा दिनमां ते घणुं भणिओ, गुणवंते मुख्य गणिओ हो ॥ ते. ॥ १ ॥ अधित विद्याएं ते अण धातो, कोई मुनिने पूछे वातो हो ॥ ते तो आगमनो अति रागी ॥ सकल कलानो स घलो वेरो ॥ किहां छे कहो अधिकेरो हो ॥ ते० ॥ ॥ २ ॥ द्वादशांगिमां छे कहे साधु, चौद पुरवथी वाधु हो ॥ ते० ॥ विद्या अनेरे वाम न दीसे, जाणो विसवा वीसे हो ॥ ते० ॥ ३ ॥ तव ते पयंपे छे केवमां तेह, तुमे पूर्व कही छो जेह हो ॥ ते० ॥

गुरुने पूछो ते कहे कुमरने; तव ते पूछे जई गुरुने हो ॥ ते० ॥ ४ ॥ गुरु कहे गज सम मिसि जो थाए ॥ तो पूरव पहेलुं लखाएहो ते० ॥ गाए व मणो इम मिसि पुजे, सवला लिखवा सूजे हो ॥ ॥ ते० ॥ ५ ॥ पण पुस्तके लिख्या नथि केऐ, मान कह्यो मिसि एऐ हो ॥ ते० ॥ पूर्व एं मुखपाठे जे भणाए, किणही लिख्या न जाए हो ॥ ते० ॥ ६ ॥ कौतक पामी ते कहे एतो, मुझने भणावसो एतो हो ॥ ते० ॥ गुरु कहे ग्रहस्थने किम भणावुं, तव क हे साधुमें थावुं हो ॥ ते० ॥ ७ ॥ मात पितानी अनुमति मांगी, संयम लेते सोभागी हो ॥ ते० ॥ महा महोत्सवसुं लई दीक्षा, गुरु तणी सुणि सि क्षा हो ॥ ते० ॥ ८ ॥ चौद पूर्व ते भण्योचूपें, उदय वदे अनूपें हो ॥ ते० ॥ चिहोतरमी ढालें चित्त धरजो, प्रमादने परिहरजो हो ॥ ते

॥ ढाल ॥ ७८ ॥

॥ रंगा रात वंचूमो, ए देशी ॥

सनाए वेठे सहुसेवके, पाणि जोमीरे तव पूछयुं एम॥ जो जो मोहनो जोरो, नीसासो आज नाथजी, अ ति लांबो ते मुखें मेल्यो केम ॥ जो० ॥ १ ॥ कर कपोलें थापिने, मुखें बोलेरे हवे आव्युं मोत ॥ ॥जो०॥ अलवे पंखी तमामतां, जिम जाएरे गोफ णी गोला मोत ॥ जो० ॥ २ ॥ सदागम वेरी सदा, अमारो रे तुमे जाणो अतीव ॥ जो० ॥ अभेद बुद्धि तेहसुं मिल्यो, जय कामेरे ते संसारी जीव॥ ॥ जो० ॥ ३ ॥ सदागम सहेसे सवें, अमारा रे ए आगल मर्म ॥ जो० ॥ जण जणने ते जणावशे, गहगहसे रे तिहां रे चारित्र धर्म ॥ जो० ॥ ४ ॥ पुत्र पौत्रादिक गोत्रने, तव लणसे रे मली सघला लोक ॥ जो० ॥ वंसोच्छेद थासे तदा, मोह वाले रे इम मेलतो पोक ॥ जो० ॥ ५ ॥ तेहवो कोइ नथी दे खतो, जे विघटे रे ए दुष्ट संयोग ॥ जो० ॥ संखे द देखी स्वामिने, थया आंखा रे परखदना लोक

॥ जो० ॥६ ॥ निंद्रा नामे नारी तिसे, ऊंघ आलस रे वैकल्य अंग भग ॥ जो० ॥ स्वप्न जपन भ्रम सून्यता, जंभादिक रे निज परिकर संग ॥ जो.॥ ॥ ७ ॥ मावा पासाथी ऊठीने, करजोमीने कहे सुण स्वामि ॥ जो० ॥ ए अनाथनो स्यो आसरो, तुमे दासिएं रे एतो सीके काम ॥ जो. ॥ ८ ॥ चिंता सी ए वातनी, खणवो डुंगर रे हणवो मूषक महा मल्ल ॥ जो.॥ कीमी नगरा ऊपरे, सी कटकी रे देवजुआे दिल्ल ॥ जो. ॥ ९ ॥ ताजो तृण ऊपरें, कुहामो रे जिम मारे कोए ॥ जो. ॥ आरति ए तिम जाणवी, तुम नामे रे कुण अनर्थ होय ॥ जो. ॥ ॥१०॥ काल्हे किसुं दीठुं नही, मूर्छाएं रे गले जाली तेह ॥ जो. ॥ एकादशमां सोपानथी, वल्यो पाछो रे जिम पवने खेह ॥ जो. ॥ ११ ॥ हरषें कहे तव हेजमा, महाराजा रे मरकलमो देह ॥ जो. ॥ वारु वारु वली वेगसुं, करो कारज रे तुमे कहो छो जेह ॥ जो. ॥ १२ ॥ ताहरी पण मन कामना, सिद्ध थाओ रे इम दीधी आसीस ॥ जो. ॥ पंच्योत्तरमी ढालमा, वदे उदय रे धरो हृदयमाही स॥जो. १३॥

॥ दोहा ॥

तव सा पोती ते कने, पापाणि परिकर लेह ॥
अवतारचो तसु अंगमां, आलस प्रथम अछेह ॥
आलसने उदयें करी, संभारी सहि सूत्र ॥
अरथ देतां आरति वधे, जिम तिम लवि उत्सूत्र ॥
तव बीजे त्रीजे दिने, थिविरे थिर करि तास ॥
गुणवा बेसाभयो जोरसुं, पण न गमे अभ्यास ॥

॥ ढाल. ॥ ७६ ॥

॥ होजी झरमर वरसेलो मेह, ए देशी ॥

होजी तव निद्राएं अशेप, परिकर प्रेल्यो ते कने हो लाल ॥ हो जी सम काले सर्वांग, व्याप्यो न कहे तां ते वने हो लाल ॥ १ ॥ हो जी जंभाएं ते जोर, वांसो घणुं मरमे वली हो लाल ॥ हो जी हाथपग शिरने सर्वांग, कंपावे उघने वले हो लाल ॥ २ ॥ हो जी उद्धरी भुज दोय, कम कम मोमे आंगलीहो लाल हो जी भूतावेशनी भांति, धुजंतो धरणी ढली हो लाल ॥ हो जी हाय पगने शिर सर्वांग, कंपावे

तंथने वसे हो लाल ॥ ३ ॥ हो जी अंगी पूठे वहु पास, ढले ढीकलीनी परें हो लाल ॥ हो जी थिविर पढावे प्राण, पण अक्षर मात्र न उचरे हो लाल ॥ ४ ॥ हो जी निंदिने सामा आप, पढे घणुं ते घेरिओ हो लाल ॥ हो जी पर्म पशुनी परें, जिहां तिहां प्रेमला प्रेरियो हो लाल ॥ ५ ॥ हो जी काष्ट परें कुठाम, सुए सथारा विना हो लाल ॥ हो जी घोराएं घणुं जोर, चित्तमां न रहे चेतना हो लाल ॥ ६ ॥ हो जी पडिकमणे प्रभात, थिवर उठामे महा दुखें हो लाल ॥ हो जी कभी करि इक दिन्न, गुरु सूत्र गुणावे मुखें हो लाल ॥ ७ ॥ हो जी पलक मांहि भूपीठ, प्रेमलाएं तव पामियो हो लाल ॥ होजी कुंणी ढीचण ने शीश ॥ भामिनियें भमामिओ हो लाल ॥ ८ ॥ होजी अक्षर न भणे एक, मुनि पण मोन धरी रह्या हो लाल ॥ होजी अतिव्यापे तव उंघ, चिन्ह न जाओ जेहनां कह्यां हो लाल ॥ ९ ॥ हो जी क्रियाकरतां अनेक, चक्षुना चाला करे हो लाल ॥ हो जी किम मुख करि ने पाय, मोमे पसारे वहु परें हो लाल ॥ १० ॥ हो जी निद्रा नारीयें एम, नव नव

भेद नचाविओ हो लाल ॥ हो जी एहवा जोई आचरण अचरज सहु ने आवियो हो लाल ॥११॥ हो जी अेवमो अेसी उंच, सुजाण सहु को वंदे हो लाल ॥ हो जी वहोतरमी अेढाल, उदय वदे घर जो हदे हो लाल ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

इम निद्रार्थे आचरयो, आगम विण अभ्यास ॥
छिद्र हरत जलनो परें, गलवा लाग्रु तास ॥ १ ॥
गहन अर्थ गया वीसारि, जिम जिम थाअे अंस ॥
तिम तिम लागे जहेरसो, आगम न गमे अंस ॥२॥
अमृतसी गणि ढंवते, अज्ञाने ते अहो रात ॥
सूई रहे नवि सल सले, वीसरी सूत्रनी वात ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ७७ ॥

॥ वेटी टोमर मळकी, एदेश ॥

तव गुरु भने सो साधुकूं, केवल भणवा काज वे ॥ धार ढोरी थए आयसें, पायो तें आगम राज वे ॥ १ ॥ जाग वे ज्ञानी जागना, लागना वे श्रुत दा

गना वे ॥ जा० ॥ देवे जो दुर्गतिको हरी, सुर नर शिव सुख खानि वे, सो हाथें आया क्यों हरियें, गुन सागर श्रुत ज्ञानी वे ॥ जा० ॥ २ ॥ नरक निसा नीटको, मूढ देवे न मान वे ॥ चौद पूरवसंव ठेरके, कह्या मेरा साचि मान वे ॥ जा० ॥ ३ ॥ तव तातो होयके सो वके, कहो वंचाता है कौन वे ॥ तुम तो जूव कहे किने, बूरी ए बात जवून वे ॥ जा० ॥ ४ ॥ गुरुजी हम तो गुने हते, सूत एते एते कछ वे ॥ हम तो मघनाहिं पाठमें, दूजा नो आवें दिल वे ॥ जा. ॥ ५ ॥ गुरु तव चिंते चित्त में, अहो अहो एतो नवीन वे ॥ अवगुण अंहमा ऊपनो, महा जूव बोले मलीन वे ॥ जा० ॥ ६ ॥ विप घारित परें अन्यदा, मूर्छित घायल समान वे॥ बोलाव्यो बोले नहीं, वंघ्यो सो असमान वे ॥ जा० ॥ ७ ॥ दिवसे सुपन देखिके, ज्यों ज्यों वके जोर वे ॥ जगावे जो कोउ जायके, तो बहुत करे वकोर वे ॥ जा. ॥ ८ ॥ जोरे ताकू जगाय के, गुरु कहे क्यों वत्स आज वे ॥ एती वेर उंघ्या हता, तव सो तजिने लाज वे ॥ जा० ॥ ९ ॥ उत्तर गुरुकू यूं दियो, जबहु अर्थ

ाचेतु एक ध्यान वे ॥ तव तुम सवकूं ओवकी, भ्राति लगी भगवान वे ॥ जा० ॥१०॥ जूठो ताकू जानिके, मुनि जनें मेल्यो ठवेष वे ॥ कोउ कदर्थना नवि करे, गुरुएं पण त्यज्यो ठेक वे ॥ जा. ॥ ११ ॥ मोह राजाना माणसें, आवग्युं तेहनु अंग वे॥ सदो गम तव भागो सही, सदबोधें त्यज्यो संग वे ॥ जा. ॥ १२ ॥ चारित्र धर्म पण चालिओ, सर्व विरति स्वयमेव वे ॥ पहिले जपलाए तदा, दुर्गधे जिम देव वे ॥ जा० ॥ १३ ॥ क्षमादिक नासीने गया, दशेपटोकत दूर वे ॥ सम्यक् दर्शनी सीम तेहनी, तजी वाज ते दूर वे ॥ जा० ॥ १४ ॥ मिथ्या दर्शन मंत्री सरें, तव तिहापूरयो वास वे ॥ मोहादिकें मलि तेहने, पीमी निद्रापास वे ॥ जा० ॥ १५ ॥ मरण पमामी मोकल्यो, निगोद अकेंद्रि मफार वे ॥ भव माहे भमाम्भिो, पछे तेहने निरधार वे ॥ जा० ॥ ॥ १६ ॥ सत्योतरमी अे शाभलो, ढाल धर्मनो ढाल वे ॥ धरमीजन धरजो सदा, उदय वदे उजमाल वे ॥ जा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा. ॥

चित्त वृत्ति अटविमां, इस्ये, विवेक गरीने शृंग ॥
अप्रमत्त कूटे अति सुभग, जेनेंद्र पुरं महा द्रंग ॥ १ ॥
निरानंद उत्साह विण, मजलस मेली सर्व ॥
चारित्र धर्म नृप आदि दे, बेठा छे हत गर्व ॥ २ ॥
माहो मांहे इम कचरे, अहो सुं कीजें आंहि ॥
भव्य दुर्भव्य आप्पा जुओ, मोहने अनेक सहाहि ॥ ३ ॥
असंखाति ते सघले, फरे, फेमे आपणो पक्ष ॥
आपणने भीरु अेकज दिओ, सोपण नहीं सुदक्ष ॥ ४ ॥
अनंत काले आवी मिल्यो, आपणने ते जीव ॥
तेने पक्ष पोषतां आपणो, उपजे व्यथा अतीव ॥ ५ ॥
आपण जव उंचो करां, तव नीचो घाले तेह ॥
उंचो आवण नवि दिये, अरि मोहादिक एह ॥ ६ ॥
आपण एहने सुख इछिएं, ए न लहे उपगार
मोहादिकने जे मिले, आरति लहे अपार ॥
गुणठाणे इग्यारमें, चौद पूर्व धर आदि ॥
प्रद आपण आरोपिएं, तजावी तास प्रमाद ॥
तिहां थकी पण जीव ते, धर्म तजीने धाय ।

मोहना दलने जई मिले, कोइक कर्म पसाय॥ ९॥
सुं करिये कहिये किसुं, किहां जईएं फरियाद ॥
अहो वेरा वाधी गया, किम जीतासे वाद ॥ १०॥

॥ ढाल ॥ ७८ ॥

॥ असवारी नृप शांति जी हो लाल, एदेशी ॥
मुख मरकलमो देइने रे, सदबोध कहे तव स्वामि॥
महा राजा॥ आरति अछती एवमी हो लाल॥ करो
छो स्ये कारणे रे, ए तो कायरनुं काम ॥ म. ॥ १॥
हिमत कहो किम हारिये हो लाल, ए सुं कांई नवुं
अछे रे, अनादी ए चाल ॥ म० ॥ चाल्यो आवेछे
सदा हो लाल॥ लोक स्थिति भगनि वमी रे, तेह तो
कर्म न लोपे स्वाल॥ म. ॥ हि. ॥ २ ॥ काल परणित
कर्मनो रे, छे पटराणी प्रौढ ॥ म. ॥ वाही न जाओ
ते वसी हो लाल, भवितव्यता करे भाजणी रे, गतिछे
तेहनी गूढ ॥ म. ॥ हि. ॥ ३ ॥ जे संसारी जीवने रे.
भव करवा छे भूर ॥ म. ॥ हितकारी तुमे तेहने हो
लाल, आरोपो कंचे पदे रे, नबट आणी कर ॥ म०
॥ हि० ॥ ४ ॥ चौद पूर्वधर जो करो रे, उपशां

त मोह आरूढ ॥ म० ॥ तो पण ते जीव तिहां थ की हो लाल, मोहादिकने मलि करी रे, महा अ ज्ञानी मूढ ॥ म० ॥ हि० ॥ ५ ॥ नवमां उत्कृष्टो भमे रे, अर्द्ध पुदगल परावर्त्त ॥ म० ॥ विवहार ए अनादिनो हो लाल, चाल्यो आवे सहु जीवने रे, भमतां भव आवर्त्त ॥ म० ॥ हि० ॥ ६ ॥ विस्मय इयो ते वातनो रे. हृदयमां राखवो रेप ॥ म० ॥ तट वेठां जुओ तुमे हो लाल, मिथ्या मृग जव हो अठो रे, जे कांई अविवेक ॥ म० ॥ हि० ॥ ७ ॥ अ रिनो अेक भीरु अे रे, ठेदी अमूलनो पक्ष ॥ म० ॥ यश पमहो वजावस्यां हो लाल, सुखी संसारी अे जीवने रे, करस्यां सहु समक्ष ॥ म० ॥ हि० ॥ ८ ॥ तो पण सिद्धहोसे सही रे, भवितव्यताने भोग ॥ म० ॥ समवायमां संयोगथी हो लाल, स्थिति काल प रिणतें रे, शुभ कर्मोदय जोग ॥ म० ॥ हि० ॥ ९ ॥ ते आपण कहो अठो रे, अेक अे पाम्या सहाय ॥ म० ॥ अे पण न घटे आलोचवूं हो लाल, बहु भीरु पण पामिने रे, मोहादिक मुंकाय ॥ म० ॥ हि० ॥ १० ॥ रोधन करे रूवा थका रे, बाकी बल नवि होय ॥

म० ॥ अरीअें आपण ऊपरें हो लाल, अंत कीजें तक जोय ॥ म० ॥ हि० ॥ ११ ॥ अेक अेकेमे आणि जुओ रे, सनु अंत सहाय ॥ म. ॥ स्याने थाओ सहु आकुला हो लाल ॥ जय पराजयनुं पार खुं रे, जाते दिअे जणाय ॥ म. ॥ हि. ॥ १२ ॥ ऊता वलानां पाळिया रे, धीराना प्रासाद ॥ म. ॥ सहु जाणे संसारमां हो लाल ॥ अगोत्तरमी ढालमां रे, उदय रत्न आल्हाद ॥ म. ॥ हि. ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

तव ते जेटले सर्व ते, सद बोधनुं व्याख्यान ॥
कारे तव कहाव्युं तिहां, कर्म परिणाम राजान ॥ १
अहो प्रतिज्ञा आज में, पूरी पामी तेह ॥
पण पांकीने पूरवें, तुमसुं करी हुती जेह ॥ २ ॥
पदमस्थल पुर राजिओ, सिंह विक्रम इणि नाम ।
कमलनी नामें के प्रिया, तस उदरे अभिराम ॥ ३
अंगज में अवतारिओ, सिंह रथ नामे सोय ॥
जे सहाय तुम तणो, जीव ते अवसर जोय ॥ ४
हवे करो हर्ष वधामणा, इणि भवें अे जीव ॥

पक्ष तुमारो पोपसे, आशक थई अतीव ॥ ५ ॥
पमशे नहि मोह पासमां, पूरण पुन्य सहाय ॥
आप्यो ठे में श्रेहने, जिणे पातक क्षय जाय ॥६॥
चलाव्यो केहनो नहिं चले, सदबोध सदागम लीन ॥
मुक्ते जातां लगि मोहने, दले न होसे दीन ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ७९ ॥

॥ वागा जांगी ढोल, श्रे देशी ॥

इम सुणि आणंद पूरि, हे सखि इम सुणि आणंद पूरि ॥ उवी ते महा आनंद भरे ॥ समकित आदि सनूर, मलिने महोत्सव बहु करे ॥ १ ॥ जिनेंद्र पुरनो लो क ॥ हे० ॥ वारु करे रंग वधामणा, सम्यो समूलो सो क ॥ हे० ॥ भीरुना ले भामणा ॥ २ ॥ बांधे तोरण बार ॥ हे० ॥ कमलें आछादित करु ॥ कनक कलस धारि द्वार ॥ हे० ॥ सोधे सोधे सुंदरु ॥ ३ ॥ सणगारी हट श्रेणि, हे० ॥ घर घर गुमी उठले ॥ छटकायो हरषेण ॥ हे० ॥ राज मारग कुंकम जले ॥४॥ मृग मदने घनसार ॥ हे० ॥ मेली चंदनने रसे ॥ रायांगण दरबार ॥ हे० ॥ बयल पु रुष ठांटे तिसे ॥ ५ ॥ कनक रत्ननी रासि ॥ हे० ॥ मन

मोदें थे मांगणा, अभय दान उल्हास ॥ हे. ॥ देव राए राजा घणा ॥ ६ ॥ वागामंगल तूर ॥ हे. ॥ माननें आप वधारियां ॥ सोभा वाधीसनूर ॥ हे. ॥ जिन मंदिर सिणगारियां ॥ ७ ॥ उदयरत्न कहे प्रेम ॥ हे. ॥ उगन्यासमी ए ढालमां ॥ धरमसुं धरजो प्रेम ॥ हे. ॥ मत पडो माया जालमां ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

हवे सिंह रथ ते राज सुत, सिसु पण पणे सोय ॥
देखी नमी गुरु देवने, हिये हरखित होय ॥ १ ॥
जनक साथे जिन मंदिरे, जई जोतां जिन रूप ॥
स्नात्रादिक संपेखतां, आनंद लहे अनूप ॥ २ ॥
साधु संगे सुख ऊपजे, श्रवणे सो होय वयण ॥
दान देतां दिल ऊलसे, निरखी रीझे नयण ॥ ३ ॥
इम पुण्योदय पोषतां, लघु वयमां तिणे सोध ॥
स्वल्प दिने सघली कला, सीखतां न लहे बोध ॥ ४ ॥
विषयनी न धरे वासना, केवल करुणा धाम ॥
साधु सवें श्रुत सांभले, भावे भव भाव विराम ॥ ५ ॥
रूपें रति पति हारयो, यौवन पाम्यो जाम ॥

सुललित सुरपति सारिखो, पण न गमे नारीनुं नाम ॥६॥
विरमे क्षण क्षण विश्वथी- वांछे शिव सुख वास ॥
गुण निधि नामे गुरु तिणे, एक दिन भेटया खास ॥७॥
चउ नाणी ते गुरु कने, शांभलि श्रुत सु विशेष ॥
विधिसुं ते संयम वरे, आरंभ त्यजी अशेष ॥ ८ ॥

॥ ढाल. ॥ ८० ॥

वेमले भार घणो छे राज वातां केम करो छो, ए देशी.
चारित्र धर्म राजा चितमांहि. तत्र पाम्यो महा संतोष ॥ परिकरसुं रहि ते पासें. पुन्यनो क रवो पोष ॥ १ ॥ इम ते जोर भमे अणगार. मोह नृपना भम सार्थे ॥ ए आंकणी ॥ अति अनुरक्त थ ई ते मुनिसुं. त्रिभुवननी जे त्राता ॥ सर्व विरति ना मे सा श्यामा. योगिनी जे जय दाता ॥इ०॥ २ ॥
॥ सदबोध योध सदा पासेथी. अध क्षण न रहे अ लगो ॥ सम्यक प्रकारें सम्यक् दर्शन. वपु सार्थे रहे वलगो ॥ इ० ॥ ३ ॥ अप्रमाद महा सिंधु ऊपर. भजि भावन अंबामी ॥ प्रसम कवच पहिरी भली भांते. विवेक निसान वजामी ॥ इ. ॥ ४ ॥ ते ग

जे वेसी सिर सोहावे, संतोष टोप सनूरे ॥ अढार सहस सीलांग सामते, परवारिओ दल पूरे ॥ इ. ॥ ५ ॥ धर्म धने दिन दिन वाधतो, पुण्योदय इणि नामे ॥ दंम नायक ते आगल दोमे, अरि ओसारण कामे ॥ इ. ॥ ६ ॥ समय समयप्रते शुभ मनना, प्रगटे जे परिणाम ॥ पायक ते चाले खल घायक, आगल जिहा अभिराम ॥ इ ॥ ७ ॥ अणिऐं अणि आवी ने भिमिओ, मोह राजा मुनि सामो ॥ वक्रस्थल वींध्युं तव तेहनुं, तरव कुंति धारि तामो ॥ इ. ॥ ८ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्ररूपी, खे त्रिहुंसल्लेंकारि त्रामे ॥ हृदयेमां रागने द्वेषने रोपें, कामिने कूटी पामे ॥ इ.॥ ९॥ ॥ जीव दया परिणाम निवाणे, हणे हिंसा सामत ॥ मृषा वाद ते सत भाषा, रूप मुद्गरें मारे सत ॥ इ. ॥ १० ॥ अदत्ता दान सुभटनु मस्तक, सौच भल्ले भेदे ॥ ब्रह्मचर्य भालामे महा भट, मैथुनने उच्छेदे ॥ इ० ॥ ११ ॥ मान सुभटनु मान मुनि, सोमा देव दंमे मोमे ॥ रिजु भालडियें माया मुसे, दोषी न दीठो ओमे ॥ इ० ॥ १२ ॥ संतोष यष्टिकाए ते भट, लोभनु मस्तक मोमे ॥ सूरो देखीने कोई स

नु, साहमां सिंग न जीमे ॥ इ० ॥ १३ ॥ देह ग्र सार चिंतन धर्म साधन, साहस सत्व निर्धार ॥ इत्या दिक ग्रायुधने जीते, परि सहने ते वार ॥ इ० ॥ १४ ॥ तनुनी थिरता सेई तोमर, उन्मूली उपसर्ग ॥ इ म मारि कीधो ग्रचेतन, वेरीनो तेणे वर्ग ॥ इ० ॥ १५ ॥ इण रोघ कवाने मारे, परिग्रह भटने त्रोमे ॥ क्षमा रूपीग्री खमग धरीने, क्रोधनी सिवि विद्रोमे ॥ इ० ॥ १६ ॥ वदयरत्न कहे ग्रेसीमो. ढाले धरमो लोक ॥ सदा करजो, सेवा साधुनी, जे साधन प्र

काल लगें आदर घणे, तारचां बहु नर नारी रे ॥ न.
॥ १ ॥ संलेखना सो साधुवे, बहु भेदें कीधीरे ॥
द्रव्य अने भावे थकी, अछे जे प्रसिद्धि रे ॥ न.
॥ २ ॥ तव गीतारथ तपोधने, पुरथी परवरि आ रे॥
पर्वतनी कमणे जई, संथारो करिओ रे ॥ न० ॥
३ ॥ प्रथम शिला तल पूंजिने, मांजनो संथारो रे॥
पाथरीने ऊपरें, मन करि एक तारो रे ॥ न० ॥
४ ॥ वेसी पर्यकासने, कर संपुट सीसेरे ॥ अमा
मोने ऊचरे, सक्रस्तव सुजगीसे रे ॥ न. ॥ ५ ॥
नमी सहु जिन राजने, सासनपतिने सोई रे ॥ भण
वोने पूछे नमी, गुरुने गुण जोइ रे ॥ न. ॥ ६ ॥
पवल्या छे तो पण पछे, पापस्थान अढार रे ॥
प्रेमेंसुं ए पचखे फरी, नियमें चार अहाररे॥ न.॥ ७॥
प्रतिबंध तननो परिहारि, अतिचार आलोए रे ॥
अहार सवि पचखे वलि, हिए हरषित होए रे ॥
न० ॥ ८ ॥ पादोपगमन अणसण, लेई गह गहितो

रे ॥ न० ॥ १० ॥ समाधि कालें कारि थयो, सातमें सुर लोगें रे ॥ दिव्य ते महर्द्धिक देवता, संयम फल योगे रे ॥ न० ॥ ११ ॥ उत्कृष्टो तिहां आउषो, सागरोपम सोल रे ॥ भोगवे एके आगलुं, करतो रंगरोल रे ॥ न० ॥ १२ ॥ उदय वदे एकासिमी, ढाल एमें बोली रे ॥ संसारमां धर्म सार छे, जुओ अंतर खोली रे ॥ न० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

तीर्थ तीर्थकरनी तिहां, भगति करी तिणि भाव
पुण्योदय पूढो कियो, मुनिने सीस नमावि ॥ १
सुरपदना सुख भोगवी, तिहांथी चविने तेह ॥
कमल पुर नामे पुरी, वारू पूर्व विदेह ॥ २ ॥
श्री चंद्र नामे नृप तिहां, कामिनी कमलास ॥
अंगज तेहनो ऊपनो, भानु नामे ते खास ॥ ३
पूर्व परि बाल कालथी, धरतो तिमज धर्म ॥
पुण्योदयने पेखतो, करे सदा शुभ कर्म ॥ ४ ॥
अनुक्रमें भोगवी राज सुख, पुत्रने आपी पाट ।
दीक्षा ग्रही तिणे मोह दल, दारि करयं दह वाट ॥ ५

संयम सूधु पालने, अंते अणसण धारि ॥
नवमें ग्रैवेकें सुर थयो, ते भानु अणगार ॥
त्रीस सागरोपम आउखो, पाली पूर्व विदेह ॥
पदम पुरें ते सुत थयो, सीमंतक नृप गेह ॥
राजवियां सिरसेहरो, इंद्रदत्त अभिधान ॥
राज्य तजी संयम भजे, तिमज ते तिणि थान
क्षीण पमामी मोह दल, पुण्योदय करि पुष्ट
अंते अणसण उचरे, दूर करया अरि दुष्ट ॥
मरण समाधी ते मरी, सर्वार्थ सिद्धि विमान ॥
अहमिंद्र सुरपणे ऊपनो, महर्द्धिक महा रिद्धिवान

॥ ढाल ॥ ८२॥

॥ घण समर्थ पीउ नान्हमो, ए देशी ॥
सकल मंगल जय दायिनी, चारित्र धर्म राजानी सेव ॥ भुवन भानु कहे केवली, फल तेहना नृप सुण तुं हेव ॥ स० ॥ १ ॥ एहज गंधिलावती विजये, इंद्रपुरीथी अधिक अनूप ॥ चंद्रपुरी नामे पुरी, अकलंक नामे राजा तिहां भूप ॥ स०॥ २ ॥
सकल भूपाल मौलि श्रेणि, पूजित छे जस पद्म

रविंद ॥ सुभग समृद्धि सर्के करी, श्रवान तल आप
जिम इंद्र ॥ स० ॥ ३ ॥ जे श्री जिन पद पंकजें
मधुकरनी परें रहे मगन्न ॥ देवी छे तेहने सुदर्शना,
शीलसुं जेहने लागी लगन्न ॥ स० ॥ ४ ॥ धवल
समकित धारिणी, सुपन मांहि ते देखी सिंह ॥ उ
ज्वल ससिसो एकदा, वदन प्रवेश करंतो अबीह ॥
स० ॥ ५ ॥ ते इंद्रदत्त अणगारनो, तिहांथी जीव
चवी ते तास ॥ उदरें आवी रूपनो, पुत्र पणे पहो
ती मन आस ॥ स० ॥ ६ ॥ तव सा हरखी सुपन
ते, जगतपतिने भाखे जाय ॥ सुपन पावक तेमी
तदा, परमारथ तस पूछे राय ॥ स० ॥ ७ ॥ तनुज
हांसे तुम ते कहे प्रभुजी, ए उत्तम सुपन पसाय ॥
कुल दीवो कुल केसरी, अखंम भूमंमल भोगी राय

त तो. तरणि परें तपे तेजवान ॥ स० ॥ ११ ॥ ह रखी हिए हलरावती, मोटा मुक्ताफलनो हार ॥ उछसती उरें दामिने, चंद्र धारा दासिएं ते वार ॥स० ॥१२॥ वसुवा पतिने वधामणी, तनु जन्यानी दीधी तिणे जाय ॥ पहोंचे सात पेढी लगें, दान तेवुं तस दीधुं राय ॥ स० ॥ १३ ॥ नगरमांहि नव नवा, मादलना थाए धोंकार ॥ आणंद रंग वधामणा, उ रसव तिहां थाए अपार ॥ स० ॥ १४ ॥ कनका दिक बहु दान थे, बंधिवानना छोमे बंध ॥ महापूजा जिन मंदिरे, नेहसुं रचावे नरेंद ॥ स० ॥ १५ ॥ खान पानने दानसु, गीत गान अति तान मान ॥ राजाने पुरजन सवें, मुदित करयो देई बहु मान ॥ स० ॥ १६ ॥ मानने माप वधारियां, राजकर मेल्यां

केहेवी वेला छे कहो, तव तिहां बोल्यो तेह ॥
महा राजा मन देईने, सांभलो धरी सनेह ॥ २
संवत्सर सानंद ए, सरद रितु सुख कार ॥
कार्तिक मास कल्याण कर, तिथि छे बीज उदार ॥ ३ ।
सुर गुरुवार सोहामणो, ऋक्ष कार्तिका वृष रास ।
धृतियोग कौलव करण, शुभ ग्रह निरक्त पास ॥ ४ ।
लगन अछे लख लाभ कर, ग्रह सर्व उच्चस्थान ।
आव्या छे होरा लहो, उर्द्ध मुखी राजान ॥ ५ ॥
पाप ग्रह इग्यारमें, भावि छे सुणो भूप ॥
एहवी वेला ए जनमिओ, कुमर होसे कुल रूप ॥ ६ ॥
सूर, वीर धीर अति, तेजस्वी जसवंत ॥
धर्मी प्रतापी महा धनी, राजेंद्र होसे तंत ॥ ७ ॥
वृष रासि ए जनमिओ, फल हवे शाभल तास ॥
जोसी कहे जोई जुगतिसुं, अवनि पति सुण उल्लास ॥८

एवं गुण गुणोपेतो, वृखेजातो नवेश्वरः ॥
समाना सतंजोवे, पंचविंसति कोर्य हि ॥
नृमृतश्चतुष्पदातस्य, मरणं रोहिणो वुधे ॥

॥ ढाल. ॥ ८३ ॥

॥ कोई पन्न ल्यावे दीन नाथनुं, ए देशी ॥
जूओ पुण्यतणा फल प्राणिआं, भव फंद जे फसे॥ पुण्ये ग्रह होय पाधरा, वलि वेरीनवि हसे॥ जू. ॥१॥ बारे रासिना फल वहु, भाख्यां भावि भांति ॥ श्रव नि पतिने इणि परें, गुणके गुणवंत ॥ जू॰ ॥ २॥ महाविदेह क्षेत्रमां, उपनो ते माट ॥ कोमि पूरवनो आउषो, लहो तेहनुं सु घाट ॥ जू॰ ॥ ३ ॥ वलि ते जोसी नृपने वदे, वारे रासिना वहुला ॥ फल भाष्या ते आगमें, समझो ए सघलां ॥ जू. ॥ ४ ॥ सीखव्यां सु शिष्यने, सर्व जे सुभ टाणे, व्याप्या तिहांथी विश्वमां, तेह काल प्रमाणे ॥ ज. ॥ ५ ॥

अतींद्रियार्थं तच्छास्त्रं, सर्वं सर्वज्ञ पूर्वकं ॥ १ ॥
ततो त्रय व्यभिचारस्या, स्केवलं नर दोषतः ॥
विभागहीनं जानीते, शास्त्रस्याल्प श्रुतोनरः ॥ २ ॥
जन्म समय जोता सही, बालक ए बलिओ ॥ हो
से जाचाहि राजस्यो, अनमी अति कलिओ ॥ जू०
॥ ६ ॥ जाण घणुं जोसी तुमे, सदा रहो ताजा ॥ स
त्य कहो संशय विना, रीफि कहे राजा ॥ जू० ॥
७ ॥ सर्वज्ञ पण संदेह विना, साचुं कुण भाषे ॥ अ
ज्ञानीनुं उचर्युं, कोई कबूल न राखे ॥ जू० ॥ ८
ज्ञानी विना ज्ञाननो, निर्वाह किम थाय ॥ सर्वज्ञ वि
ण संसारमां, किणे सत्य कहेवाय ॥ जू० ॥ ९ ॥ नेमे
इम प्रसंसिने, दान जोसीने दीधुं ॥ राजाएं महा री
फनुं, लक्ष्मी फल लीधुं ॥ जू० ॥ १० ॥ दानमाने
सनमानिने, विसर्ज्यो तेह ॥ उदय वदे कही ढाल

पांचे धावे पाली जतो, वाधे दिन दिन वीर ॥
पुण्योदयना पूरथी. शिशु ते महा सुधीर ॥ २ ॥
बालपणाथी बहु थयो. सदबोधसुं तसु संग ॥
समकित तो साथेज छे. पूरण पुण्य प्रसंग ॥ ३ ॥
सकल कला साधी सवल. क्षमा गुण न लहे क्षोभ ॥
शुरता अने गंभीरता. थिरता थई थिर थोभ ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ८४ ॥

॥ आसाढा धुरे उनयो. ए देशी ।.
योवन वय ते पाम्यो यदा. वाध्यो तव तनु वानो रे॥
सुजाण सूधा जन संगनो. तेहने लागो तानो रे ॥
यो. ॥ १ ॥ स्नात्र महोत्सव नित करे. विधिसुं सुणे
गुरु वाणी रे ॥ देहरे देव पूजे सदा. अंगे वस
ट आणी रे ॥ यो० ॥ २ ॥ सासननी उन्न
ति करे. रथ यात्रा गीत गानो रे ॥ नृत्य करावे
नित नवा. दीनने दिए दानो रे यो. ॥ ३ ॥ चारित्र ध
र्मना सैन्यसुं. अति परिचय थयो तासो रे ॥ वोही
कें निज वल लेईने. मोहें लीधो वन वासो रे॥ यो.
॥ ४ ॥ राग द्वेष दूरें रहे. मबकी मारी क्रोधे रे ॥

सेल राजन जुए साहमुं, सवता कूपने सोधे रे ॥ यो. ॥ ५ ॥ सागर खारि सागरें, गयो जोइ गति मावो रे ॥ विषय पंचेनी वासना, निपट जाय ते नावो रे ॥ यो. ॥ ६ ॥ कृपणता कोपी घणुं भय पामी जाए नागी रे ॥ अवीनयें कचालो मरचो, लालचने बीहक लागी रे ॥ यो. ॥ ७ ॥ विनय प्रसम मृदुने रिजुं, संतोष आदि सुरंगे रे ॥ गांभीर्य स्थैर्य सौर्या दिक, गुण वस्या तसु अंगे रे ॥ यो. ॥ ८ ॥ दशो दिशें कीरति प्रसरी, मात पिताने मो दे रे ॥ अतिसय तेऊपर ऊपनो, कृण न खमाए वि ग्रोहो रे ॥ यो. ॥ ९ ॥ घर घर गुण गीत तेहना कुल वधु गाए केई रे ॥ केई सुरी केई किन्नरी, हीए हर्ष धरेई रे ॥ यो. ॥ १० ॥ भाट चारण

॥ दोहा ॥

जस सघले यस विस्तर्यो, ते यसनो लुवधी जोर ॥
रूप रंभ हरावती, राज सुता तिण वोर ॥ १ ॥
मन मेटी गुण पेटी ते, साथें लई शुभ साज ॥
अनेक एहवी एके समे, कुमरने वरवा काज ॥ २ ॥
पूरव उपचित पुण्य फल, कुमरनु कांई वलवान ॥
आवी आखर हवि तेहनो, स्वयंवरा तिणि स्थान ॥ ३ ॥
सकल कलाए सोभती, सुमुखी सकल सुरम्य ॥
कीतारा नृपे आपिया, रहेवा तेहने रम्य ॥

॥ ढाल ॥ ८५ ॥

॥ अवधे आविये महाराज, ए देशी ॥

वृतविषे मन वासना, वली कुमरनी व्रलवंत ॥ वसी तिण विवाहनो, कांई चाह न धरे चित ॥ तव इम कहे माताने तात ॥ १ ॥ सुदर्शना तस मावमी, चक्रसेन राजा आप ॥ अभिप्राय कुमरनो अभिखो, जई करे इम जवाप ॥ त० ॥ २ ॥ खांते ते खोखा पाथरी, खरे दुखे पमदो खोल ॥ एकांते अंजली बांधिने, बोले तेहवा बोल ॥ त० ॥ ३ ॥ मावीत्र धर्मनुं मूल

तो, जेहनो ओसींगल न थाय ॥ पुत्रनुं मोठे अठे, इम जंपे श्री जिन राय ॥ त० ॥ ४ ॥ माचित्र जो केरी देखावेतो, कह्यो अमारो एक ॥ मानि मन कोमल करी, हठी न थईएं छेक ॥ त० ॥ ५ ॥ तुफ गुणें आकर्षी थकी, बहु राजसुता गुणरास ॥ मात पितानी मोकली, आवीछे आपणे वास ॥ त० ॥ ६ ॥ स्वयंवरा ए सुंदरी, नाजुक नवली वेश ॥ इहां आवी जो पाछी फरेतो, कजस थाए देश ॥ त० ॥ ७ ॥ अबला निरासे ए वली, तो अमने आरति होय ॥ आंटी तजी तूं तेवती, एक वार वंचो जोय ॥ त० ॥ ८ ॥ कह्यु अमारुं जो करो तो, हरिणीपीएं हाथ ॥ महीने मन, मेलिसुं, सुख भोगवो सहु साथ ॥ त० ॥ ९ ॥ बापमो इहां चालिने, आवीछे धरी उमेद ॥ इण पूरी येहनी, भोगवी सुख बहु भेद ॥ त० ॥ १० ॥ अमने पण सुख ऊपजे, जो जोइएं तहारुं राज ॥ पछी पाट आपी पुत्रने, साधजे परभव काज ॥ त० ॥ ११ ॥ मा बापनुं मन राखतां, अवगुण तुफने रेख ॥ इहां ऊपजतो नथी, दिसमां विचारी देख ॥ त० ॥ १२ ॥ पंच्या,

सोमी ढारुमां, उदयरत्न भाखे एम ॥ ओसंगिया मांय वापना, कहो न थाईएं केम ॥ त० ॥ १३॥

॥ दोहा ॥

वंसी कुमर तव चिंतवे, अहो ए मोटो बंध ॥
ए म्हारा बापनो, एकज हूं छूं नंद ॥ १ ॥
ए ओलंघुं आण जो, तो ए आरति लहे अत्यंत
तिणे मुझ मननी कामना, हवणां न होवे तंत ॥ २
पूरु तिणे प्रेमे करी, हवणां हूं ए हुतो हुंस ॥
छूटाए नहिं जे विना, सोपाउं जो सुंस ॥ ३ ॥
भोग फल विण भोगवे, योगनो न मिले योग ॥
संयोगने सरसा अहारनो, जिम न गटे संयोग ॥ ४
इम मनमां आलोकिने, मात तितानो मोद ॥
पुरो ते पामयो तिणे, वधु वरी सविनोद ॥ ५ ॥
वारु विवाह उत्सव करयो, पुर जन वाधी प्रीत ।
आनंद सहुने ऊपनो, रूमी देखो रीत ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ८६ ॥

॥ नवऊ पडेमो रे, ऐ देशी

तव अकलंक ते राजिए रे, सुंदर जोई शुभनारी रे

जो जो पुन्यथीरे ॥ कुमरने काजें करावियारे, मो होल घणुं मनोहाररे ॥ जो० ॥ १ ॥ पुण्यथी परि घल भोग, सुखसंयोग पामी जोग रसियो भोगवे रे ॥ अेक पासें वहि आपगारे, अेक पासें आराम रे ॥ जो० ॥ कीमा गिरि सर वापिअेंरे, ओपे ते थल अभिरामरे जो० ॥ २ ॥ वारु वृक्षनी आवलीरे, दीसे गहिर गंभीररे ॥ जो० ॥ आगल करंज ऊछ लेरे, नीझरणे करे नीररे ॥ जो० ॥ ३ ॥ सुंदरीना सोहामणारे, विहुं पासा प्रासादरे ॥ जो० ॥ विच वेठक नो बंगलोरे, विमानसुं मांमे वाद रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ पोपट बोले पांजरे रे, हेवे हींमोलाखाटरे ॥ जो० ॥ जो० ॥ ऊपर मोतीना जूंबखां रे, चंद्रुएं शुभ थाट रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ बत्रीस बद्ध तिहां वेसीने रे, निरखी नाटारंभ रे ॥ जो० ॥ नित नवला सुख भोगवे रे, नित नवला आचंभ रे ॥ जो० ॥ ६ ॥ सुरना जेहवी साहेबी रे, भोगवे जे भरपूर रे ॥ जो० ॥ पूर्व भवना पुण्यथी रे, नित नित चढते नूर रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ कुवलयचंद्र केवली कने रे, तात देई तेहने राज रे ॥ जो० महाव्रत लेई मुगतें गयो रे, सा

रयां आतम काजे रे ॥ जो. ॥ ८ ॥ माता पण म
हा वृत आदरी रे, पामी पहोती सुर लोक रे ॥ जो.
॥ वलि राजा राज भोगवे रे, पुण्यनो करे व
हु पोष रे ॥ जो. ॥ ९ ॥ अनमी आए मनाविआ
रे, सीमाडा सामंत रे ॥ जो. ॥ चालीस लाख पूरव ल
गें रे, राज करे ते तंतरे ॥ जो. ॥ १० ॥ वीश लाख
पूरव वोलिया रे, कुमर पणे निरधाररे ॥ सांठलाख
पूरव सहु मली रे, इम बोल्या उदार रे ॥ जो० ॥
११ ॥ दया धर्म दीपाविआे रे, जैन सासन तिणे
जोर रे ॥ जूना देवल जिन राजना रे, समराव्यां
ठोरे ठोर रे ॥ जो० ॥ १२ ॥ नवा पण निज दे
शमां रे, पोढा बहु प्रासाद रे ॥ जो० ॥ ग्राम नगर
सीम डुंगरे रे, कराव्या मन आल्हाद रे ॥ जो० ॥
१३ ॥ सघपति तिलक धरावीने रे, रथयात्रा करी रं
गरे ॥ जो० ॥ देसें देश दीपाविओ रे, श्री जिन
धर्म अभंगरे ॥ जो० ॥ १४ ॥ भोग तिणे अेहवा
भोगव्यां रे, देवने जे दुर्लभरे ॥ जो० ॥ राज करता
पण रागिओ रे, दिलमा न धर्यो दंभ रे ॥ जो०
॥ १५ ॥ उदय रत्न इम उचरे रे, छयासीमी ढाले

। २ ॥ पण ते तो २ आखर अनित्य छे जी, वा
घेणने २ सुखें जिम कोई हो ॥ पसिने २ वाढे
नीवबुं जी, पण केतो २ जीवे सोइ हो ॥ ज०
॥ ३ ॥ मूढ मनसुं २ मानि मोहें करी जी, योव
नने २ रूप अनूप हो ॥ पण दुष्ट २ रोग तणे व
सें जी, क्षणमांहि २ थाए ते कुरूप हो ॥ ज० ॥
४ ॥ सुर वधुना २ जे मन रंजिवे जी, तेहने न करे
२ चंमाली कबूल हो ॥ जराने २ रोगना योगथी
जी, तेहवुं तनु, ते० थाए सूल हो ॥ ज० ॥ ५ ॥
बाल दृष्टि २ जे प्यारो लागे बहुजी, कमलारो २
कोमि वपाय हो ॥ इवतां २ आवी नवि मिलेजी,
मले तो २ जोतांमां जाय हो ॥ ज० ॥ ६ ॥ छते
तो, छते तो सुख नहीं तेहवुंजी, वित्त जाते २ जेहवुं
दुःख थाय हो ॥ जो रहे तो २ आखर पण छांमवुं
जी, तेह धनने, ते० काज कुण थाय हो ॥ ज० ॥
७ ॥ राज्य पदनो रा० पण मद जे करे जी, अवि
वेके २ नुं विलसित तेह हो ॥ भूप केई २ भीख
मागे घणां जी, जिहांरे २ आवे पुण्यनो छेह हो ॥
ज० ॥ ८ ॥ जोरासी २ होय जे जेहथी जी, ते

तेहने ते॰ गंजे तत काल हो ॥ जगिमच्छ २ गया गलि नी परेजी. एक एकनो २ जाणो काल हो ॥ ज. ॥ ९ ॥ जाव जीव २ जो कोई पुण्यथी जी, राज हुंती २ भ्रष्ट न थाय हो ॥ उत्कृष्टो २ तो आरंभ करी जी, सातमी ते २ नरके जाय हो ॥ ज॰ ॥ ॥१०॥ राज काजे २ केई रणमां मरेजी, रंगिला रे जे राजान हो ॥ राज तेहने रा. कांई काजे आवे नहीं जी, तो तेहनु तो. कीजे शुं मान हो ॥ ज॰ ॥ ॥ ११ ॥ सुत बंधु सु. बंधु आदी सहु जी, परिकर प. माहरी पुत्र हो ॥ आणमानी २ सदा चाले छते जी, पण भली प. श्रे वाधी मूत हो ॥ ज० ॥१२॥ आप गरजें आप गरजें सहु आवी मिलिजी, पर गरजें पर गरजे नमंमे को पाय हो॥ कुण माता कुण

जी, सत्यासी सत्यासी थई ढाल हो ॥ केवली ते केव ली ते भुवन भानु भणे जी, चंद्रमौलि चंद्रमौली सण भूपाल हो ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सरस गात श्रवण सुणुं, रमणीक जोउं रूप ॥
भला गंध नित भोगवुं, रस आस्वादुं अनूप ॥ १ ॥
फरस सुकोमल फरसिये, ए पंच विषय सुख देखि
मान करे को मूढ नर, ते पण मोहविशेष ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ८८ ॥

॥ रे मन पंखीआ म पमीस पंजरे संसार ॥
॥ माया जालरे, ए देशी ॥

रे मन मूढ तूं म पमीश मोहमां, ए विषयना सुख देखिरे ॥ टेक ॥ भोगवता क्षण भला भासे, विषय ए विष रूप रे ॥ समयांतर ते विरस लागे, सीत समे जिम धूप रे ॥ रे० ॥ १ ॥ लोला वियनी स दा लगे, अज्ञानीने अनूप रे ॥ ज्ञानी नर ते इम ग णे, ए केवल छे दुःख रूप रे ॥ रे० ॥ २ ॥ सुख

तो सरसव जेटलुरे, दुःख तो डुंगर मान रे ॥ धिग पड़ो ते विषय सुखने, निपट जे निदान रे ॥ रे० ॥३॥ विषयने वस्त वेर परवसे, उपजे अनेक रे ॥ रे० ॥ लोक पण लख गमे जमे, भूप दमे ढेक रे ॥ ॥ ४ ॥ अण मलते ऊचाट थाए, आरति उपजे अंग रे ॥ मरणांत पण लहे आपदा, वहु पमया विषयने संग रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ मृग मीन मधुकर अने मयगल, परवसे पतंग रे ॥ एक एक इंद्रि रस आतुर, अंगनो करे भंग रे ॥ रे० ॥ ६ ॥ वंछित को इक लहे विरलो, पामीने पण आहि रे ॥ रोग वियोग ने जरा योगे, भोगवी सके नाहिं रे ॥ रे० ॥ ७ ॥

रे॥ रे. ११॥ आज लगें में एवमी कांई, लही न कालनी लात रे ॥ अवतार अहिले नीगम्यो, बा ळल दीवो वाथरे ॥ रे. ॥ १२ ॥ उदय रत्न कहे ए आवयासीमी, सुणो श्रोता ढालरे ॥ धर्मनो दृढ राख जो, जिम भाजे भव जंजालरे ॥ रे. ॥१३॥

॥ दोहा. ॥

कुवलय चंद्र ते केवली, जिणे तारयो मुक तात ॥
हवे जो भेटुं तेहने, तो साधु परमार्थ ॥ १ ॥
आतम चिंता इणि परें, करतां थयो प्रभात ॥
पोसहादि व्रत पारी तव, नारी ने नर नाथ ॥ २ ॥
देव पूजा दिल रीफिने, सिंहासने ते राय ॥
आस्थान सभा मंमप जई, बेठो जमी सभाय॥३॥
कुवलयचंद्र पण केवली, वलि नृपनो अभिप्राय ॥
ओलखीने आव्या वही, तिणि अवसर तिणि ठाय॥४॥
कनकमें पंकज ऊपरें, मृग रमण उद्यान ॥
परखदें वींटया केवली, बेठा ज्ञान निधान ॥ ५ ॥
सुर नर तिहां आव्या बहु, केवली कहे उपदेश ॥
वलि राजा पण तिणे समे, पहोतो तिणे प्रवेश ॥ ६॥

अभिगम पांचे साचवी, त्रण प्रदक्षिणा देह ॥
वंदिने बेठो तिहां, सुणवा धर्म सनेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल. ॥ ८९ ॥

॥ देवलोए गलाथी चूर्मो वापरिश्रो, ए देशी ॥ श्रोताजी ॥ धर्मनी देशना शांभली, प्रणमी मुनिनां पाय रे ॥ श्रो० ॥ पूछे अवसर पामिने, कर जोमी वलि राय रे ॥ १ ॥ श्रो. ॥ केवलिश्रे ते नृपनो मन हरिश्रो ॥ टेक ॥ प्रभुजी ॥ भगवन् में भव हारिश्रो, केवल विषयने काज रे ॥ प्र० ॥ सरण आव्यो हवे तुम तणें, जोणी तारण तरण जिहाज रे ॥ के० ॥ २ ॥ प्र० ॥ शेष रह्यो जे थाकतो, श्रे मारो अवतार रे ॥ प्र० ॥ सफल थाश्रे हवे जेहथी, तेह वो कहो प्रकार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ रा० ॥ केवली कहे तव तेहने, अहेज तुं भव श्रेक रे ॥ प्र० ॥ हारयो नथी सघ परवें, हारयो छे अनेक रे ॥ के० ॥ ४ ॥

लिओ, स्वामी, सुणो एक वात रे ॥रा०॥
सांभलवा इछुं अछुं, ते कहो म्हारो अव
दात रे ॥ के. ॥ ६॥ रा. ॥ केवली कहे सुण राजि
या, कोमि जीभे पण कीय रे ॥ रा. ॥ कहेतां न
पामे पारने, आयु पण पूरुं होय रे ॥ के. ॥ ७॥
रा. ॥ अचरज जो तुफने अवे, तो सांभल थई स
वधान रे ॥ रा. ॥ कहुं कांईक संपेपिने, अवदा
तुफ असमान रे ॥ के. ॥ ८॥ रा. ॥श्रोताजी ॥
इयरत्न कहे एटले, तेत्रासी निरधार रे
श्री. ॥ ढाल थई पण धर्मनो, आगे सुणो अधिक

पंच थावर विगलेंद्रिमां, पंचेंद्री तिर्यंच ॥
नरक अनार्य नर गति, वासिओ कर्म प्रपंच ॥ ४॥
वलि वलि पाछो वालिने, वेरोए वार अनंत ॥
निगोदादिकमां नाखिओ, कहेतां नावे अनंत ॥५॥
अनार्य देशे अवतरी, वसो अनंती वार ॥
नर भव नाहक नीगम्यो, मोह तणे अधिकार ॥६॥
कुजाति पंगु कुल हीण किहा, अंध वधिर गदपूर॥
इत्यादिक दोषे वसी, राख्यो मोह हजूर ॥ ७ ॥
पुदगल परावर्त्तन करयां, अनंत अनंतो वीर ॥
एकेंद्रियादिकमां घाखिने मोहें कीधो जोर ॥ ८॥

यतः

स्वजन धन भुवन यौवन , विनिता
तत्त्वायमनित्यमखिलं ॥ ज्ञात्वा पत्राण
सहं, धर्मसरण भजत लोका ॥ १ ॥

कुधर्मनी बुद्धि तव आमी फरी, त्रिदंमिओ तापस
कीध हो ॥ हो० ॥ एकेंद्रियादिकमां वली, अवता
रीने दुःख बहुला मोहें दीध हो ॥ ३ ॥ हो० ॥
पुदगल अनंता परावर्त्या वली, नर भव लही अंत
राल हो ॥ हो० ॥ कुधर्म बुद्धिने उपदेशे करी, जिं
हां तिहां पमयो जंजाल हो ॥ ४ ॥ हो० ॥ आल
स उंघादिक सुभटें मली, अलघो नाख्यो उघेमि
हो ॥ हो० ॥ तिमज अनंता पुदगल परावर्त्या, कु
दृष्टि लागी तिहां केम हो ॥ ५ ॥ हो० ॥ विजय
वर्द्धन पुरे नंदनने भवें, आयु टालिने सात हो ॥
हो० ॥ कर्म ते ठेव्या यथा प्रवृत्त करणे, स्वमर्गे ति
हां कारि ख्यात हो ॥ ६ ॥ हो० ॥ एक कोमा को
मि सागरनी स्थिती, साते रह्या ते शेष हो ॥ हो० ॥
ग्रंथी भेद लगि पहोतो जई, पण मोहें मेलावी टे

पंच थावर विगलेंद्रिमां, पंचेंद्री तिर्यंच ॥
नरक अनार्य नर गते, वालिओ कर्म प्रपंच ॥ ४॥
वलि वलि पांगे वालिने, वेराए वार अनंत ॥
निगोदादिकमां नाखिओ, कहेतां नावे अनंत ॥५॥
अनार्य देशे अवतरो, वलो अनंतो वार ॥
नर भव नांहक गमाव्यो, मोह तणे अधिकार ॥६॥
कुजाति पंगु कुल हीण किहां, अंध वधिर गदपूर॥
इत्यादिक दोषे वली, राख्यो मोहे हजूर ॥ ७ ॥
पुदगल परावर्त्तन करयां, अनंत अनंती वीर ॥
एकेंद्रियादिकमां धालिने मोहें कीधो जोर ॥ ८॥

॥ ढाल ॥ १० ॥

॥ होरे वणजारीमा, ए देशी ॥
इणि परें कीधी रे भवनी आवली, कलनी भमतां बहु कोमि हो ॥ हो रे सुण राजिया ॥ चोरासी लख जीवा जोनिमां, पग पग पाम्यो तूं पोमि हो ॥ १ ॥ हो० ॥ श्री निलय नगरें तूं थयो एकदा, वैश्रमण नामे वणीक हो ॥ हो० ॥ धर्मनी उपनी तिहां धापणा, श्लोक सुणी अेक रमणीक हो ॥ २ ॥ हो०

यतः

स्वजन धन भुवन यौवन , विनिता
तत्वाद्यमनित्यमखिलं ॥ ज्ञात्वा पत्राए
सहं, धर्मसरण भजत लोका ॥ १ ॥

कुधर्मना बुद्धि तव आमी फरी, त्रिदंमिओ तापस कीध हो ॥ हो० ॥ एकेंद्रियादिकमां वली, अवतारी ने दुःख बहुला मोहें दीध हो ॥ ३ ॥ हो० ॥ पुदगल अनंता परावर्त्या वली, नर भव सही अंतराल हो ॥ हो० ॥ कुधर्म बुद्धिने उपदेशे करी, जिहां तिहां पमयो जंजाल हो ॥ ४ ॥ हो० ॥ आलस उवादिक सुभटें मली, अलघो नांख्यो उवेमि हो ॥ हो० ॥ तिमज अनंता पुदगल परावर्त्या, कुद्दष्टि लागी तिहां केम हो ॥ ५ ॥ हो० ॥ विजयवर्द्धन पुरे नंदनने भवें, आयु टालिने सात हो ॥ हो० ॥ कर्म ते बेदयां यथा प्रवृत्त करणे, खमगें तिहां कारि ख्यात हो ॥ ६ ॥ हो० ॥ एक कोमा कोमि सागरनी स्थिती, साते रह्या ते शेष हो ॥ हो० ॥ ग्रंथी भेद लागि पहोतो जई, पण मोहें मेलावी टे

क हो ॥ ७ ॥ हो० ॥ अश्रद्धान राग द्वेषादिकें, पाळो वाली तिणे ताल हो ॥ हो० ॥ निगोदादिक मां तिमज फरव्यो, कह्यो न जाय ते काल हो ॥ ॥ ७ ॥ हो० ॥ वली मलय पुरें विश्वसेनने, भवें करी ग्रंथी भेदहो ॥ हो० ॥ अपुरव करण खडगतिणे बले, आगें वली धरो उमेदहो ॥ ८ ॥ हो० ॥ अनिवृत्ति करण दंम उसारिने, मोहादिक वेरी महा मछ हो ॥ हो० ॥ सम्यग् दर्शन मंत्री भेटिओ, अवसर पामी अवछ हो ॥ ९ ॥ हो० ॥ कुदृष्टि रागें तव दीधो दगो, सुभग भवें वली सोय हो ॥ हो० ॥ स्नेह रागें समकित हारिओ, जुगतें विचारी तुं जोय हो ॥ १० ॥ हो० ॥ विषय रागें वलि सिंह तणें भवें, जिन भ्रोएं द्वेष विशेष हो ॥ हो० ॥ ज्वलन सिख कोधें कुबेर मानथी, पदमें माया वसेण हो ॥ ॥ ११ ॥ हो० ॥ सोमदत्त लाभे इम अनेक भवें, ताहरें जोवें राजंस हो ॥ हो० ॥ मोह राजाना सुभट तणें वसें, हारयुं समकित रतन हो १२ ॥ हो० ॥ देश विरति हारी हिंसाएं सुंदरी, मणि भद्रमृषा वादें हो ॥ हो० ॥ सोमदत्त अदत्ता दानथी, दत्ते मैथुन

उनमाद हो ॥ १३ ॥ हो० ॥ धन बहुल सेवे परि
ग्रहने पूरे, रोहिणिएं विकथाएं हो ॥ हो० ॥ देश
विरति लही असंख्य भवें, हारी ते मोह महीमाएं
हो ॥ १४ ॥ हो० ॥ अरविंदने भवें सर्व विरति हा
री, क्रोधने मान पसाओ हो ॥ हो० ॥ चित्रमतिअे
विषय सुख लालचें, पाम्यो विजय सेन मूढाओ हो
॥ १५ ॥ हो० ॥ संयम अने चौद पूरव थकी, पुं
मरीकने भवें ढंघे हो ॥ हो० ॥ पामी अनंता पु
दगल परावर्तन, भमामयो भवसंगे हो ॥ १६ हो०
मोहादिकें मलीने इणि परें, तुफने वार अनंत हो. ॥
हो० ॥ भवमांहे भमामेयो फरी फरी, कहेता न
आवे तसु अंत हो ॥ १७ ॥ हो० ॥ वली सिंहरथने
भवें संयम वरें, अरपालित तेह आराधी हो ॥ हो०
॥ सुरलोके महा सुके सुर थयो, पुण्य दिशा तिहां
वाधी हो ॥ १८ ॥ हो० ॥ भानु भवें संयम शुद्ध
साधिनें, अणसणे मरिनें समाधि हो ॥ हो० ॥ नुमे
ग्रैवेयके वली सुर थयो, तिहां पण पुण्योदय वांधी
हो ॥ १९ ॥ हो० ॥ वली इंद्रदत्त महा राजा भवें
संयम साधि सुविधान हो ॥ एकावतारी सुर पद

पामिश्रो, सवार्थ सिद्धि विमान हो हो. ॥ २० ॥
॥ हो. ॥ तिहांथी चवीने इहां तुं उपनो, वली रा
जा बल वान हो ॥ हो. ॥ उदय वदे नेवुमी ढाल
मां, सुण सुणजो सावधान हो ॥ २१ ॥ हो. ॥

॥ दोहा ॥

संबंध ए निज सांभली, हिए ससंभ्रम होय ॥
मोदें मुनि पाए नमी, नेहे वदे नृप सोय ॥ १
भगवन ए भुर्मा घणुं, मोहादि महा दुष्ट ॥
जिम ते न ढले आभवें, कहो उपाय ते पुष्ट ॥
केवली कहे करी एक मन, विधे धरी अम चे
चारित्र धर्मनी चाकरी, सदा करो सुविवेक ॥
सर्वविरती जे सुंदरी, मोह कुल नीमंप नारी ॥
दुसमन जेने देखिने, हेला पामे हारि ॥ ४ ॥
बाला बीजीनें तजी, सदा भजो तसु संग ॥
दिलमां दश विध धर्मसुं, राखो अविहल रंग ॥
सद बोध महागम उपदेशो, सत्व धरी थई सूर
वढे मोहादिक वेरीसुं, दुष्ट जाए जिम दूर ॥
धर्म सुभटने जीतए, इम करतां संग्राम ॥

मोहादिकने मारिने, पामिसि संपदा ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ९१ ॥

॥ गोरीके नयन बने बने रे लाला ॥ ए देशी ॥
कथन ए केवलीना सुणी रे लाला, हृदयमां उपनो राग ॥ हो रे लाला ॥ अवसर ए वलो दोहिलो रे लाला ॥ इम चिंते महा भाग ॥ हो० ॥ १ ॥ मोदे महा बल राजा, मन रीझी मोहने रे, मोम देवा सं यम पंथे धरचो ॥ टे० ॥ इम चिंतीने उतावला रे लाला, जेष्ट सुत नय सार ॥ हो. ॥ रति सुंदरी राणी तणो रे लाला, जिण्यो तेमी तिणिवार ॥ हो. ॥ २ ॥ राज भलाव्युं तेहने रे लाला, सहु मंत्रीनी साप ॥ हो. ॥ पोते महा पूजा रची रे लाला, पूरिया याचक अभिलाप ॥ हो. ॥ मो. ॥ ३ ॥ अमारि पमहो वजमा विने रे लाला, महा महोत्सव मंमाण ॥ हो. ॥ वृत लेवाने संचरयो रे लाला, रंगभरे महाराण ॥ हो.॥ मो. ॥ ४ ॥ सामंत पुरजन मंत्रवी रे लाला, पांचसे लेई साथ ॥ हो.॥ अंतेउरी पण केटली रे लाला, सं ग धरी नरनाथ ॥ हो. ॥ मो. ॥ ५ ॥ पंच महा वृ

त ऊचरी रे लाला, आवी ते केवली पास ॥ हो. ॥ नृप ते केतिक नारिसुं रे लाला, पांचसे नर सुहल्ला स ॥ हो. ॥ मो. ॥ ६ ॥ कल्प क्रिया श्रुतनी कला रे लाला, गीतार्थ गुण जेह ॥ हो. ॥ पुण्योदयना प्र भावथी लाला, सीखि दिन थोमे तेह ॥ हो. ॥ मो. ॥ ७ ॥ चौद पूर्वधर ते थयो रे लाला, अतिसय वंत अपार ॥ हो. ॥ कुवलयचंद्र केवली तदा रे लला, आपी एहने गछ सार ॥ हो. ॥ मो. ॥ ८ ॥ पोते शैलेसीएं करी रे लाला, कर्म खपावी शेष ॥ हो. ॥ परमपद पाम्या सही रे लाला, अमर थयो अले ख ॥ हो. ॥ मो. ॥ ९ ॥ राज ऋषि रूमी परे रे लाला, वली आचारय तेह ॥ हो. ॥ सदबोध सदा गम योगथी रे लाला, भरिनो लेतो छेह ॥ हो. ॥ मो. ॥ १० ॥ ग्राम नगर पुर आगरे रे लाला, विचरे देश विदेश ॥ हो. ॥ मोहना बंधने मोमतो रे लाला, नर नारीना अशेस ॥ हो. ॥ मो. ॥ ११ ॥ वदय वदे ढाल ए कही रे लाला, एकाणुंमी अनूप ॥ हो. ॥ अवसर लहीने चेतजो रे लाला, जिम चेत्यो ब

॥दोहा॥

पाम्यो ते मुनि अन्यदा, अप्रमत्त गुणस्थान ॥
अकस्मात तव क्रूपनुं, अति विशुद्ध शुभ ध्यान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥१२॥

॥ हल्या सुणरे सुण माहाकाल, ए देशी ॥

मनना कोइ शुद्ध परीणाम, ॥ तदरूप लहो अभि राम ॥ क्षपक श्रेणि ताम पमग यष्टी ॥ पामी ति हा ते उत्कष्टी ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी जे च्यार कषाय ॥ तिणे ते घोर हण्या तिणे ठाया ॥ अशुद्ध मिश्र विशुद्ध त्रिहु भेद ॥ मिथ्या तस मूल उछेद ॥ २ ॥ फरसी अपूरव करण गुण ठाणुं ॥ वलि आगल की धुं पयाणुं ॥ अनिवृत्ति बादर गुणठाणे ॥ पहोतो शु भ ध्यान प्रमाणे ॥ ३ ॥ अप्रत्याख्यान प्रत्याख्याना वरण ॥ कषाय अष्ट पमामया मरण ॥ मारया पण ठामे न मुआ ॥ आवे अब सत्तता हुया ॥ ४ ॥ नर्क तिर्यच गतिअनु पूर्वी ॥ एकेंद्री लह्यो आदी ऊर्वी ॥ बेंद्री तेंद्री चौरेंद्रीजात ॥ आतप उद्योत

स्थावर ख्यात ॥ ५ ॥ सूक्ष्म साधारण नहीं फेर ॥ नामकर्मना भेद ए तेर ॥ निद्रा निद्रा प्रचला प्रचला ॥ थिण द्दि आदि त्रिण्य प्रमिला ॥ ६ ॥ प्रकृति ए कही जेती ॥ क्षय पमामी तेती ॥ पछे अड इच्या कषाय ॥ आठे ते मारया-ठाय ॥ ७ ॥ नपुंसकने स्त्री वेद ॥ हास्यादिक रिपु षट भेद ॥ पुरुष वेद सज्वलन कषाय ॥ क्रोध मान-माया हणित्या य ॥ ८ ॥ संज्वलना लोभने जेहवे ॥ मारि तव नासिने तेहवे ॥ सूक्ष्मरूप करीने छपीओ ॥ दशमें गुण ठाणे ते खपिओ ॥ ९ ॥ अंगु माणस अगवी स ॥ एह पमते पमयो मोह ईस ॥ अस्खलित गतें तव ते कछलीओ ॥ बारमें सोपाने वलिओं ॥१०॥ क्षीण मोह गुण ठाणे पहोतो ॥ मनमांहि घणुं गह गहितो ॥ उदय वदे दिल खोली ॥ वाणुंमां ढाल ए बोली ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

मति आवरणादिक तिहां, पाचे जे आवर्ण ॥
ते पंच रूपें ज्ञानावर्ण, पडिउत पमामयो मर्ण ॥१॥

दान लाभ भोगोपभोग, पांचमे वीर्यांतराय ॥
ए पांचे रूपे पामिओ, सामंत जे अंतराय ॥
निद्रा प्रचला निद्र बे, चक्षु अचक्षु अवधि ॥
केवल दर्शनावर्ण जे, दर्शना विधिवर्ण खटविधि।
दर्शनावर्ण नामे तिहां, सामंत ते महा सूर ॥
पाम्यो नव प्रगट्यो सही, अभिनव आनंद पूर।
घाति कर्म महा नायके, चरि थते चकचूर ॥
सैन्य सकल रिपुनुं थयुं, निर्नायक गतनूर ॥ ५
आवरणे अलगे थते, निर्मल केवल ज्ञान ॥
केवल दर्शन ए बन्हे, प्रगट थयां तिणिथान॥ ६॥
आंखि पमल जिम उघमे, झलके ज्योति अनूप ॥
तिम मुनिने रपि ते दता, लोका लोक विरूप॥ ७॥
सिद्धि सौधनुं तेरसुं, पगथीउंपाम्युं ताम ॥
सयोगि केवली गुण स्थानकें, पहोंतो सो गुण धाम ८॥
तव नृप चारित्र धर्मनुं, सैन्य सकल सम काल ॥
पाम्युं परमानंदने, वेरि थते विसराल ॥ ९ ॥

॥ ढाल. ॥१३॥

॥ कमल रस झुबखमां, एदेशी ॥

तिवार पछी वली केवली, मोहादिकना सु विलेप॥

दान लाभ भोगोपभोग, पांचमो वीर्यांतराय ॥
ए पांचे रूपे पामिश्रो, सामंत जे श्रंतराय ॥ २
निद्रा प्रचला निद्र वे, चक्षु श्रचक्षु श्रवधि ॥
केवल दर्शनावर्ण जे, दर्शना विधिवर्ण खटविधि॥
दर्शनावर्ण नामें तिहां, सामंत ते महा सूर॥

सकल जन सुख करू, मर्म प्रकाशी लोकने , गो मवो देई उपदेश ॥ स० ॥ १ ॥ विचरतां वसुधा तले, बहु जनना मोह बंध ॥ स० ॥ गामो गाम ठो मावतां, फेमता भवना फंद ॥ स० ॥ २ ॥ विहार करतां आविआ, अनुक्रमे आणि देश॥स.॥ सांप्रत तुम

रति ते जे बीजो कहे, पैराणिक ए पंथ ॥ स० ॥ ९ ॥ पण तुमने हित कारणे, करी कह्यो एह संबंध ॥ स० ॥ संखेपे में माहरुं, भाखे जे भव बंध ॥ स० ॥ १० ॥ उदयरत्न कहे आगमें, बोल्या जे छे बोल ॥ स० ॥ त्याणुमी ते ढालें सद्दहो, चित्त धरी रंग चोल ॥ स. ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

विस्तार जो वर्णवुं, चंद्रमौलि सुण राय ॥
तो कोमि पूरवने आउखे, पूरुं एह न थाय ॥ १ ॥
केवल ए जे कारणे, महा राज नथी हाल ॥
आहें संसारी जीवनो, सहुनो एहज चाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ९४ ॥

॥ बिंदली मन लागो, ए देशी ॥

चौद लोक च्यारे गति, जगमांहि सहु जीव ॥ महा राज ॥ मोह राजाना राज्यमां, भमण करे अतीव ॥ म० ॥ १ ॥ भवमां इम सहुए भमे, नथी कोइ ते स्थान ॥ म. ॥ एकेंद्रिनी जातिमां, भाखे श्री भगवा

न॥ म. ॥ २ ॥ भ० ॥ नहीं विगलेंद्री रूप ते, नहीं ते तिर्यंच जाति ॥ म.॥ नरकावासो ते नथी, नरक सोधतां सात ॥ म. ॥ ३ ॥ भ.॥ ग्राम नगर पुर पेपतां, नर लोके नहि तेह ॥ म. ॥ जिहां सहु जीव न ऊपना, अनंती वार अछेह ॥ म० ॥ ४ ॥ भ० ॥ भुवन पति व्यंतर ज्योतिषी, सौधर्म ईसान सुर लोय॥ देवनी देवी ते नहीं, जिहां उपना नहि सहु कोय ॥ म. ॥५॥ भ.॥ दश देव लोक आगले, नव ग्रैवेयक पर्यंत ॥ म०॥ माहे नथी कोई स्थान ते, जिहां उपना नहीं सर्व जंत ॥ म० ॥ ६ ॥ भ० ॥ जे सहु जीवे न भोगव्युं, ते सुख दुःख नहिं संसार ॥ म० ॥ द्रव्यथी नहीं जिन लिंगते, जे न लह्यो अनंती वार ॥ म० ॥ ७ ॥ भ० ॥ जाति योनि कुल ते नहीं, नहीं कोई तेहवो वेष ॥ म० ॥ सहु संसारी जीवमे, जे वेठयो न वार अनेक ॥ म० ॥ ८ ॥ भ० ॥ सामान्यथी कह्यो सर्वे, ए माहरो विरतंत ॥ म० ॥ भव अनंता जे भम्या, विचें विचें वार अनंत ॥ म० ॥ ९ ॥ भ० ॥ ते संख्याते आवपे, कहो किम कह्यो जाय ॥ म० ॥ क्रमें क्रमे मुखें कहेतां थकां, केता

एक कहेवाय ॥ १० ॥ भ० ॥ भारी दुःख में भोगव्या, असरण पण अनंत ॥ म० ॥ सरणे पण कुधर्मने, रेपन आव्यो अंत ॥ म० ॥ ११ ॥ म० सरण कर्युं जिन धर्मनुं, सम्यक् जो श्रीकार ॥ म० ॥ सुर नरना सुख भोगव्यां, पाम्यो तो भव पार ॥ म० ॥ १२ ॥ भ० ॥ स्वासत शिव सुख पामसुं श्री जिन धर्म पसाय ॥ म० ॥ तुझने पण तेहज हसे, सरण सदा सुखदाय ॥ म० ॥ १३ ॥ भ० ॥ सहु संसारी जीवने, सरण नहीं को अन्य ॥ म० ॥ जिन वयणे ते रत्तमां, धरणि तले ते धन्य ॥ म० ॥ ॥ १४ ॥ भ० ॥ चोराणुंमी चाहीने, उदयरत्न कहे एह ॥ म० ॥ दास कही ढलते स्वरें, पण हे अनुभव गेह ॥ म० ॥ १५ ॥ भ० ॥

॥ दोहा. ॥

पूर्ण संवेगे पूरिओ, नेत्रे धरतो नीर ॥
चंद्र मौलि नृप तव कहे, मुनिने मन धरी धीर ॥ १ ॥
प्रभु तुमे प्रसन्न थई, केवल म्हारे काम ॥
कथा विस्तारी ए कहो, उपकार सही अभिराम ॥ २ ॥

सल्‌जी संसारथी, पहोता पेले पार ॥
तो पण परने कारणे, उद्यम करो अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाळ ॥ ९५ ॥

॥ अमलतो चाकरी रे, एदेशी ॥

कहो भगवन करुणा करो, केता नीसरे एके कास ॥ प्रभु प्रकासीए रे ॥ अविवहार निगोदथी, प्राणी पुछे इम भूपाल ॥ प्र० ॥ १ ॥ विवहार·रासें थकी रे, जेता मुगतें जाए जीव ॥ प्र. ॥ कहे इम केवली रे, सूक्ष्म निगोथी नीसरी रे, आवे तेटला सदीव ॥ प्र. २ ॥

वरं तइया ॥ इकस्स निगो अरसं, अणंत भागो असिद्धि गओ ॥ १ ॥

तव राजा कहो प्रभु रे, निगोदथी निसरिया जीव जेह ॥ प्र ॥ एटलेज चाले ते सवे रे, पामि मुगति सदा सुख गेह ॥ प्र ॥ ४ ॥ बहु जीव तो माहरी परे रे, सीझेते जाणो तहकीक ॥ प्र ॥ थोमे कासें पण केटला रे, केता एक तेहथी नजीक ॥ प्र ॥ ५ ॥ मरुदेवामानी परे रे, केता एक सीझे ततखेव ॥ प्र ॥ अभव्य ते सीझे नहि कदारे, न चाले मोभि सामा जिम नेव ॥ प्र० ॥ ६ ॥ चंद्रमोलि नृप चाहिने रे, बोले तिहारे बे कर जोमि ॥ प्रभु मया करिरे ॥ तारो भव सागर थकीरे, मुकने मोह तणो मद मोमि ॥ प्र० ॥ ७ ॥ संयम लेवो में सहीरे, तम पासें तजीने राज ॥ भणे इम भूपतिरे, ॥ मुने कहे विलंबन कीजिएरे, साधतां परभवना काज ॥ प्र० ॥ ८ ॥ प्रेमे निज पाटें ठवीरे, नंदन चंद्रवदन इणि नाम नमो ते साधुने रे ॥ सुविधिसुं संयम वरे रे, साथें लई केतिक वाम ॥ प्र० ॥ ९ ॥ पुरजन वे संग केटलारे, केटलाएक वे मंत्री सामंत ॥ प्र० ॥ पंच

पाम्यो परमानंद पद, शाश्वत मुक्ति सुठोर ॥
अजर अमर अविचल थयो, जिहां नहि यमनो जोर ॥
स्नेह न को माता समो, घृत सम नहि रसघूट ॥
सुख न को शिव पद समो, शुं कीजे वैकुंठ ॥६॥
साकर समो न स्वाद को, मुक्ति समी न मौज[१]॥
संयम समोन सखाइओ, चित्तमां धरजो चोज ॥ ७ ॥

॥ ढाल. ॥ १६ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

कुमर इशुं मन चिंतवेरे, ए देशी ॥

धन्य धन्य श्री जिन धर्मने रे, पापीने रे जे करे पुनीत ॥ वढतां मोह दल वेरिशुं रे, जरामांहि रे जिणे लहियें जीत ॥ ध०॥ १ ॥ जगमांहि जे जे जीव मा, तजी कर्म भवने तीर ॥ पहोता पहोचे पहोचसे, ते तो जाणो रे जिण धर्म सुधीर ॥ ध.॥ २ ॥ कनक जिम लोहने करे, सिद्ध रस अमनां खेव ॥ तिम दुःखीने सुखिया करे, फरसतां रे समकित स्वयमेव ॥ ध. ॥ ३ ॥ जिम बलि कुमर बहु भव लणा, भवमांहि भमतां फेर ॥ समकित

महा वृत्त उचरेरे, चंद्रमौलि राजा गुण वंत ॥ प्र०
॥ १० ॥ न० ॥ थेमे दिन सोंपी घणी रे, विद्या
चौद पूर्व विस्तार ॥ न० ॥ योग्य लही वली केव
ली रे, आपे तव तेहने गढ भार ॥ न० ॥ ११ ॥
चालीस लाख पूर्व लगें रे, पल्यु संयम कांई न्यून ॥
न० ॥ कोडि पुर्वनो आउपो रे, सघलुं जाणो तदे
सोन ॥ न० ॥ १२ ॥ उदय रत्न कहे एटलो रे
पुरी पंचाणुंमी थई ढाल ॥ न० ॥ साचो श्री
जिन धर्म छे रे, बीजुं जाणो आल पंपाल न० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

अंते सेलसकरण जे, करमांही करवाल ॥
मोह रिपु दल सेखवें, फोडे देई फाल ॥१॥
वेदनीनि वली आवपों, नाम गोत निरधार ॥
भवोप ग्राही कर्म भट, चूरीने ए चार ॥२॥
चढी सोपाने चौदमे, अयोगि केवलि गुणठाण ॥
अइउरांत्रृ कहितां लगे, तिहां कीधुं रहिवाण ॥३

पाम्यो परमानंद पद, शास्वत मुक्ति सुठोर ॥
अजर अमर अविचल थयो, जिहां नहि यमनो जोर ५॥
स्नेह न को माता समो, घृत सम नहि रसघूट ॥
सुख न को शिव पद समो, शुं कीजे वैकुंठ ॥६॥
साकर समो न स्वाद को, मुक्ति समी न मौज ॥
संयम समोन सखाइओ, चित्तमां धरजो चोज ॥ ७ ॥

॥ ढाल. ॥ १६ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

कुमर इशुं मन चिंतवेरे, ए देशी ॥

धन्य धन्य श्री जिन धर्मने रे, पापीने रे जे करे पुनीत ॥ वढतां मोह दल वैरिशुं रे, जरामांहिरे जिणे लहियें जीत ॥ ध० ॥ १ ॥ जगमांहि जे जे जीवमा, तजी कर्म भवने तीर ॥ पहोता पहोंचे पहोचसे, ते तो जाणो रे जिण धर्म सुधीर ॥ ध. ॥ २ ॥ कनक जिम लोहने करे, सिद्ध रस अमतां खेव ॥ तिम दुःखीने सुखिया करे, फरसतां रे समकित स्वयमेव ॥ ध. ॥ ३ ॥ जिम बलि कुमर बहु भव तणा, भवमांहि भमतां फेर ॥ समकित

सरणुं आदरी, मोहने शिरे वाही समसेर ॥ ध. ॥
४ ॥ तिस भवि जन भावे तमे, जिन धर्म अवसर
जोय ॥ एक मने आराध जो, जिम जामण रे व
ली मरणन होय ॥ ध. ॥ ५ ॥ मलधारी गछ मंमणो
श्री हेमचंद्र सूरिंद ॥ ए चरित्रनी रचना तिणे, रची
छे रे रमणिक सुख कंद ॥ ध. ॥ ६ ॥ तेंचरित्रनी लेई
चातुरी, भल भला लेई भाव ॥ ए रास रच्यो आभि
नवो, अेन भव जल रे जाणो तारण नाव ॥ध.॥७॥
अधिकुं ओछुं कह्युं होय, मूल चरित्रथी मेंतेह ॥ मि
छामि दुक्कम मुजने हजो, सहुं संघनी रे साखे
करि तेह ॥ ध. ॥ ८ ॥ अशुद्ध जे कांई इहां,
मे कह्यो होय जवाप ॥ सूधा जन ते सोधजो, मुज
गुनहोर वली करजो माफ ॥ ध. ॥ ९ ॥ तप

टेरे नमीये ते माट ॥ ध. ॥ ॥ १२ ॥ श्री हीर रत्न सूरिंदनो, सोहे वडेरो सीस ॥ लब्धि रत्न पंडित तेहनो, नमु वाचकरे वलिऋषि गुण खास ॥ ध. ॥ १३ ॥ श्री मेघरत्न मुणिंदनो, अमररत्न अनुचर तास ॥ शिवरत्न गुरु सु पसाउ लैं, मैं गायोरे वलि ऋषि गुण खास ॥ ध० ॥ १४ ॥ संतरसें छगण्योतरसमे, वदि तेरस मंगलवार॥ पोष मास पूर्वापाढ मे, हर्षण योगें रे थयो हर्ष अपार ॥ ॥ ध० ॥ १५ ॥ गुणनिधि उनाउया धाममां, भीम भंजन श्रीजिन पास ॥ प्रसादें पूरो थयो, रस लहेरी रे नामेए रास ॥ ध. ॥ १६ ॥ जेसांभले सूधे मनें, भेभणे मनने भाव ॥ ते मुक्ति पामे मानवी, समता रसें रे सहुकर्म खपाव ॥ ध० ॥ १७ ॥ गगने ग्रह मंदिर गिरी, धरा सिंधु जिहां लगें धर्म ॥ अविचल रहि रहोतां लगें, एह संबंध रे दायक शिव सर्म ॥ ध. ॥ १८ ॥ आज संपी महारे आंगणे, सुर तरु फलिओ सार ॥ काम गवी प्रगटी नवी, आज अभिनव पयो जय जय कार ॥ ध. ॥ १९ ॥ सुखे श्रेणि मगल मालिका, दीपालिका दिन जेम ॥ भुवनभ

तु केवली , गुण गातां रे लीला लहिएं तेम ॥ ध.॥ २०॥ इम लघुमी ढालमां , उदयरत्न ध्यासी स ॥ सुख संपद वाधो सदा , सहु संघनी पहोंचो सुजगीस ॥ ध. ॥ २१ ॥

इति श्री उदयरत्न महाराज कृत भुवन भानु केवलीनो रास संपूर्ण ॥

ग्रंथाग्रंथ श्लोक संख्या २४१४.